UNIVERSAL LIBRARY
OU_186082
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 398.9 Accession No. G H 1424

Author R S 7 R

Title राजस्थानी भीलों के लोक गीत

This book should be returned on or before the date last marked below

राजस्थानी भीलों के लोक गीत

प्रकाशकीय निवेदन

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारतीय लोक सभा द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया। परन्तु उसके विकास, विस्तार एवं समृद्धि के लिये जितना क्रियात्मक कार्य किया जाना चाहिये; उतना नहीं किया जा रहा है। इसलिये इस ओर केन्द्रीय सरकार को अधिक गतिशील बनना चाहिये। प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों के साथ २ हिन्दी का काम करने वाली संस्थाओं का भी कर्तव्य है कि वे अपने उत्तरदायित्व की गंभीरता को अनुभव करें और अपने सीमित साधनों के द्वारा भी इसे सम्पन्न बनाने में रचनात्मक योग दें। विधान के अनुसार १५ वर्षों में हिन्दी को सम्पूर्ण रूप से अंग्रेजी का स्थान लेना है तो समस्त हिन्दी-प्रेमियों, हिन्दी हितैषियों और हिन्दी भाषियों को सक्रिय रूप से इसके विकास-कार्य में लग ही जाना चाहिये। राजस्थान विश्व विद्यापीठ विगत एक युग से हिन्दी की समृद्धि के लिये अपने 'साहित्य-संस्थान' द्वारा प्राचीन साहित्य, लोक साहित्य, पुरातत्व, कला एवं इतिहास विषयक शोध-खोज, संग्रह-सम्पादन एवं प्रकाशन का नम्र किन्तु महत्वपूर्ण काम करती आ रही है।

"साहित्य-संस्थान" राजस्थान विश्व विद्यापीठ द्वारा गवेषणा के साथ-साथ लोक साहित्य के संग्रह-सम्पादन का कार्य भी योजना बद्ध रूप से किया जा रहा है। राजस्थानी भाषा में गंभीर साहित्यिक सामग्री के अतिरिक्त लोक-साहित्य की प्रचुर सामग्री है। 'साहित्य-संस्थान' में अब तक सैंकड़ों लोक-गीत, लोकवार्ता, लोकोक्तियाँ, कहावतें एवं लोक कथायें एकत्रित की जा चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक उसी संग्रह का परिणाम है। राजस्थान के पहाड़ी प्रदेशों में बसे हुए भीलों का अपना इतिहास एवं अपनी संस्कृति है। भील-जाति का साहस और शौर्य न केवल राजस्थान में ही प्रसिद्ध है अपितु समस्त भारत में इस जाति की ख्याति है। भील-जाति शताब्दियों से भूखी और अर्धनग्न अवस्था में रहती आ रही है परन्तु अब तक इसके विकास एवं प्रगति की अवहेलना ही की जाती रही है। स्वाधीनता के बाद देश के जीवन में प्रगति का जो दौर शुरु हुआ है: उसमें पिछड़ी हुई जातियों के विकास एवं उत्थान कार्य को प्रमुखता दी गई है। ऐसी जातियाँ देश के कौने कौने में बिखरी हुई मिलती हैं, जिनकी अपनी सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशेषतायें हैं। भाषा की दृष्टि से ऐसी जातियाँ प्रादेशिक भाषाओं की उप बोलियाँ बोलती हैं। इन उप बोलियों के द्वारा प्रादेशिक भाषा सम्पन्न होती है तथा प्रादेशिक भाषाओं से जीवनी शक्ति प्राप्त कर राष्ट्र भाषा अपना बल बढ़ाती जाती है। 'भीली बोली' राजस्थानी भाषा की ताकत है। उक्त पुस्तक 'राजस्थानी भीलों के लोकगीत' भीलों द्वारा गाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के गीत है।

साहित्य-संस्थान-राजस्थान विश्व विद्यापीठ के संस्थापक और संचालक श्री जनार्दनराय नागर ने श्री फूलजी भाई को पढ़ाया और पढ़ा कर यह कार्य करने को प्रेरित किया । श्री फूलजी ने साहित्य-संस्थान के अन्तर्गत यह संग्रह तय्यार किया और संस्थान ने इसे सम्पादित कराया । प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न प्रकार के २७ लोगगीतों का संग्रह है, इन भीली-गीतों की क्या विशेषता है; यह तो 'गीतों' को पढ़ने से ही पता चलेगा । लेकिन इतना अवश्य है कि इनके द्वारा भीलों के सामाजिक जिन्दगी के रीति-रिवाजों का परिचय मिलेगा ।

यह संग्रह प्रकाशन के लिये कई वर्षों से पड़ा हुआ था परन्तु साधन सुविधाओं के न होने से आज से पूर्व पाठकों के हाथ में नहीं दिया जा सका । अभी तक भी इसका प्रकाशन शायद ही हो पाता यदि राजस्थान सरकार के पिछड़ी जाति विभाग के संचालकों, पदाधिकारियों और माननीय मंत्री श्री पंड्याजी का सक्रिय सहयोग नहीं मिलता । सरकार के पिछड़ी जाति विभाग ने उक्त पुस्तक तथा इसके साथ दो और पुस्तकों के लिये एवं भीली शब्द संग्रह, जो कहावत माला के साथ प्रकाशित है २०००) दो हजार रुपैयों की आर्थिक सहायता प्रकाशन हेतु देने की कृपा की; इसके लिये सस्थान की और से मैं उन का अत्यन्त आभारी हूँ । विभाग की ओर से इसी प्रकार का सहयोग भविष्य में भी निरन्तर मिलता रहा तो 'साहित्य-संस्थान' भीलों सम्बन्धी और अन्य पिछड़ी हुई

जातियों सम्बन्धी साहित्य शीघ्र ही और भी प्रकाशित कर सकेगा।

सरकार की इस सहायता को प्राप्त करने में राजस्थान विश्व विद्यापीठ के पीठ मंत्री श्री भगवतीलाल भट्ट ने जिस तत्परता और लगन का परिचय दिया, उसके लिये वे निस्सन्देह धन्यवाद के पात्र हैं। यदि वे समय पर सावधान न होते तो यह सहायता कदाचित् ही मिल पाती।

"राजस्थानी भीली लोकगीत" का संग्रह कैसा बन पड़ा है यह तो विद्वान और पाठकों के ही सोचने की बात है। इस सम्बन्ध में जो भी सुझाव 'संस्थान' के पास भेजे जावेंगे, उनका सदैव स्वागत किया जायगा।

—गिरिधारीलाल शर्मा
अध्यक्ष
साहित्य-संस्थान
राजस्थान विश्व विद्यापीठ,
उदयपुर

विजियादशमी
दो हजार दस
७। १०। ५४

राजस्थानी भीली लोकगीत

(प्रथम भाग)

गीत परिचय:—

यह गीत भील जाति के सामाजिक उत्सवों पर जब स्त्री-पुरुषों का समुदाय एकत्रित हो जाया करता है, नृत्य के साथ साथ स्त्री-पुरुषों द्वारा सम्मिलित रूप से गाया जाता है। इस गीत में एक ऐतिहासिक तथा सच्ची घटना का वर्णन किया गया है। इसका आशय इस प्रकार है:—

केवल्या नामक भील की पत्नी जंगल में गायें चराने जाती है, और वहाँ अचानक लैणबारां ग्राम के आदमी आकर उसे पकड़ लेते हैं। यह खबर जब अन्य ग्वालों द्वारा केवल्या के पास पहुंचती है तो वह गाँव के सारे लोगों को इकट्ठा करता है और बहुत सोच विचार करके एक धाड़ा (दल) तैयार करके लैणबारां पर चढाई कर देता है। वहाँ घमासान युद्ध होता है जिसमें केवल्या मारा जाता है। उधर ये लोग सारे गाँव को जलाकर नष्ट कर देते हैं। वहाँ के ठाकुर की हवेली भी जला देते हैं। ऐसी घटनाओं से

स्पष्ट मालूम होता है कि भीलों में कितनी भारी एकता और जातीय-संगठन की भावना है। इस प्रकार के गीतों द्वारा पता लगता है कि इन लोगों की इतिहास-रक्षण की प्रबल प्रवृत्ति रही है और इन गीतों से ही ये लोग अपने प्राचीन गौरव के अलिखित इतिहास को बराबर स्मरण रख सकते हैं।

गीत

रई ने केवां बोले है रे, देखो मारी ढालड़े रमे।
वारे पालां पडुणु है रे ,,
केवल्यो गार जीड़ो है रे ,,
बें भायां नी जोड़ी है रे ,,
काका रे बाबा ना है रे ,,
बारे वांड़ा धोली है रे ,,
परवाते नो पोरे है रे ,,
कू धोलियें मोडुं थाये है रे ,,
ुण जाहे गुवांल है रे ,,
तं केवला भाई नु बेभरू हे रे ,,
बा जाये है गुवांल हे रे ,,
दनड़ो डुंगी गियो हे रे ,,
पानड़िली पोलें है रे ,,
गुकरियाला जांपा है रे ,,
सांकडली सेहरी है रे ,,

वांकड़ वडु वेर धोलियानो गुवाल है रे । देखो मारी ढालड़े रमे ।

हियो हियो करी है रे ,,
हेरियां में आसामी है रे ,,
धोल़ी धिरे हाको रे ,,
जाये रे लांबा मारगां हे रे ,,
खड़ावन ना हेरा है रे ,,
धोल़ी केमनी वाला हाँ रे ,,
सांडियां वावे वालो हो रे ,,
लणबारीज्यां गेरूआल़ा है रे ,,
धामती धोली आवे है रे ,,
सांडी जे वाबा माथे है रे ,,
माथे हेरां हेरे है रे ,,
सूरती धोली हेरे है रे ,,
ते पडुणा नी धोली है रे ,,
धोलियां धाडा सोटे है रे ,,
वगतु वडवर आवे है रे ,,
वारे है न डसीली है रे ,,
जेने लड़ाई लिये है रे ,,
वगतु पकड़ाई गई है रे ,,
वगतु ओनगी लीदी है रे ,,
लणवारीयां गेरूआला है रे ,,
धामता गुवांल आवे है रे ,,

कुण गमेती वाजे है रे । देखो मारी ढालड़े रमे ।
ते लालजी वालु नगंजी है रे ,,
बीजुं कुण गमेती वाजे है रे ,,
ते काका नु कुबेर है रे ,,
ते धामी हामी आवे है रे ,,
ते कुबुं रइने बोले है रे ,,
कुण बलाइडु बाजे है रे ,,
सतरूं बलाइडुं है रे ,,
ते गाम मां हेलो पाड़े है रे ,,
सोरे बेला आवो है रे ,,
पाडां रे पाडां हो रे ,,
सोरे जाजम नाको है रे ,,
बैटा पंगत मां जालो जाल हैरे ,,
थोडज्ये थोड़ा गाहे है रे ,,
अणियां जाजम कटे है रे ,,
गालमा अमल काड़ो है रे ,,
अमलड़ा वपरावो हो रे ,,
सकियां वातां सोलो है रे ,,
मनसोबा नी वातां है रे ,,
केवला भाई नु बेचरूं है रे ,,
बेचरू हाई लिदुं है रे ,,
लण बारीज्यां गेरूआला है रे ,,

पालनु आवरू जाये है रे देखो मारी ढालड़े रमे ।
जीवतां धणिया बयरू उनगिजुं है रे
हाँसु नी रेज्या नो जोगे है रे ,,
टोली तंयार करो है रे ,,
सोरेज्यां वाली हो रे ,,
धाडुं तैयार करो हौ रे ,,
मोटियारां ना धाड़ा है रे ,,
हरकी रे जोड़ी ना है रे ,,
सोरे सांगी दियो है रे ,,
मखे रखे सोचो है रे ,,
ढाला न तलवारां है रे ,,
ते धाडुं धामा दौड़े है रे ,,
वाडां वण ना हेरां है रे ,,
वानु माना माथे है रे ,,
आधी मजरातां है रे ,,
माते सोरां हेरो है रे ,,
लणबारां ती सूटती धोली आवे है रे ,,
धोली लगती आवे है रे ,,
धोलियें टोली सोटी है रे ,,
सोरियाँ वाली टोली है रे ,,
वालण वाली दीदी है रे ,,
हाँसु टेंटिया वाली मेड़ी है रे ,,

मेड़ी वाली आवां हां रे। देखो मारी ढ़ालड़ी रमे।
टेटज्युं मेड़ी बैठुं है रे ,,
ते धुंधळी गळाळ उड़ी है रे ,,
खुंटे खुंटो बाळो हो रे ,,
झुंपड़ २ बाळां हाँ रे ,,
ळण बारीज्यां नी मेड़ी है रे ,,
फरतां मेड़ी वालो है रे ,,
टेटज्युं गोखड़े बैठुं है रे ,,
जाळियो २ गोळी वाजे है रे ,,
बन्दुकां ठकावो हो रे ,,
धुंधळो धुँओ णीकले है रे ,,
मेड़ी देवता चळो है रे ,,
तांते वार करो हाँ रे ,,
आपणे होळी रमां है रे ,,
ढोल कुंडी ना मड़का है रे ,,
मेड़ी बळी गी है रे ,,
सोरज्यां वाली टोली है रे ,,
केवल्या भाई नु बयरूं है रे ,,
जेने लड़ाई लिये है रे ,,
वानैयो उतारो है रे ,,
अपणे मरवे रोबो है रे ,,
तीतरी वालुं बोकडुं है रे ,,

बावसी बोकडुं मारां है रे ,,
बावसी बेलु आज्या है रे ,,
धोली आवती रेजी है रे ,,
धावड़े मंडेर आज्यो है रे ,,
लणबारां नु धाडुं है रे ,,
धाडुं आवी पुगुं है रे ,,
धोली हरज्यो वोहो रे ,,
धोली पासी फेरो हो रे ,,
धोली भाडेर सोड़ो होरे रे ,,
भाडरे हेलो आयो है रे ,,
आदी वालण वाली है रे ,,
केवला गोली लागी है रे ,,
धांडु भागी गियुं है रे ,,
लणबारीज्यां बैराई ग्यां है रे ,,
लणबारे राय बावजी है रे ,,
धाडुं पासु आज्युं है रे ,,
पडुणा ने माये है रे ,,
गीत जांव मेलो हो रे ,,

शब्दार्थ :—

रई ने केवां बोले है=शान्ति एवं सावधानी के साथ बोलते है। ढालड़ी= ढाल। रमे=घूमना, खेलना। बे माया नी=दो भाइयों की। काका ने बावा ना=चचेरे भाई। बारे=बाहर (१२)। वाड़ा=मवेशी बांधने का स्थान।

धोली=गायें। परबाते ने पो=प्रातः काल का सुहावना समय। मोड़ु=विलम्ब। कुण=कौन। गुआल=ग्वाल। बेयरू=पत्नी। जाहे=जाना। दनड़ो=दिन। पांनड़िली=लोहे की। जांपा=दरवाज़ा। सांकलि=तंग। सेरी=गली। वांकड़=टेढा मेड़ा। हांको=चलाओ। लांबा=लम्बे। केमनी=किसतरफ। सांटड़ियों=जंगल का नाम। गेरुआला=झगड़ाल। धामती=दौड़ती। माथे=ऊपर। सूटती=खुलतेही। धाड़ा=लूटमार करने वालों का दल। वगतु=१ स्त्री का नाम। ओनगी=कपड़े। वाजुहूँ=कहलाता है। बीजु=दूसरा। वलादलु=गाँव बलाई, गांव में सूचना पहुंचाने वाला। हेलो पाड़ो=सूचना पहुंचाना। वेलां=जल्दी। सोरे=गांवका एक पंचायती स्थान जहां पर मिटिंग की जाती है। जाजम=विछात। गोली=पंगत। जाले=बराबर। गाह=गिसना। आणिया=लाना। काटो=बनाना। वपरावो=वितरण करो। वातां=बात चीत। मनसोबा=विचार करने योग्य। बेर=पत्नी। पालन्=जाती का। नेत्र का। आवरु=ईज्जत। धणिया=पति। जोगे=अवसर, सोरेज्यां=वनयुवतियां। धाड़=लूट मार करने वाला एक संगठित दल। मोटयारा=नौजवान। हरकी=बराबरी। जोड़ी=समानता। रखे=परवाह नहीं करना। बड़ा वणना हेरा=जंगल मे एक स्थान का नाम। आधीन मझ रातां=भयंकर अर्ध रात्रि। वलण वारना=वापस फेर देता। टेटया=ठाकुर। मेड़ी=मकान की दूसरी मंजिल। झोपड़ी=घर। जलल्यां=खिड़किया। ठनको=गोली मारना। पूगू=पहुंचना। हरज्यो=तीर। हेर=ऊपर। राय वाबूजी=बराबर।

भावार्थ :—

केवल्या नामक एक भील था, उसके पास बहुत सारी गायें थी। केवल्या के दो चचेरे भाई भी थे। एक दिन प्रातः काल ही केवल्या

की स्त्री अपनी गौओं को लेकर जंगल में चराने हेतु गई। वह दिन-भर गायों के साथ २ जंगल में घूमती रही। अन्त में वह पास ही के लैणबारां नामक गाँव के नजदीक चली गई। यह गाँव काफी बड़ा था और इसमें एक ठाकुर भी रहता था। इस ठाकुर की हवेली बड़ी सुदृढ़ थी। इस हवेली का प्रवेश द्वार लोहे का बना हुआ था जिस पर तीखी पतरियां लगी हुई थी और अन्य दरवाजों पर भी घुगरे लगे हुए थे और वहाँ की गलियाँ बहुत तंग थी।

केवल्या की स्त्री सांटडिये के ढाल पर अपनी गायें चरा रही थी। इतने में अचानक सब गायें भगने लगी और कुछ व्यक्तियों ने आकर उस ग्वालन वगतु को पकड़ ली और उसके कपड़े तथा जेवर आदि उतार लिये। इधर जब अन्य ग्वालों ने यह खबर केवल्या तक पहुँचाई तो उसने अपने गाँव के मुखिया लालजी व नंगजी को यह समाचार सुना दिया। उन्होंने बलाई द्वारा सारे गाँव वालों को पञ्चायत 'सौर' (सभा करने का स्थान) पर एकत्रित होने की सूचना भेज दी। सौरे (चौराहे) पर जाजम बिछा दी गई। यथा समय सब लोग आगये और बराबर पंक्ति बद्ध होकर यथा स्थान बैठ गये। उस समय सभी ग्राम वासी हथियारों से लैस होकर आये थे और इतने व्यक्ति इकट्ठे हुए कि बैठने का स्थान कम पड़ने लगा। वहाँ सभी को पहले अपनी परम्परा के अनुसार अमल वितरण की गई। उसके पश्चात विचार विनिमय होने लगा कि केवल्या भाई की पत्नी को लैणबारां वालों ने पकड़ ली है, यह हमारे समस्त ग्राम (पाल) की इज्जत का प्रश्न

है। केवल्या के जीवित रहते हुए उसकी स्त्री को पकड़ लेना हमारा बड़ा भारी अपमान है अतः हमें लड़ने के लिए तय्यार हो जाना चाहिये ।

इसके पश्चात उन्होंने चढ़ाई करने के हेतु नौजवानों तथा नव-युवतियों का दल बनाया और उनको बताया गया कि वे अपने प्राणों की भी बिल्कुल परवाह नहीं कर जी जान से युद्ध करें। तब उन सब वीरों ने मध्य रात्रि को ही सशस्त्र होकर युद्ध के लिए प्रस्थान कर दिया।

जब यह धाड़ा गाँव (लैणबारां) के नजदीक पहुँचा तो निश्चय किया कि सबसे पहले गाँव के ठाकुर की हवेली पर जाना चाहिये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने हवेली जलाने की योजना बनाई। सोच-विचार कर यह तय किया कि इस हवेली का एक एक खूँटा जला दिया जाय ।

जाते ही उन्होंने ठाकुर की खिड़की पर गोली मारी तथा हवेली में आग लगादी। हवेली से धुंआँ निकलना प्रारम्भ हुआ। यह देख कर इन्होंने होली खेलना प्रारम्भ कर दिया तथा ढोल, कुडियां बजाने लगे। इन्होंने अपने देवताओं का भी स्मरण किया; क्यों कि इनका विश्वास था कि देवता की मदद से ही हम हर कार्य में सफल होते हैं। इन्होंने अपने देवता को एक बकरे की बली भी चढ़ाई। फिर वापस घर की ओर प्रस्थान कर दिया। वहाँ आते समय ये लैणबारां की गायें भी अपने साथ लेकर रवाना हुए।

पीछे से लेंणबारां वालो ने इकट्ठे होकर अपना धाड़ा तैयार किया और तेजी से चलकर रास्ते में ही इन पर हमला कर दिया और अपनी गायें इनसे छीन कर वापस लेली। दोनों पक्षों में भयंकर युद्ध होने लगा, दोनों ओर से तीर तथा गोलियाँ चलनी प्रारम्भ हुई। एक गोली केवल्या को आकर लगी फलस्वरूप उसका प्राणान्त हो गया। इसके अतिरिक्त दोनों ओर के योद्धा लोग भी मारे गये।

इसके बाद बचे हुए लोग वापस पडुना आ गये।

गीत परिचयः—

यह गीत भी स्त्री-पुरुषों द्वारा सम्मिलित रूप में नृत्य के साथ २ ताली बजाते हुए गाया जाता है। इस गीत में हमें भील जाति के रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन के बारे में अनेक बातें मालूम होती है। प्रस्तुत घटना का मुख्य नायक डुँगरिया परमार्थ है। जब वह कपड़े खरीदने के लिये जाता है तो दूकान-दार से 'जापानी लट्ठा' तथा 'जयपुरिया साफा' भी मांगता है। इससे इस जाति की सभ्यता का पता लगता है कि इनको कितनी चीजों का ज्ञान था, क्योंकि डुँगरिया को तत्कालीन कपड़ों की विभिन्न जातियाँ भी मालूम थी। इसी तरह की कई बातों का वर्णन आया है जिन से इस जाति की सभ्यता व संस्कृति का स्पष्ट आभास मिल जाता है।

गीतः—

रई ने केवां बोले, सोरा डुगरिया परमाथ ।
डूंगरा देस नो डूँगरी, ,,
आथम्या नो सम्यो ,,
ढोलीडुढालो, ,
माथा में पागेड़ी, ,,
माता हरणो मेलो, ,,
हीरे के विसावो, ,,
सोडे वाले ने हुवो, ,,
आदि ने मँजरातां, ,,
सूती धोरा धीरे, ,,
हांसु जंजाले दबाणुं, ,,
होली सपने आई, ,,
सोरा मामावारी होली, ,,
भड़कीने होड़े नांके, ,,
मांडुली बोलावे, ,,
कीमे तू जागजे सोरा, ,,
माता होली सपने आजी ,,
के जंजाले आजो, ,,
ते झूठी है जंजाल, ,,
ए कूण माने वात माता, ,,
मइते होली हपने आजी, ,,

मामा वारी होली, सोरा डूँगरिया परमाथ ।
क्याँ ते वाजे होली, ,,
दीवाला मोटी होली, ,,
मूं ते हूली रमणे जाऊँ, ,,
हांसू ते मांड़ली रइने बोले, ,,
व्यां ते जूना वेरी, ,
नी जावानूं जूगे, ,,
माता ते एक नी मानू वात, ,,
रोटला तैयार थाजो सोरा ,,
रोटला ते जीमी लीधो ,,
जमी रे करीने ,,
बैहूली नी हीडं्यो ,,
हाथा में कराड्यू ,,
फरी रे हरी ने ,,
सीसम दरखत वाडिया ,,
पेलको ने टसको वाज्यो ,,
रगतां नीं हेड़ाँ साली ,,
डूँगरी ते खोटा हकना वेज्या ,,
पेरे हकन्या नी माने ,,
डंडेडा नी घटो ,,
वेहू लीनी हींड ज्यूं ,,
आवे धामा दोड़े ,,

थेटे घरजमी आगियो, सोरा डूंगरिया परमाथ ।
ते मांडूली बोलावे ,,
माता ते सामलो ने मारी वातां ,,
मोत्रे दामे ने दोकड़ा आलो ,,
हालू ते होली नाडी आग्यो, ,,
होली की आमली है ,,
माता ते आलिये हाथ घालो ,,
थोड़ा ते रुप्या नें पैसा आलो ,,
पीली ने परवाते ,,
हालू हकनिया वसारे ,,
खोटा ने हकन वेग्यां ,,
हकन्या नीं माने ,,
हांसू आवे नँ धामे दोड़े ,,
आजो ठेटा टेट ,,
व्यां हुथार नी हाटां ,,
हामा ते लल्यो जाजे ,,
डूँगरी ते हुथारे बोलावे ,,
तेहणे ने कामे आजो ,,
हॉसू डण्डेडा घड़ावणां ,,
टसके ने टसके छेड़ों ,,
छडी ने करी ने ,,
हॉसू रे सोकडियां सुकावो ,,

जायरे रंगारी ने हाटां, सोरा डूंगरिया परमाथ ।
रंगारी ने बुलावे ,,
हासूं हणे कामें आज्यो ,,
डंडेड़ा रंगावणा है रे ,,
हासूं डंडेडा रँगो ,,
रंगिरे करिने दामे ने पैसा आलो ,,
वेहूलिनी हिंडज्यूं ,,
जाये वोरिलाने हाटां ,,
वारीलू बोलावे ,,
हणे ने कामे आजो ,,
हासूं वोरा घूघरी फांदी आलो ,,
हासूं डांडेड़ा फांदी आलो ,,
जापानी लट्टो आलो ,,
घणो रुपालो कपड़ो ,,
दामें सुकावो ,,
वेहुलीनी हेड़ज्यो ,,
हासु हाटां ने बजारां ,,
दरजीड़ा ना हाटा ,,
हाणे कामे आज्यो ,,
तेजगलो सीवाड़वा रे ,,
डाला ने परमाणे ,,
हासूं ते मसीन घुमावे ,,

गणो रुपालो जग्गो, सोरा डूँगरिया परमाथ ।
दामे दुकड़ा आलो ,,
वेहुलीनी हींडज्यो ,,
वानी डाना हाटा ,,
दे कलकत्ती हीं धोती ,,
जेपर का साफा ,,
दामे सुकावो ,,
हासु विहुलिनु हिंडज्यो ,,
इ जाय धामा दौड़े ,,
जायरे सकली गर ना हाटां ,,
हासु हठु आरे सदरावे ,,
दामे सुकावो ,,
विहुलीनी हींडज्यो ,,
पासु घरे जाय रे ,,
गीयूं ठेठा ठेठ रे ,,
देवल मोटी होली रे ,,
व्याते ढोल वाजे ,,
ढुलकूं कुंडीनो मड़को ,,
डूंगरी सुरेपण चड़ज्यो ,,
कपड़ा पेरी लियो ,,
हत्थु आरे हबाबो, ,,
हेरो हवागो ,,

हांसु मांडली वर्ज्या वर्ज, सोरा डूँगरिग्ग परमाथ ।
वेर ज्याली धरती ,,
टलटल मांडली रूए ,,
वरज्यो नी मांने ,,
जाय रे धामा दोड़े ,,
हासु देवल जाई लाग्यो ,,
गायो थेटा थेट ,,
पूरी पूनम नी होली ,,
सोरा ने भुकज्य रेयं ,,
डूँगरी भुकज्यो रेगो ,,
काटे ड़ानु भाणेज ,,
आमली सखे जाजो ,,
हाम्ये लोटी लिये ,,
डावे हाथे थाली ,,
हासु होली मांथे गियो ,,
वारा ने पाड़ा देवल ,,
हारा ने सोरा आवे ,,
वारे ढोल तेरे कुण्डी वाजे ,,
डूँगरी तो सुरपन मड्यो ,,
डूँगरी रमणे लागूँ ,,
लली लली ने रंमो ,,
हासू रमीने करीने ,,

हासू सोरी रमने लागी, सोरा डूँगरिया परमाथ।
हासू जोडी रे जोडी नों ,,
सूरी ते कांगड़ी वाये ,,
सुरी ते ढेंमाई करे ,,
गांगू ते रइने बोले ,,
रे कूणे लोक वाजे ,,
कूटडाँ नूं भाणेज वाजे ,,
हासूं जूनो वेरी आज्यो ,,
घरे ने बैठो वेरी आज्यौ ,,
माथां होली रमणी ,,
गांगाजी ते हरज्यो मेले ,,
रूपुते गाबडू काटे ,,
सोरी धामी आवी ,,
खोले ने मातु लीदूं ,,
थारू खोजे जाजे, मारा पीहरजी ,,
दोब वदे ज्यों वदजो मारा हाहरजी ,,
डूँगरियानी हती बलो ,,
सोरी हूंते सड़े ,,
रथी मा जाइने बेठी ,,
गीत ते जातूँ रेज्यूं ,,

शब्दार्थ :—

आथमियानो=संध्या का समय। पागेड़ी=पगड़ी। हिरके=ओढ़ने की सीरक। सुओ=सोना। जजांल=स्वप्न। माडूंली=माता। अज्मी=आई। मईते=मुझे।

व्यांते=वहाँ पर। वैरी=शत्रु। जुगे=समय। एक नी मानु=कुछ भी नहीं मानना। रोटलां=रोटियाँ। जमीरे=जीम कर। हींड्यु=चला। कराडियुं=कुल्हाड़ी। धामा दौड़े=वेग के साथ चलना। टसको=आघात, वार। वाज्यो=लगाया, मारा। रगतानी=रक्त की। हेडां=धार, प्रवाह। डंडेड़ा=डांडियाँ। दामे न दुकड़ो=रूपया पैसा। नीड़ी=पास। आलल्ये=ताक में। पीली ने परबाते=प्रातः काल का सुहावना समय जिस वक्त भगवान भास्कर की लालिमा पृथ्वी पर छा जाती है। हुथारानी=सुतार की, बढ़ई की। हाटां=बाज़ार। हणे=क्यां। कामे=कार्य। सोकडियां=लकड़ी पर खुदाई का काम (चौकड़ी)। रंगारी=रंगरेज। वोरीला=बोहरा, फांदी आलो=तार में फांद दो। झुगेलो=अंगरखा (कमीज से मिलता जुलता)। डीलाने=शरीर के अनुसार, मुताबिक। घणे=बहुत। रूपाले=सुन्दर। दे कलकतीहीं=कलकते की बनी हुई दो। पांसु=वापस। घरीये=घर की तरफ। ठेठा ठेठ=निश्चित स्थान पर। सुरेपण=जोश के कारण आवेश में आजाना। हबावो=सजाओ। वरज्यां=मना करना। वरजे=टोंकना। रूए=रोती है। भुकज्यां रेयां=भूखा रह गया। आमली=होली। सारवे=पूजा करने। तीरे=पास में जूडी रे। जूड़ीना=बराबरी का। सूरीते=लड़की को। लोक=गोत्र। हरज्यो=तीर। खोले=गोदी में। माथुं=सिर। हुंते=वीरता का जोश। जातुं रेज्यु=समाप्त हुआ।

भावार्थ :—

डूगंरा गाँव में डुंगरिया परमाथ नामक एक भील रहता था। वह सर पर तो पगड़ी बांधता था। और शस्त्र आदि लेकर घूमता था। एक दिन रात्रि को जब वह अपने बिस्तर

पर सोया हुआ था तो उसे एक स्वप्न आया जिसमें उसने देखा कि मेरे मामा के यहाँ की होली माता स्वप्न में आकर मुझे वहाँ जाने की सूचना दे रही है। प्रातः काल उठ कर यह बात जब उसने अपने घर वालों से कही और मामा के यहाँ होली खेलने जाने की तैयारी करने लगा तो सब लोगों ने उसे रोका और समझाने लगे कि यह सपना तो झूठा है और तुम्हें अभी वहाँ नहीं जाना चाहिये, क्योंकि वहाँ तुम्हारे पुराने शत्रु बसते हैं। किन्तु उसने किसी की भी बात नहीं मानी और जाने की तैयारी करने लगा।

वह भोजन करके अपनी कुल्हाड़ी कंधे पर लेकर जंगल में गया आर अपनी परंपरा के अनुसार शीशम के पेड़ पर कुल्हाड़ी का वार लगा कर शकुन विचारने लगा। पहले ही आघात में पेड़ से रक्त के समान रस बहने लगा अतः उसने समझ लिया कि शकुन तो बुरे हो रहे हैं किन्तु उसके मन में जाने की इच्छा बड़ी प्रबल हो रही थी अतः उसने शकुन की चिन्ता नहीं करके जाने का दृढ़ निश्चय कर लिय। सायंकाल लौट कर वापस घर आगया।

इसके पश्चात् दूसरे दिन प्रातः काल के शुभ समय में उसने पास के शहर में सामान खरीदने के लिए प्रस्थान किया। साथ में कुछ रूपये पैसे भी ले लिये। बाजार में पहुँच कर वह क्रमशः बढ़ई, रंगरेज, बोहरा और सकलीघर की दूकानों पर गया और

सम्बन्धित सामान खरीद कर कपड़े सिलाने के लिए दर्जी के यहाँ गया। उसने एक बढ़िया अंगरखा सिलाया जो उसके शरीर पर अत्यन्त शोभायमान होने लगा। इसके बाद वह पुनः घर पहुँचा।

अब वह अपने मामा के गाँव (देवल) जाने की तैयारी करने लगा। वह कपड़े वगैरह पहनकर और आवश्यक सामान लेकर प्रस्थान करने को प्रस्तुत हुआ। उसके घर वाले सारे लोग उसे वहाँ जाने की स्वीकृति नहीं देरहे थे बल्कि उसे वहाँ की स्थिति बता कर डराने लगे और कहने लगे कि वहाँ हमारे पुराने शत्रु हैं जिनसे बड़ा भारी धोखा है और यह त्यौहार का समय है इसलिए भी वहाँ जाने योग्य समय नहीं है किन्तु वह तो सजधज कर निकल गया। इसके घर वाले सारे रोने लगे तो भी ध्यान नहीं दिया।

वह शीघ्रता से चलता हुआ देवल पहुंचा। उस दिन पूर्णिमा की रात्रि थी और होली का त्योहार था अतः स्त्रियाँ पूजन के लिये हाथों में थालियाँ लेकर जारही थी। वहाँ पहुँच कर उस रात्रि को भूखा ही सो गया। दूसरे दिन गाँव के सब लोग एकत्रित हुए, गाँव के १२ ढ़ोल तथा कुंडिया बड़े जोरों से बजने लगी। उन्होंने मस्त होकर खेलना प्रारंभ किया उसमें नौजवान लड़कियां भी शामिल थी, दौनों ओर की पार्टियां समान थी अतः खेल बहुत मस्ती से चलने लगा। गांगजी नामक भाल ने डुंगरिया की ओर इशारा करके पूछा कि यह कौन है ? लोगों ने बताया कि यह तो कुटंडों (गोत्र) का भाणेज है तो गांगजी ने कहा कि तब तो यह

हमारे शत्रुओं में से है हमारा सौभाग्य है कि हमारे घर बैठे वैरी आ मिला है यह कहकर गांगजी ने कसकर एक तीर मारा जिसके लगते ही डुंगरिया परमाथ का देहान्त हो गया।

गीत परिचय :—

इस गीत में जावर की ऐतिहासिक घटना का वर्णन किया गया है। जावर के लोग मछलियों का शिकार करने जाते हैं और वहाँ सिंगटवाड़ा ग्राम के ठाकुर के साथ युद्ध हो जाता है। इस युद्ध में जावर वालों की सहायता के लिए पडुना निवासी भी भाग लेते हैं।

प्रस्तुर गीत में हमें भील जाति की लड़ाकु प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। पडुना के निवासियों द्वारा सहायता करने की घटना से भीलों की एकता और हर समय सहायता के लिये तत्पर रहने की भावना का भी ज्ञान होता है। वर्णन अत्यन्त रोचक और वीर रस से ओतप्रोत है।

गीत

रई ने केवां वोले है कारेलिया।
उन्डे दो माछली है ,,
हरीया तेवो माछली है ,,
कुण ते हेरो हेरे है ,,
तेजु ते नमानु है ,,

वो तो हेरो हेरे है	कारेलिया ।
धाम तु जुन मोकलावो हो	,,
जावर नु ननामुं है	,,
जावर मायें चन्डाते पज्ञाते वाजे है	,,
बीजा कुन वाजे है	,,
ननामां व वडेरां वाजे है	,,
बीजां आहरी काहनात वांजे है	,,
जुणे धामा दौडे है	,,
धामती वार आलो हो	,,
वारे धामा दौड़े है	,,
उन्डे दो गई है	,,
दो में वागर दरो हो	,,
भाकु माते हेरू मेलो हो	,,
हेरू उंगी गइयो है	,,
हिगंट वारीयुं जालु है	,,
वो ते मेडिये बैठूं है	,,
किचाँकते धोली हमली भमे है	,,
उन्डा दो माते	,,
जालु घोरिलु पलाने है	,,
धोलो ने घोरीलो है	,,
आवे धामा दौड़े है	,,
बे नदीयां आबी पुगूं है	,,

हेरूं उंगी गइयु है कारेलिया ।
ठाकर आवी पुगूं है ,,
लोक ते माछली मारे है ,,
हरिया तेवी माछली है ,,
तोरादार वन्दूके है ,,
जालु गोली वाये है ,,
वार माथे गोलो लागे है ,,
आदमी गोली लागी ,,
वारते हुलर थई है ,,
मसके रोलु लागू है ,,
पडुने धामतु जून मोकलावो हो ,,
पडुनिया हमसो आलो हो ,,
जुने धामा दौड़े है ,,
पडुना ने चौरे है ,,
वार पाडां पडुना वाजी रेयो है ,,
वड़ली वारे चौरे है ,,
काका कुवेरू रइने बोले है ,,
चौर वारी ढोल देवारो है ,,
वरली वाले चौरे भाइला भेल थाया है ,,
काका कुवेरूं रई बोले है ,,
भाइयो मारा हिगंटवाडियां जावरियां मराई गइयां ।
माछलिया ने कारने ,,

चालक रान्डी थाँहे	कारेलिया
मरँहा तीनं जाहाँ रे	,,
ढाल ने तरूवारे हे	,,
वारे धामा' दौड़े है	,,
जावर जाई लागृं हे	,,
जावर माता वारी ढोल देवाणो हे	,,
गीया ठेठा ठेठ रे	,,
हिगंटवाडियुं पडुनिया मसके रोलु लागृं है	,,
वन्दूकां तलवारां नु जरमर मेड्लुं वरसे है	,,
उन्डे दो माटीं मराई गइया रे	,,
गीत जातुं मेलो रे	,,

शब्दार्थः—

हराया तेवी=तीर के बराबर लम्बी हेरां= खोजना। वार=युद्ध के समय मे सूचना देने के लिए विशेष प्रकार से ढोल बजाया जाता है और उससे खतरे की खबर सारे गाँव मे पहुंचाई जाती है। दो मे= दरूरे मे । दरो=डालो। वागर=मछलियां पकड़ने की एक जंगली जाल। हेरू=गुप्तचर। मेडियुं=मकान की दूसरी मंजील का कमरा । कियाँकते=कहीं न कहीं। धोली हमली=श्वेत रंग की चील। जालु=ठाकुर। हुलेर=हुल्लड़, भाग दौड़। रोलु=युद्धस्थल का दृश्य। मांटी=योद्धा लोग। जातुं मेलो=समाप्त करो।

गीतार्थ :—

बड़े सावधानी और धैर्य के साथ कारेलिया कहता है कि 'उन्डे दो' (दर्रा) में तीर के समान बड़ी २ मछलियां हैं। वहाँ कौन मछलियों की तलाश में घूम रहा है ? तेजा ननामा नामक व्यक्ति वहाँ तलाश कर रहा है। एक आदमी को तेजी के साथ भेजता है।

तेजा ननामा जावर ग्राम का निवासी है। जावर में सडांत और पलात गौत्र के भील रहते हैं। जावर में और कौन २ से गोत्र हैं ? ननामा, वाडेरा, आसरी तथा कानात गोत्र कहलाते हैं।

वह व्यक्ति दौड़ता हुआ वहाँ पहुंचा। उसने वहाँ शीघ्रता से सूचना पहुँचा दी। गाँव के सब लोग (वार) दोड़ते हुए उन्डे दो में पहुँचते हैं। उन्डे दो में 'वागर' अर्थात् मच्छी पकड़ने की जाल डालते हैं।

पर्वत की चोटी पर एक गुप्तचर छोड़ देते हैं। वह गुप्तचर तो वहाँ सो जाता है।

पास ही के सिगंट वाड़ा ग्राम में ठाकुर रहता है। वह तो अपनी मेड़ी (दूसरी मंजील का कमरा) में बैठा हुआ है। उसको उन्डे दो में श्वेत चीलें उड़ती हुई दिखाई पड़ी। ठाकुर अपने घोड़े पर जीन कसता है और घोड़े पर रवाना होता है। उसके घोड़े का रंग सफेद है।

ठाकुर तेजी के साथ चलता हुआ उन्डे दो के नजदीक आ पहुँचा। उस समय गुप्तचर तो सोया हुआ था। ठाकुर ठेठ दर्रे में आ पहुँचा।

लोग तीर जैसी बड़ी २ मछलियों का शिकार कर रहे थे। ठाकुर के पास तोड़ा दार बन्दूक है। वह गोली दाग देता है। उस समूह में से एक व्यक्ति के गोली लग जाती है। समूह में हुल्लड़ मच गया है। वहाँ एक दम भाग दौड़ मच गई। एक दूत को सूचना देने पडुना भेजते हैं। पडुना में १२ फळे हैं। दूत दौड़ता हुआ वटवृक्ष के नीचे वाले चौरे (पंचयतस्थान) पर पहुँचता है।

काका कुबेरा शान्ति के साथ कहता है-कि ढोल बजाओ। सब लोग वृक्ष के नीचे वाले चौरे पर इकट्ठे हो गये हैं। काका कुबेर फिर धैर्य के साथ बोलता है कि 'उन्डे दो' में जावर और सिगंट वाड़ा वालों के मध्य में युद्ध हो रहा है।

यह युद्ध मछलियों का शिकार करने के कारण हुआ है। इस युद्ध के कारण कई युवतियाँ बाल विधवा हो जायँगी। मरने के लिए तैयार हो जाना चाहिये।

ढाल तलवार आदि शस्त्र ले लिये हैं।

यह समूह (वार) दौड़ता हुआ जावर जा पहुँचा। जावर-माता के मन्दिर में सब लोगों को एकत्रित करने के लिए वारी ढोल (युद्ध की ताल) बजने लगी। सब वहाँ आ पहुँचे हैं।

सिगंट वाडे और पडुना वालों के आपस में घोर युद्ध हो रहा है।

बन्दूक और तलवारों की वर्षा हो रही है।

इस 'उन्डे दो' में कई योद्धा मारे गये हैं।

हे भाइगों! अब गीत समाप्त कीजिये।

गीत परिचय :—

इस गीत में भीलों के विख्यात गमेती हामजी की वीरता और तीरन्दाजी का वर्णन किया गया है। हामजी अत्यन्त ही बाहदूर योद्धा था जिसने तत्कालीन डूँगरपुर रावलजी तक को तीरन्दाजी और तलवार की प्रतियोगिता में परास्त कर पुरस्कार में एक गाँव की चौथ (कर) वसूल करने का अधिकार प्राप्त कर लिया।

गीत

रईने केवां बोले' हामजी भोराइया रे।
बारा पाड़ां भोराइ रे ,,
किनूं किनूं जाजूं ,,
उदाता नूं जाजूं ,,
कोटर्‌या नूं जाजूं ,,
गोपाला नूं जाजूं ,,
वो गमेती वाजे ,,

भोराई पालनो सोगलो हामजी भोराइया रे
सानी चोथ लिये ,,
घेर बेठो चोथ लिये ,,
बांदी हे वागड रे, ,,
बागड़ फोली खादी ,,
वागड़ वेवे कीदी ,,
वागड़ना हे लोके ,,
लोके अरजाउ जावे है ,,
डूँगरपुर रावलजी ,,
क्यां अरजाउ जावे है ,,
जाय रे धामा दौड़ रे ,,
डूँगरपुर जाइ लागूं ,,
गियां ठेठा ठेट ,,
दोड़ी हाजर थाय ,,
राजा गोखड़े बेठो ,,
लोक हाथ जोड़े हैं ,,
बावजी थाकी ने थोबे मलियां हाँ ,,
कुलकी पांणी पियँ हैं ,,
ढीबरां रवाता कीदँ है ,,
घेर मा गलामूं नइ मेल्यू है ,,
खेती में खात नइ मेल्यू है ,,
बावसी तारू दीनूं राज है ,,

मेवाड़ मयँ भोराई रे हामजी भोराइया रे
भोराई मयँ हामजी राज करे ,,
भोराई पालनां सोगलो ,,
राजाए मांटू लागू हेमजी ,,
मानवी जाता रेइयां हेमजी ,,
राजा वसार करे हेमजी ,,
बादल मेंलां होला बरीस उमराव ,,
मनखोवा नी वातां ,,
हामजी भोलवी लावो ,,
धामतो गोरजी मोकलो ,,
गोरजी धामा दौड़े ,,
भोराई पूछतुं आवे ,,
भोराई आवी लागुं ,,
हामजी ढोलिये बेठुँ ,,
हामजी ने पोल आइयो ,,
बर बर हुकलो पीये ,,
गोरजी लली ने मजरो करे ,,
बाबा तां रावले तांए रावले हादे ,,
डूँगरपुर रावल जी ,,
मोटा पडियां कामे ,,
पायेगा मायें घोरिलो ,,
पन्डुलुं बोलावे ,,

चीतरिया पलाने हामजी भोराइया रे
बोलो घोड़ो वाजे ,,
पीली ने परबातां ,,
डूँगर पुर जावे है ,,
जाये धामा दौड़े है रे ,,
डूँगर पुर जाई लागुं ,,
डोड़ी हाजर थाये ,,
राई आगंना माथे ,,
हामजी माते खतरो ,,
राजा रइने बोले ,,
आपां लोम्बू गात रमां ,,
तरूले रोपाड़ो ,,
तरूले माले लीम्बू मेलो ,,
राजा गोली ,,
राजानो गोली नहीं लागी ,,
हमजी हेरियो वाये ,,
एक हेरिये लिम्बू पारियो ,,
थेई थेई करवल बुलावे ,,
राजा राई ने बोले ,,
एक लीम्बू फेर पेल ,,
एवकुं कुण पारे ,,
हमजी हेरियो वाये ,,

एके हेरिये लीम्बु परीदड्यो हामजी भोराइया रे
राजा पादारे मागे ,,
एके हेरके बोकड़ा मारजे ,,
नहीं मरहैते जीवतो नहीं जाइरे ,,
बे पादर नी जोर ,,
जोरे उबाराखो ,,
हमजी कखल चमरे ,,
रूप तली तलवारे ,,
बोकडां हेरको करे रे ,,
एक हेरेके पाड़िया ,,
धरती धूलो खादो ,,
हत्थी लागे माता करवल ,,
हमजी जीती गईयो ,,
राज राइने बोले ,,
वागड थारे खोले ,,
राजा राइने बोले ,,
डोड़ी चोट अलरावु ,,
गेर बेठा चोते आलु ,,
वागर होरी राखजे ,,
बूटी बखरी केनेलावे ,,
काटा वशने करे ,,
विहुलु आवे ,,

आवे धाम दारे हमजी भोराइया रे ।
भोराई आवी लागु ,,
हथइयां बोलावे ,,
आयला वाले चौरे ,,
बलाई बोला वे हँमजी ,,
बलाई गामें हेलो रालो ,,
दूला हादर राले ,,
चौरे वेला आवो ,,
चौरे भाईला भेला ,,
हामजी राईने बोले ,,
वागरनी गेर बेठे चोत आवहे ,,
तमँ वांटी रवाजो ,,
चोरी नके करजो ,,
हुनवाली देई चोत खांहा ,,
बुटु वाकरु नहीं लावजो ,,
गुजरात रमी आवजो ,,
मेवाड़ रमी आवजो ,,
वागर सोड़ी देजो ,,
वागड़ काल में आडु आव हे ,,
चोरे जीवता राम्व हे ,,
गीत जातो मेलो ,,

शब्दार्थ:—

सानी चोत=गुप्त लगान वसूल करना। बादी वागड=सारी वागड। फांगी खादी=खा गये, कुछ भी शेष नहीं रहा। त्रे त्रे कीदी=हैरान कर दी। थांत्रे मेलियां=किनारे आलगा (अर्थात् मृत्यु के किनारे आ गया) माट्ट=बुरा लगना। लर्लान=झुककर। पगडुलु=घोड़े का चरवेदार। खेतरो=क्रोध, दाव। गात=निशान लगाना। तरुले=त्रिशूल। थेई थेई=आत्म प्रशंसा के लिये यह शब्द कहा जाता है। वादोर=बकरा। हेरके=एक ही हाथ से झटका (वार) मारना। धरती धूलो खादो=बकरे की गर्दन कट कर तलवार का धूल में जा गिरना। खोले=शरण में, अधीन में। होरी=सुखी। रूंगो=मवेशी मात्र।

गीतार्थ:—

भोराई गाँव में १२ फलें (मोहल्ले) हैं। भोराई में किसका २ बहुमत है ? वहाँ उदात, कोटरिया और गोपाला गोत्र के भीलों का बहुमत है। वहाँ का गमेती हामजी भोराइया है

हामजी भौराई पाल (क्षेत्र) का मुख्य व्यक्ति था। वह गुप्त रूप से चौथ (लगान) वसूल करता था। सारी वागड़ से घर बैठा चौथ लेता था। इस प्रकार से वागड़ वालों के पास कुछ भी नहीं रहा। वागड़ निवासी तबाह हो गये।

वागड़ के सब लोग डूँगरपुर रावलजी के पास शिकायत करने के वास्ते प्रस्थान करते हैं। तेजी से चलते हुए ठीक डूँगरपुर जा पहुँचते हैं। सब लोग महलों के दरवाजे पर पहुंचे। उस समय रावलजी गवाक्ष (गोखड़े) में बैठे हुए थे।

सब लोग हाथ जोड़ कर प्रार्थना नरने लगे कि हम अब तो थक कर लाचार हो गये हैं। हामजी के कारण से हमें मिट्टी के बर्तनों से पानी पीना पड़ता है और भोजन करना पड़ता है। हमारे घरों में एक भी पशु उसने नहीं छोड़ा है। खेतों में से खाद भी ले गया है। ऐसी हालत में आपका राज्य किस तरह का है। मेवाड़ मे भोराई गाँव है, वहाँ का हामजी गमेती ही राज्य करता है।

यह सुनकर राजा को बड़ा बुरा लगा और वह विचार में पड़ गया। सब बागड़ के लोग वापस रवाना हो गये। बादल महल में सोलह बत्तीस उमराव एकत्रित होकर विचार करने लगे। हामजी को बुलाने के लिए एक पुरोहित को भेजा। पुरोहित शीघ्रता से चलता हुआ भोराई जा पहुँचा।

उस समय हामजी अपने खाट पर बैठा हुआ हुक्का पी रहा था। पुरोहित ने झुककर प्रणाम किया और रावलजी का सन्देश कह सुनाया। हामजी ने सईस को बुला कर अपना घोड़ा निकलवा कर जीन आदि कस कर तैयार किया। उसका घोड़ा बदमाश था। प्रातःकाल सुनहरे समय में वह रवाना होता है। डूँगरपुर जाकर उसने रावलजी को प्रणाम किया और महलों के सामने चौक में खड़ा रहा।

राजा के मन में बेईमानी थी अतः उसने हामजी से कहा कि अपन नीम्बू के निशाना लगाने का खैल खेलें। अतएव त्रिशूल

गाड़ कर उसकी नोक पर नीम्बू रक्खा गया। राजाने निशाना लगाया परन्तु उसकी गोली चूक गई। हामजी ने एक ही तीर में निम्बू गिरा दिया और अपने कबल माता की जय बोलने लगा।

राजा ने एक नीम्बू और रक्खा। इस बार नीम्बू कौन गिराता है? इस बार हामजी ने एक ही तीर में नीम्बू गिरा दिया। फिर राजा ने एक बकरा मँगाया और हामजी से कहा कि यदि एक वार में तुम नहीं मार सकोगे तो तुम जीवित नहीं जा सकोगे।

हामजी ने अपनी कबल माता का स्मरण कर अपनी रूपतली तलवार से एक ही वार से बकरे को मार गिराया। फिर कबल माता की जय बोली।

इस प्रकार राजा हार गया अतः हामजी की विजय पर खुश होकर 'वागड' हामजी के अधीन करदी, और उसे डेढ़ी चौथ वसूल करने का अधिकार भी दे दिया; किन्तु वागड़ को सुखी रखना। हामजी वापस रवाना होकर तेजी से चलता हुआ भोराई आ पहुँचा। बलाई द्वारा गाँव वालों को बुला कर कहा कि "भाइयों अब वागड़ की चौथ घर बैठे आजावेगी अतः आप सब बराबर बाँट कर खा लेना।

भविष्य में वागड़ से कुछ मत लूटना क्योंकि वागड़ अपने दुष्काल के समय में काम आवेगी। मेवाड़ और गुजरात लूट लाना किन्तु वागड़ छोड़ देना। वागड़ हमें जीवित रक्खेगा।

———

गीत परिचय :—

यह गीत भी अन्य भीलों की भाँति सामुहिक रूप से नृत्य व ताल के साथ २ गाया जाता है। यह गीत डूँगरपुर क्षेत्र का है और इसमें तत्कालीन राजा का प्रजा के साथ अत्याचार करने का वर्णन है। एक बार राजकुमारी का विवाह होने वाला था अतः किसानों पर 'टीलीवराड़' नामक नया कर लगाया गया। किसानों ने इस कर का विरोध किया और कर जमा नहीं कराया इस पर राज्य की पुलिस और भीलों के बीच में युद्ध होगया, जिसका वर्णन प्रस्तुत गीत में किया गया है। वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक तथा मनोवैज्ञानिक ढंग से किया गया है। साथ ही भीलों की एकता व संगठन की भावना का भी सुन्दर चित्रण किया गया है। मुख्य नायक काला गमेती का चरित्र भी अन्य लोगों के लिए अनुकरणीय है।

गीत

डूँगरपुर ने थोक माँ मातु गामडूँ काला गमेती
डूँगरपुर ते केनु राज वाजे ,,
डूँगरपुर माँ ते वाहीराजु नु राज ,,
बाही राज नां कोठां खाली पड़ियाँ ,,
बादल मेलां ते नीली पीली जाजम ,,
वादल मेलां आड़ी ने कंट डोड़ी ,,
बादल मेलां बैठा जालो जाल ,,
बादल मेलां ते भरज्यो दरीखानो ,,

बादल मेलां ते होल वत्री उमराव काला गमेती ।
बादल मेलां गालमा अमल काढ़ो ,,
बादल मेलां कसूंबो वपरावो ,,
बादल मेलां संकियां वातां सोड़े ,,
ऐ भाइयां रे मन सोव नी वातां रे ,,
भाइयां मारा कोठार खाली पड़िया ,,
ऐ भाइयां मारा हाँबलो मारी वातां ,,
ते डूँगरपुर नी भारी भारी पालां ,,
पाला माथे टीली वराड़ नाको ,,
ते भाइयां मारा मानी वराड़ नाको ,,
पालां मायते धुआँ वराड़ नाको ,,
लालु सपाई हामल मारी वातां ,,
लालु सपाई गले सपड़ा सा नाको ,,
लालु सपाई काल अे तेडो लावो ,,
ते लालु सपाई वेहलुं हिंडज्यु ,,
ते लालु सपाई ज ये धामा दौड़े ,,
ते लालु सपाई मातु गामडुं जाये ,,
ते लालु सपाई गीयू ठेटा ठेट ,,
ते कालु भाई तो ढोलिये जांगु बैठो ,,
कालु भाई ते बड़ बड़ हूकल पीये ,,
का गमेती ! हामल मारी वात ,,
का गमेती बाही राज बलावे ,,

ऐ लाल सपाई काले परमां आवुँ काला गमेती
ते लालु सपाई थारी मारी करे ,,
काला भाई मुंड़े होसी ने वोल ,,
काड़लती बाही राजनु वराड़ ,,
बाहीराज ना ते कोठां खाली पडियां ,,
बाहीराज ने टीली वराड़ नाको ,,
यो गमेती वीहलिनुं हीडंयु ,,
यो गमेती जाये रे धामा दौड़े ,,
यो गमेती डूँगरपुर नी पोलो ,,
यो गमेती बादल मेलां जाये ,,
बादल मेलां ते भरज्यो दरीखानो ,,
यो गमेती गीयुं ठेठ रे ,,
वो बादल मेलां मोला मजरा करे ,,
बावसी मारा हने कामें तेड़ियो ,,
का गमेती हामल मारी वात ,,
बाहीराजु नु तो वराड़ झेलवे हादियौ ,,
बावसी मारा मुं तो नहीं झेली सकु ,,
बावसी मारा भारी भारी पालां ,,
यो गमेती पोरा माये बेहाड़ो ,,
यो गमेती पोरा, माँये बेहाडि युं ,,
बावसी मारा ते एक ने बे दहाड़ा ,,
बावसी मारा मोयते हीक देओ ,,

यो गमेती बेहुलिनो आवे काला गमेती
यो गमेती तो आज्युं ठेठा ठेठ ,,
यो गमेती तो सोरे ढोल देवाड़े ,,
सोरा माते तो जाजमां नाको ,,
सोरा माते तो बैठा जालो जाल ,,
भाइयो मारा गा लमा अमल काड़ो ,,
भाइयां मारा अमलड़ा वपरावो ,,
भाइयो मारा हाथां नी हथेलियां ,,
ते भाइयां मारा मन सोबा नी वातां काला गमेती
ते भाइयां मारा सकिया वातां साले ,,
यो गमेती रई ने केवां बोले ,,
भाइयो मारा हामलो मारी वातां ,,
डूँगरपुर पोरा माये बेहाड़ियो ,,
बाही राज ना टीली हांसल नाको ,,
भाइयो मारा भेलां के नी भेलां ,,
का गमेती हामल मारी वातां ,,
मुआ रे भेलां जीवतां नी भेलां ,,
भाइयो मारा पालां एके करां ,,
भाइयो मारा धामता जुण ते मोकलावां ,,
यो जूण तो पादेर जाई लागुं ,,
यो जूण मडेंव जाई लागुं ,,
यो जूण तो पोकर जाई लागुं ,,

भाइयो मारा पालां एके करी	काला गमेती
भाइयो मारा एके कोरट करी	,,
ते डूँगरपुर हुँ रे सूटा असवार	,,
ते अरधा रे असवार न अरधा रे पेदल	,,
ई सपाइड़ा पालां पालां फरे	,,
वाहीराज नो धुआँ वराड़ भेलो	,,
देवल रे भेलहे तो अमां भेलहां	,,
पादर रे भेलहे तो अमां भेलहां	,,
गामडी रे भेलहे तो अमां भेलहां	,,
मंडेव रे भेलहे तो अमां भेलहां	,,
टोकर रे भेलहे तो अमां भेलहां	,,
ई सपाईड़ा थारी मारी करे रे	,,
गमेती बाबा हमलो मारी वाताँ रे	,,
का बाबाजी सपाइड़ा ठगीये आज्या	,,
सोरा वारी सांगी दीयो	,,
सोरा माथे मसके सांगी वाजे	,,
देवल मायते सांगी ढोल देवाणो	,,
गायड़ी मायते सांगी ढोल देवाणो	,,
पालां मायते सांगी ढोल देवाणो	,,
सपाइड़ा बुरी हालते मारो	,,
सपाइडा सोरियां ठगियां करे	,,
सपाइड़ा बहीरांऊँ वातां करे	,,

ते भाइया मारा अथुआरे हबांलो	काला गमेतो
ते भाइया मारा लालु सपाई मारियो	,,
ते भाईया घोडां नी फेंस वाड़ो	,,
ते भाइया मारा असवार पैदल करो	,,
ते भाइया पेदल धुला भेरा करो	,,
ते भाइया मारा वगणी २ ने मारो	,,
ते भाइया मारा जीवनां नई मेलो	,,
ते भाइया मारा पूरो वराड़ भरो	,,
ते भाइया मारा टीली व राड़ भरो	,,
बाही राज नो टीली व राड़ भरो	,,
बाहीराज नो हीली वराड़ भरो	,,
का सपाइड़ा पुरो वराड़ लियो	,,
सपाइड़ा ते सारां मारियां गियां	,,
भाइयो मारा गीत ते जातु मेलो	,,

शब्दार्थः—

थोक माँ = पास में। बाहीराज = राजकुमारी। कोटा = भण्डार, कोष। आड़ी ने कंटडोड़ी = सजावट करने का विशेष प्रकार का ढंग। जालो जाल = बराबर पंक्तिबद्ध होकर बैठना। संकियां = नशे में मस्त। टोली वराड़ = शादी के समय का विशेष प्रकार का कर लागू करना। धुआँ वराड़ = जंगलात के समान कर। बहेलुं = जल्दी। ढालिये = खाट पर। हामल = सुनो। थारी सारी = तूं तूं, मैं, मैं, अर्थात् झगड़े पर उतारू हो जाना। मूड़े = मुँह। होसी ने = सोच विचार कर। पोलां = दरवाजा। मोला मजरा = राजाशाही

प्रणाम । भेलवे = स्वीकार करना । अवड़ी = बदमाश, उपद्रवी । पोरां = पुलिस के नियन्त्रण में । हीख = जाने की इजाजत । नखड़ावो = बिछावो । वपरावो = वितरण करो । एके = संगठन । धामताजूण = शीघ्रता से दूत भेजना । कोरट = मीटिंग, इस मीटिंग में एक हज़ार से अधिक संख्या होती है । असवार = घुड़-सवार । अरधा पैदल = आधे पैदल । मांगी = ढोल । वारी = इकट्ठे होने का । सोरियुं = लड़कियों से । ठगाइयां = बदमाशी करते हैं । अथुआरे = सब प्रकार के हथियार । फैंस = हड्डी । बेरयुं = औरतों से । जातु मेलो = समाप्त करो ।

गीतार्थ :—

डूंगरपुर के पास में 'मातु' नामक गाँव है और काला नामक एक भील उस गाँव का मुखिया है ।

डूंगरपुर में किसका राज्य है ?

डूंगरपुर में तो राजकुमारी राज्य करती है । राजकुमारी के राज्य में कोष खाली हो गया है । इसीलिए बादल महलों में सरदार तथा उमरावों की बैठक का आयोजन किया गया है । नीली, पीली आदि तरह २ के रंगों की जाजम में बीछा कर बड़ी रोचक सावट की गई है ।

यथा समय सौलह-बत्तीस उमराव आगये हैं । सब लोग यथा स्थान पंक्तियों में बैठ गये और सारा सभामण्डप खचा-खच भर गया ।

अमल, कसुवां आदि मादक पदार्थ वितरण किये गये हैं । सब लोग नशे में मस्त हो कर बातें कर रहे हैं । भाइयों ! राज्य

का खजाना खाली पड़ा है।

हे भाइयों! मेरी बात सुनिये, डूँगरपुर में बड़ी २ पालें हैं, उन पर इस समय "टीली वराड़" लागू किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त जंगलात आदि के दूसरे टेक्स भी लगाये जायँ।

हे लालू सिपाही मेरी बात सुन। तूं अपने फले में राज्य के चपड़ासी का बेल्ट डालदे और काला कमेती को बुलाकर ले आ।

वह लालू सिपाही जल्दी से चलपड़ा। शीघ्रता से चलता हुआ मातु ग्राम में। ठीक काला गमेती के घर जा पहुँचा। उस समय काला भाई अपने खाट पर बैठा हुआ बड़-बड़ हूका पी रहा था।

लालू ने कहा "गमेतीजी आपको राजकुमारीजी ने बुलाया है।

गमेती ने लालू सिपाई से कहा कि "मैं कल परसों तक आ जाऊँगा"। इस पर लालू सिपाही तूं, तूं, मैं, मैं करने लगा, और कहा कि "काला भाई! जरा सोच-विचार कर जवाब देना"। राजकुमारीजी के भण्डार रिक्त पड़े हैं और "टीली वराड़" लेने के लिए तुम्हें बुलाया है।

यह गमेती शीघ्रता से रवाना हुआ और बादल महल जा पहुंचा।

बादल महलों में सभा-मण्डप भरा हुआ था।

इस गमेती ने निश्चित जगह पहुँच कर राजाशाही ढंग से प्रणाम किया और निवेदन किया कि "मुझे किस लिये बुलाया है?"

अरे गमेती सुन ! तुझे राजकुमारीजी ने 'बराड़' जमा कराने को बुलाया है।

गमेती ने कहा कि मैं अकेला कर स्वीकार नहीं कर सकता हूँ। क्यों कि बड़ी २ पालें भी हैं। (जिनका ज़िम्मा मैं अकेला नहीं ले सकता)। यह कहने पर इस गमेती को राज आज्ञा से पुलिस के नियन्त्रण में बैठा दिया गया।

एक दो दिन रहने के बाद उसने घर जाने की आज्ञा प्राप्त करली और जल्दी से चलकर गाँव आगया।

यहाँ आकर उसने वारी ढोल बजवाया और चौरे (पञ्चायत के स्थान) पर जाजमें बिछवाई।

सब लोग यथा स्थान बैठ गये। अमल निकाल कर बाँटी गई। सब आपस में विचार करने लगे। नशे में मस्त होकर सब बात-चीत करने लगे।

थोड़ी देर ठहर कर गमेती बोला "भाइयों मेरी सुनिये" मुझे डूँगरपुर में पुलिस के नियन्त्रण में रक्खा और 'टोली वराड़' जमा कराने के लिए कहा गया सो आप सब भरने को तैय्यार हैं कि नहीं ?

सबने जवाब दिया कि हम मर मिटेंगे पर जीवित रहते लगान (वराड़) नहीं देंगे।

हे भाइयों ! सब पालों को इकट्ठी कीजिये।

सब जगह दौड़ता हुआ आदमी भेजिये।

इस आदमी ने पादेर, मंडेव, पोकर आदि गाँवों में सूचना पहुँचा दी।

सब पालें एकत्रित हो गई और 'कोरट' होने लगी। इसी समय सिपाही लोग भी वहाँ आ पहुँचे। उनमें आधे घुड़सवार थे और आधे पैदल। ये सिपाही पाल पाल फिरने लगे।

लोगों ने कहा कि यदि देवल, टोकर, गामड़ी, मंडेव आदि गाँव वाले वराड़ देंगे तो हम भी दे देगें अन्यथा नहीं।

ये सिपाही तूँ तूँ, मैं, मैं करने लगे।

लोगों ने गमेती से कहा कि 'बाबा' ये सिपाही तो झगड़े पर उतारू हो गये हैं।

एकदम वारी ढोल बजाया गया।

गामड़ील्या देवल में भी वारी ढोल बजने लगा।

पालें युद्ध करने को तैयार हो गई।

इन सिपाहियों को बुरी तरह से मारने लगे।

ये सिपाही तो लड़कियों से बातें करते हैं और औरतों से शैतानी करते हैं।

हे भाइयों! अपने २ शस्त्र लेकर तैयार हो जाओ।

सबसे पहले लालू सिपाही को मार डाला।

उनके घोड़ों की पांस भी काट डाली, जिससे घुड़सवार सब पैदल हो गये और धूल में चलने लगे।

एक २ गिन गिन करके मारने लगे। एक को भी जीवित मत छोड़ो और सिपाहियों को ताना मराकर कहने लगे—

यह है तुम्हारा पूरा २ 'टीली वराड़'।

सारे सिपाही मारे गये।

गीत परिचय :—

यह भीलों का ऐतिहासिक गीत है भील तथा भीलनियाँ इसे सम्मिलित रूप में नृत्य करते हुए गाते है। भोराई गाँव में १२ मोहल्ले हैं वहाँ एक बार भयंकर अकाल पड़ा सभी लोग बिना अन्न तथा जल के त्राहि २ करने लगे। उस गाँव का भोगो नामक गमेती था। सारे गाँव के लोग उसे कोसने लगे और शाप भी देने लगे। इतने में ही मानजी नामक एक भील जो अति शूरवीर एवं लड़ाकू था, उसने अपने नेतृत्व में सभी भीलों को चौराहे पर एकत्रित कर युद्ध करने के लिये कहा सभी लोग उसके पीछे हो गये और युद्ध करने लगे। रणस्थल से शत्रुओं के सिर अपने साथ लेकर अपने २ घरों की ओर प्रस्थान किया और लाये हुए सिर पेड़ पर लटका दिये इस प्रकार शत्रुओं का वैर लेकर दीपावली उत्सव मनाया।

इस गीत में भील जाती की प्रतिशोध लेने की प्रबल भावना और वीरता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

गीत

बारा पाड़ा भोराई हे	मानजी भाई रे
पड़ियो कोड़ी काले	,,
सोरां मरवे लागा	,,
रांडी डगवे लागी	,,
टोली तैयार करो	,,

रांडी ओकर बोले	मानजी भाई रे
अवरा सवरा बोले	,,
कुणं गमेती वाजे	,,
भोगू वाजी रेईयूं	,,
बीजू कुणे वाजे	,,
भीमजी वालू लालजी	,,
राजिंग वालू फूलू	,,
किनु किनु जाजू	,,
कलातंनु जाजु	,,
कुणे टोलियां नो मेलनारे	,,
खीमर वालो मानो मानजी	,,
बीते टोलिया नो मेलनार	,,
देवजी रामो वाजे	,,
रँमवानो हुसीयार	,,
चोरे भेळा थाजो	,,
आमली वाले चोरे	,,
चोरें भाई ला भेला	,,
वेठा जालो जाल मानजी	,,
मनसोबा नी वातां	,,
भाइये परियो कोड़ी काले	,,
रांड़ी ओकर बोले	,,
अवरा चवरा बोले	,,

कुंण गमेती वाजे मानजी भाई रे ।
विनी राण्डी थाहजो ,,
विनूं खोजे जाहे ,,
पेरो चीरम चुरली ,,
सोंरां मरी खूंटा ,,
वागर जूनी चोते ,,
बाप दादांनी चोते ,,
वागर रमने जांहां ,,
मखे रखे होसो ,,
वालक राण्डी थ.हे ,,
ढालने तरुवारे ,,
पीली ने परबाते ,,
धारु धामा दोरे ,,
खेरजेरुवा थाहें हकनिया ,,
होम माता ने ढाले ,,
नीयाल पुरे धारु जावे ,,
माता वाले वरले मानजी ,,
कुवड़ी ने नाके ,,
खीम पारे जाई लागु ,,
जाथे धामा दोरे ,,
गने पुर ने गोर दरे ,,
थूर जाई लागु ,,

पीली ने पेरवातं मानजी भाई रे ।
सुटनी धोली हेरो ,,
धोलियां धारु छोटु ,,
थुरनी वालन वाली ,,
वाजी वेरन वारे ,,
मसके रोलूं लागू ,,
माना भाइने तोरादार बन्दूके ,,
धर खोरै धर मारे हे ,,
धनाये गौली लागी ,,
धानू मराई गईयू ,,
वालन नहीं आलवी ,,
हारा वेरी मारवा ,,
धोली नहीं आलवी हे रे ,,
हा को धोली हा को ,,
थुरिया नाकू वान्दे ,,
धामतु धारु आवे ,,
थुरिया ताकी रेइया ,,
अलपथीया दरे ,,
माना हेरिया लागो ,,
ढलकी नँ से पड़यो ,,
जोली माना गालो ,,
बलनी जोली आवे ,,

धोली नहीं आलो	मानजी भाई रे ।
मरं मारं वालन नहीं आलँ	,,
धारुं वसीयार करे	,,
दकती वातँ करे	,,
बदिरं मुड हईये मेलहूं	,,
वेर वाली ने दीवो मेलहूँ	,,
आला वेरे वालो	,,
भोराई हमसो आलो	,,
वलतु धारु जा है	,,
जाये धामा दोरे	,,
थुर जाई लागु	,,
हरर हे हते ईया बोलावे	,,
लाजे माता करवाल	,,
विलती लाजे भोहाल	,,
थुर बाली दी दी	,,
खूंटे खूंटो बालियो	,,
दूनी राई वावो	,,
जीवतँ रखे मेलो	,,
डोड़ी वालन वखो	,,
आलां वेर वालियां	,,
धारु धामा दोड़े	,,
भोराई आवी लागू	,,

वेर वारीने माता लाइया	मानजी भाई रे।
सोरे माथं टेरो	,,
थुरियन रान्डी कीदी	,,
वैर वालीने दीवाली कीदी	,,
गीत जातो मेलो	,,

शब्दार्थः—

बारे पाड़ा=एक गांव के बाहर (मोहल्ले)। कोड़ी काले=बिलकुल सूखा काल, अनावृष्टि होना। चोरा=सोरा, बच्चे। रांडी=विशात्रा। टोली=दल। ओकर=ताना मारना। अवर सवंड़ा=उल्टा सीधा, श्राप देना। जाजु=बहुमत। मेलनार=मुखिया। रमना=खेलना। चौथ=कर (सुरक्षा रखने का कर) खरवडियां=अपशकुन। धोली=गाय। वालण=समूह। हारा=सब। हाको=चलाओ। ताकी=ताकलगाना, एक चित्त से देखना। हरियो=तीर। जोली=झोली कपड़े की बनाई जाती है। दकती= दूखती, असहयबातें। लगती=नज़दीक। वालिने= बदला चुका कर। अला वैर=ताजी शत्रुता।। हमचो=समाचार। लागु=पहुंच। लाजे=शर्माना, लज्जित होना। माथा=मस्तक। चोरे=चौहटा, पंचायत करने का स्थान। टेरो=लटकावो।

गीतार्थः—

भोराई गाँव में १२ फले (मोहल्ले) हैं उनमें मानजी भाई भी रहता था। एक बार वहाँ भयंकर दुर्भिक्ष पड़ गया। बाल बच्चे मरने शुरू हो गये। विधवाएँ घबराने लगी। धाड़ा (दल) तैयार करो। विधवा स्त्रियाँ उल्टा सीधा बोलने लगीं।

कौन गमेती कहलाता है ? भोगा यहाँ का गमेती कहलाता है। दूसरा और कौन है ? भीमजी का पुत्र लालजी है। राजिंग वाला फूला भी है। किसका बहुमत है ? कलातों का बहुमत है। दल का मुखिया कौन है ? खीमा का पुत्र माना इस टोली का मुखिया है।

और देवजी वाला रामा लड़ने में बड़ा बहादूर है। गाँव आमली वाले चोरे (पंचायती स्थान) पर सब इकट्ठे होवें। यथा समय सब एकत्रित हो गये और बराबर पंक्तियों में बैठ गये। सब विचार-विनिमय करने लगे। हे भाइयों ! निरा अकाल पड़ गया है अतः विधवाएँ उल्टा सीधा बोलती हैं। वे शाप देती हुई कहती हैं कि "गमेती की औरत भी विधवा हो जाना"। और गमेती वंश नष्ट हो जाना। गमेती को हाथों में चीरम-चूड़ियाँ पहिन लेनी चाहिये। अपने बाल बच्चे मर गये हैं।

वागड़ से हमारे पूर्वज (बाप-दादा) चौथ वसूल किया करते थे। हम भी वागड़ पर चढ़ाई करेंगे। आप लोग मरने की परवाह नहीं करें। सम्भव है नवयुवतियाँ विधवा हो जायँ। ढाल तलवार आदि शस्त्रों से सुसज्जित होकर सुनहरे पीले प्रातःकाल में दल रवाना होता है। घाड़ा तेजी से चलता है। उनको अपशकुन भी होते हैं।

सोम नदी के किनारे नियालपुर गाँव में वह वृक्ष के नीचे वाले चोरे पर जा पहुँचा। कुवड़ी के दर्रे से होता हुआ खीप

पर जा पहुँचा। वहाँ से गनेशपुर होता हुआ थूर जा पहुँचा। वहां प्रातःकाल के समय में गायें चरने जा रही थीं अतः यह दल उन गायों के पीछे लग गया। थूर के सारे मवेशी भगा ले गये। युद्ध की तैयरियां होने लगीं। रणभेरी बज उठी और घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया। मुखिया के पास तोड़ादार बन्दूक थी अतः वह धड़ा धड़ शत्रुओं को गिरा रहा था।

एक गोली धने को आ लगी जिससे उसका प्राणान्त हो गया। मानाजी ने कहा कि सब शत्रुओं को मार डालना चाहिये और मवेशी वापस नहीं देना चाहिये। गायों को लेकर सब लोग रवाना हो गये।

इधर थूर वालों ने उनका मार्ग रोक लिया और छिप कर तान कर के एक तीर मार दिया। माना नीचे गिर पड़ा। माने को कपड़े की झोली में डाल दिया।

दल वाले विचार करने लगे। उन्होंने निश्चय किया कि चाहे मर जावेंगे किन्तु गायें वापस नहीं देंगे और मानजी का ताजा बदला चुकायेंगे। भोरांई समाचार भेजदो। धाड़ा पुनः थूर पर चढ़ाई करता है।

धाड़ा थूर जा पहुँचा। अपनी इष्ट देवी कखल माता की जय-कार करके थूर में आग लगादी गई। वहां की प्रत्येक चीज जलादी गई। एक भी शत्रु को जीवीत मत छोड़ो। डेड़गुना बदला ले लो तथा ताजा वैर चुकाओ।

इसके पश्चात घोड़ा वापस रवाना हो गया और भोराई आ-पहुँचा। बदला चुका कर शत्रुओं के काट कर लाये सिरोंको गाँव के चौरे पर लटका दिये। इस प्रकार थूर की स्त्रियों को सदा के लिए विधवा बना दी और शत्रुओं को मजा चखा कर दीपावली का त्यौहार मनाया।

———

गीत परिचय :—

भीलों के इस प्रसिद्ध ऐतिहासिक गीत में एक यथार्थ घटना का बड़े मर्मिक ढंग से वर्णन किया गया है। गीत काफ़ी बड़ा है। घटना की प्रमुख नायिका 'रूपली' का चरित्र चित्रण इतना विस्तृत और स्वाभाविक रूप से किया गया है कि गीत को सुन कर श्रोताओं के सम्मुख एक चित्र खींच जाता है और ऐसा मालूम होता है जैसे कि प्रत्येक चीज़ प्रत्यक्ष घटित होती दिखाई दे रही हो। इस गीत में एक प्रकार से 'रूपली' की जीवनी लिखी हुई है, घटनाओं के समस्त उतार चढ़ाव, शृंगार तथा वीर रस का वर्णन अत्यन्त ही सुन्दर ढंग से किया गाया है जिसे पढ़कर पाठकों का हृदय प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। गीत को पढ़ते समय मन इतना एकाग्र हो जाता है कि वर्णित दृश्यों के साथ २ ही नाचने लग जाता है।

विद्याभवन हाई स्कूल द्वारा इस घटना का एक नाटक भी खेला जा चुका है इससे भी प्रमाणित होता है कि वास्तव में यह

गीत भीलों के श्रेष्ठ गीतों में से एक है। गीत में 'रूपली' के बाल्यकाल से लगाकर युवावस्था तक के समस्त जीवन का वर्णन बड़े प्रभावशाली ढंग से किया गया है जिससे इस समय में घटने वाली प्रत्येक घटना का एक साधारण भील-बालिका आज भी अपने जीवन में अनुभव करती है।

गीत

हासु बारे पाड़ा देवली वाजी रई रे वनजारा रे।
हासु देवोल मायते किनो जाजो वाज रे ,,
हासु देवोल मायते मन ताँनो जाजो रे ,,
हासु हरी रीहै कोटेरं मनातं वालु जागु रे ,,
हासु बार बार ना लो अवा है उजेरियो रे ,,
हासु मानु मनाते डांडा टोटे आइया रे ,,
हासु मानु मानात राई ने केवँ बोले रे ,,
हासु पूज्या सोरा हांबल मारी वात रे ,,
हासु पूज्य सोरा गामें तेडु फेरवाड़े ,,
हासु पूज्य सोरा पीली ने परबाते रे ,,
हासु पूज्य सोरू जायेरे धाम दोड़े रे ,,
आकी रे खड़क ने देवली एकलो रे ,,
पूज्यो सोरो गामें तेड़ूं फेरवे रे ,,
भाइयों मारे वेला हीएड़े आवो रे ,,
पूज्या सोरा क्यँ हुँएडे आवहँ रे ,,

भाइयो मारें मुन्दर नी तलाईये रे वनजारा रे।
अररहे मानु भाई राई ने केवँ बोले रे ,,
माता मारी रोटा हाण्णां करो रे ,,
पूज्यो सोरो राइने केवँ बोले रे ,,
भोजाई मारँ रोटा हाण्णां करो रे ,,
मानु भाई रे पीली ने परवातँ रे ,,
पूज्या सोरा गरनँ भांते बाँदो रे ,,
पूज्या सोरा कोरं कलशं पानी रे ,,
मानु भाई हकनिया वसियारो रे ,,
पूज्या सोरा खेर जेरुवा हकनिया रे ,,
ई हान्डरलो जाये धामा दोरे रे ,,
आमजेर ना लोके पुछना पूछे रे ,,
ई हान्डरलो किय जाहे किय आवे रे ,,
ई हान्डरलो मुन्दर नी तलाइयो रे ,,
ई हान्डरलो गीयो ठेठा ठेठे रे ,,
मानु भाई रे राई ने केवं बोले रे ,,
पूज्या सोरा पानी साइंले मेलो रे ,,
पूज्या सोरा भाँत ऊँची टेरो रे ,,
भाइयो मारो वाड़ो डाण्डा वाड़ो रे ,,
भाईयो मारो जेठ वेसाखी दनरा रे ,,
मानु भाइ रे तीका तपे तावरा रे ,,
भाइयँ मार हीलू कियँ गालं रे ,,

भाइयो मारो मुन्देर वाली वावं रे वनजारा रे।
भाइयो वीथा हीलू गालहँ रे ,,
ई हाण्डरलो वाव जाई उतरीयो रे ,,
भाईयो मारो टाड़ा हीला गालो रे ,,
मुन्देर नी पनीयारी पाणी आवे रे ,,
जमेरा रे रान्डियाना जोला रे ,,
जमेरना जोला पानी आवे रे ,,
आरिरी हैं कुआरिया ना जोला पानी आवे रे ,,
सोरियाँ वारो चम चमाटो वाजे रे ,,
मानु मानात राई ने केवँ बोले रे ,,
का देहंग भाई सोरी हुं रूपाली रे ,,
मानु भाई रे हारुवातं रे नंनाम नी सोरी रे ,,
का देहँग भाई सोरी हूँ रूपाली रे ,,
मानु भाई रे हारुवातं रे नंनामा नी सोरी रे ,,
का देहँग भाई सोरी हूँ रुपाली रे ,,
का मानु भाई रूपालीनु हूँ कामें रे ,,
भाइयो मारा हांवलो मारी वातँ रे ,,
हातं भाइयं पूज्यो कुंवारो रे ,,
पूज्या नी लाड़ी नरकी आलो रे ,,
भाईयो मारो हरनाई औरनी वाली रे ,,
भाईयो मारो चोरम सुरली वाली रे ,,
भाईयो मारो वटलोई बेडला वारी रे ,,

का देहँग भाई कीनी सोरी वाजे रे, बनजारा रे
देहँग भाई ने हाला नी है सोरी रे ,,
का देहँग भाई नामे लई बोलावा रे ,,
रूपाली लाड़ी ने नाम रूपली ,,
भाइयो मारो गमी ई के नहीं गमी रे ,,
मानु भाई रे तई गमि मइ रमि रे ,,
पुज्या सोरा वेरले रुपीयो दड़ो रे ,,
पुज्यो सोरो बेरले रुपीयो दड़े रे ,,
रूपां वेवण राइने केवं बोलं रे ,,
कादेहँग फुआ जाणीये रुपीयो दड़जो रे ,,
गामड़ी ना परमातं दोरो बान्द्यो रे ,,
रूपावाई रे तिम थाहँ तिम थाहँ रे ,,
ई हाण्डरलो विहुलोने जाये रे ,,
ई हाण्डरलो हारु वातं नी पाटालं रे ,,
मानु मनात राई ने केव बोले रे ,,
वेवाई मारा हॉबलो मारी वातां रे ,,
रुपालीनो आड़ो वेरो वालो रे ,,
हगे मारे हांबलो मारी वात रे ,,
गामड़ी ना परमातं दोरो बन्दो रे ,,
ई हाण्डरलो राई ने केवां बोले रे ,,
रुपाली ने वेडले रूपीयो दड़ियो रे ,,
रुपीयो रे दड़ियो ने रूपां मारी रे ,,

ई मानाते रई ने केवं बोले रे वनजारा रे ।
वीजे रे परनाव हो जगरो लागहे रे ,,
ई हाण्डरलो आवे धामा दोरे रे ,,
ई हाण्डरलो देवाले आवी लागो रे ,,
अरीरी है रूपं वेवण वान्दे जानु परियारेरे ,,
रूपा वेवन भरजोवेनिया मायेरे ,,
रूपा वेवन कापड़ी भींजे रे ,,
देवलीना मनाते राई ने वोले रे ,,
रूपाली ने बेड़ले रूपीयो दड़ियों रे ,,
रूपाली ने अमा परनी लेजां रे ,,
गामडी ना परमाते राई ने बोले रे ,,
रूपालीने आमँ दोर्‌यो बान्दियो रे ,,
रूपालीते अमँ परनी लेंज रे ,,
रूपा वेवन रगड़ा माये परी ई रे ,,
वे पाल ने वस मे वान्दे परी रे ,,
रूपा वेवन जोवन ना जोला खाये रे ,,
रूपा वेवन बारे बारा धोली रे ,,
रूपा बाई हे परभाते नो पोरे रे ,,
रूपा बाई हे धोलिये मोरो थाये रे ,,
रूपा बाई रे जीणा वासरु मेलो रे ,,
रूपा बाईरे नामे लाई बोलावे रे ,,
रूपा बाई रे पीयल ने परवाली रे ,,

रूपा बाई रे खांदा माये हेलानु रे, वनजारा रे।
रूपा बाई रे हाथ मायँ दोवारा रे ,,
रूपा बाई रे पागली चागली जोयो रे ,,
रूपा बाई रे उरा मडरा दोयो रे ,,
रूपा बाई रे राबे चाहे खोलो रे ,,
रूपा बाई रे गुवलियँ हम जावो रे ,,
रूपा बाई रे पान रीपली पोले रे ,,
रूपा बाई रे गुगरियाला जंवा रे ,,
रूपा बाई रे हँकलीयरी हेली रे ,,
रूपा बाईरे ठोकरां जापा ठोरो रे ,,
रूपा बाई रे होयो हीयो करो रे ,
रूपा बाई वें गुवाल कुणे जाहँ रे ,,
रूपाबाई रे धोलीयनी गुवाले रे ,,
रूपाबाई रे धोली केमनी वातहँ रे ,,
का गुवाले वाल हूँ आड़ी माल रे ,,
ईते धोली गई ठेठा ठेठे रे ,,
रूपानाई धोली ने सारे ने गीत गाये रे ,,
भाइयों मारा हँवलो मारी वात रे ,,
गुजरात मायां शमलाजी नो मेलो रे ,,
कागदर नु कलाउवं मेले जाय रे ,,
बदियो रे कालाउवो मे ले जाये रे ,,
कावरी वालो गोदो लेइने जाये रे ,,

अरिरि हैं ठाहँ नो है मेल्लो रे, वनजारा रे।
बदियो रे कलाउवो धामा दोरे रे ,,
बदियो वेवाई खेरवाडा ने हेरां रे ,,
बदियो वेवाई मोतली वाली गटी रे ,,
बदियो वेवाई अमजेर ना हेरां रे ,,
बदियो वेवाई जाये धामा दोरे रे ,,
बदियो वेवाई चेली ने चोगलियां रे ,,
रूपा वेवण धोलिया ना गुंवाला रे ,,
अरर है मुन्दर ने गटे धोली चारे रे ,,
बदियो वेवाई सेली ने चोगलियो रे ,,
बदियो वेवाई बहैली टीपोरे रे ,,
रूपां वेवण उची मगरी बैठी रे ,,
रूपा वेवण धोली सारे ने गीत गाय रे ,,
बदियो वेवाई रई ने केवां बोले रे ,,
का वेवण पणियां कि कुआंरा रे ,,
का वेवाई पूछी ने हूँ कामे रे ,,
का वेवाई पणिया नी कुआंरा रे ,,
का वेवणजी किनी चोरी वाजे रे ,,
हरूवाते मुन्दरियानी चोरी रे ,,
का वेवणजी कियॉ तई पणाविया रे ,,
का वेवणजी होसी ने बोलजो रे ,,
का वेवाई अकल नी कुआंरी रे ,,

बड़ियो वेवाई गीरावगु गोरावे रे, वनजारा रे।
गोरावना ने हमसे गोत गाये रे ,,
बड़ियो वेवाई वहेली टीपो रे ,,
वहेली ने हमसे गीतें गाये रे ,,
गीतें रे गाय ने रूपाग हमझावे रे ,,
रूपा वेवग आपने मेले जाँवु रे ,,
का वेवाई रा हाँवल मारी वात रे ,,
गामरी ना परमात दोरो वाड़ियो रे ,,
देवली ना मनात वेरले रुपियो दरियो रे ,,
वे पाला ने वममे वान्दो पड़ियो रे ,,
मई लेजाई ते राई ववॉह ,,
रूपा वेवग घोली घाडा आलो रे ,,
रूपा वेवग घोली घाड़ा ,,
रूपा वेवग आपणे मेल जावु रे ,,
वेवाई ने वेवग रे ,,
व गुजरात मे शामलाजी नो मेलो रे ,,
रूपा वेवग चोलने मोचल माये रे ,,
रूपा देवग जाये धामा दौड़े रे ,,
रूपा वेवग गिया ठेठा ठेठ रे ,,
रूपा वेवग शामला जी ने मेले रे ,,
रूपा वेवग हाट ने बजारे रे ,,
रूपा वेवग राकरी वेरी लेजो रे ,,
रूपा वेवग हाई रो वोरो लेजो रे ,,

रूपा वैवण नेवरी पेरी लेजो रे, वनजारा रे।
बदियो वैवाई ढाहो नो दमालो रे ,,
बदियो वैवाई ढाहो सारण वैसो रे ,,
अरर ई ते ढाहो दमाला माये पाड़ी रे ,,
बदियो वेवाई डोले २ आवे रे ,,
बदियो वेवाई आवे धामा दौड़े रे ,,
रूपां वैवण देवल खबर लागी रे ,,
रूपां वैवण गामड़ी खबर लागी रे ,,
गामडी ना मर माथ रई ने बोले रे ,,
देवल ना परमाथ रूपां ले गिया रे ,,
गामड़ी नु तो धामतु जुण मोकलावे रे ,,
यों जुण देवल जाई लागुं रे ,,
ई जुणे मानु नी पटाले रे ,,
का गमेती हांबल मारी वात रे ,,
का गमेती रूपली तां लाइया रे ,,
का रे भाई रूपली नही लाईया रे ,,
गामड़ी ना परमाथ रूपली ले गिया रे ,,
का मानु भाई वे तो रूपली नी ले गिया रे ,,
हासुं फोरो गांमड़ी रे देवली नो वगरो लागो रे ,,
आमां तामां धामता जुण मोकलावो रे ,,
मानु मनात हदेहो मोकलावे रे ,,
उबे पाणे कादिरू जोडां रे ,,

मगुरी ना काड़ में वेला आवो रे वनजार रे ।
अरीरीरी आकी री गामड़ी ना भाइला आवजो रे ”
ई जुणे आवे धामा दौड़े रे ”
मानु मनात पीली ने परबात रे ”
मगुरी ना काड़ में भाईला भेला रे ”
गामड़ी रे देवली ना भाईला भेला रे ”
भाइयों मारा बैठा जालो जाल रे ”
भाइयों मारा मनसोबा नो वातां रे ”
देवली ना मनाते रई ने बोले रे ”
का परमाथे रूपां पासी आलो रे ”
अरर गामड़ी ना परमाथे रई ने बोले रे ”
का मनाते रूपां पासी आलो रे ”
आमी तामी अदावट पड़ी रे ”
अररं कादिरां में फोरो वगरो लागो रे ”
आमां तामां रूपली मागंवे लागा रे ”
फोरो फोरो हाथ उपाड़ो थाहे रे ”
अरर रे कादिरा में वार पुरानी रे ”
देवली मायते वारी सांगी वाजी रे ”
अरदा आदमी अरदी बइरी रे ”
अरदी सोरी अरदा सोरा रे ”
मगुरी ना काड़ में रोलो लागो रे ”
भाइयों मारा दनकी लड़ाई थाये रे ”

लड़ाई थाये ने माटी मराय रे वनजारा रे ।
आमली वारी डांगे शांगी वाजे रे ,,
कनियाला ने घाटे शांगी वाजे रे ,,
भाइयों मारा मण २ हिहुं उसंले रे ,,
खेरवाड़ा माथे हिहुं टोटे आइ यु रे ,,
डूँगरपुर में तरगा टोटे आइया रे ,,
भाइया मारे भाणिया गोली लागी रे ,,
भाणियो भाई ते ढलकी नीचो पडियो रे ,,
भाइयो मारा वगताये गोली लागी रे ,,
भाइयो मारा रतनाए हरीयो लागो रे ,,
भाइयो मारा मानाए हेरको लागा रे ,,
भाइयो मारा लोत जोली गालो रे ,,
हतरे खरक ने देवली अेकली रे ,,
पालरे पाल खबर लागी रे ,,
कागदर नी वडअर धामती आवे रे ,,
भाइयो मारी मनातां नी सोरी रे ,,
भाइयो मारी वे तो घामती आवे रे ,,
इये सोरी कडाल आवी लागी रे ,,
ई सोरी मानु भाई ने घेरे रे ,,
काका मानुँ हामलो मारी वातां रे ,,
काका मानु हाथी रा वगारिया रे ,,

हाये २ कारलेरा वगारिया रे वनजारा रे ।
काका मानु नहीं रेइया नो जोगे रे
इये सोरी रणोई माये ओड़ानी रे ,,
भाइयो मारा हंई मरो, मारो रे ,,
कागदर नु कलाउवु रूपां ले गियुं रे ,,
बदियो रे कलाउवु रूपां लेगियु रे ,,
भाइयो मारा रणोई वेराई गया रे ,,
भाइयो मारा जुठे जगड़े मुआ रे ,,
अररी मरी ने पछताना रे ,,
गीत जातो मेलो रे ,,

शब्दार्थः—

बार बारना=बड़ाभारी मकान जिसमें अनेक कमरे तथा दरवाजे हों। उजेरियो=मरम्मत के लिये मकान को खोल कर बनाना। टोटे=कमी पड़जाना। आकिरे=समस्त। हाएडे=सहयोग से, मिल जुल कर काम करना। हारना=साग, सब्जी। गरने माँत=भोजन। चहिले=छाया में। जाला=समुह। चम चमाटो=पैरों में पहिने हुए जेवरों की आवाज। नरकी आलो=प्रसन्द करदो। गमिई=पसन्द आगई। जाणिये=सोच विचार करके। हरुगतं=गौत्र का नाम। पटाले=बरामदे में। आड़ोवेरो=दोनों हाथों को एक विशेष स्थिति में रखकर धोबे से शराब पीना। बरेलो=पानी भरने के बर्तन में। वन्दे=दुविधा। चोलने मोचल=पूर्ण युवावस्था में। हाट=बाजार। हाईरो=मोतियों की माला। दमालो=बैलों का बहुत बड़ा समूह। चोकरियो=चार २ रुपये इकट्ठे गिनना। डोले डोले=जंगल के रास्ते से। कादीरूं=पंचायत करना, न्याय करना। काड़=दो पहाड़ों के बीच

की उपज की भूमि। अदवदी=मनमुटाव। जीणा=धीरज से। वासुर=बछड़े। खांदा मांये=कंधे पर। हेलानू=दूध निकालते समय गाय के पैर बांधने की रस्सी। दोवारो=दूध निकालने का बर्तन। उरा मडरा=दोनों हाथों से दूध निकालना। ठोकरां जायां ठोरो=पैर की ठोकर से दरवाजा खोलना। ढांहनों मेलो=बैलों का मेला। चेली ने चोगलियोरे=फैशन के साथ रहने वाला। बैहलीटीयो=बंसी बजाना। अकल नी कुवांरी=जन्म से अविवाहित। गोखनु=बांस का एक वाद्य यंत्र जो हाथ व मुँह की सहायता से बजाया जाता है। गोरावे=बजाता है। गोरावनाने हमचे=उस वाद्य की ध्वनि में बात करना। खेबेर=पता लगना। धामतु=दौड़ता हुआ। जुण=दूत। फोरो=मामूली। वगरो=झगड़ा। कादिरो=आपसी समझौता। हाथ उपारो=मारपीट। हिहुं=शीशा। तरगा=तीर। हरको=खड्ग का वार। हाथीरा=हाथी के समान बलवान पुरुष। राठोई=भयंकर युद्ध। वेराई गया=बिखर गये। मुआरे=मरगये। पसमाना=पछताना।

गीतार्थः—

देवल नामक ग्राम में बारह फले हैं। वहाँ कौन २ गौत्र हैं? मनात गौत्र के भीलों का बहुमत है। एक बार मानू नामक मनात ने १२ कमरे के एक एक विशाल मकान का जीर्णोद्धार करना प्रारम्भ किया। मानू मनात के डांडे कम पड़ गये।

मानू ने अपने लघु भ्राता पूँजा को बुला कर कहा कि गाँव में निमन्त्रण दे आओ। पूंजा प्रातःकाल के सुहावने समय में चल पड़ता है। तेजी से चलता हुआ सारी देवल और खड़क में

निमन्त्रण पहुँचा देता है। पूँजा गाँव वालों को निमन्त्रण देता है कि मेरे यहाँ जल्दी 'हांडे' आना। गाँव वाले पूछते हैं कि 'हांडा' कहाँ जावेगा ? पूंजा उत्तर देता है कि हांडा मुन्दर की तलाई (स्थान) में जावेगा।

मानु भाई धैर्य एवं शान्ति से कहता है कि "माता रोटी और शाक तैयार कीजिये"। माता भोजन बनाती है। मानु पूंजा से कहता है कि भोजन कपड़े में बाँध ले। पूंजा नये घड़े में पानी भर लेता है। मानु भाई शकुन देखता है। शकुन खराब होते हैं।

यह हान्डा तेजी से चलता है। मार्ग में लोग पूछते हैं कि यह हान्डा कहाँ जा रहा है ? यह हांडा मुन्दर की तलाई जा रहा है। यह हांडा निश्चित स्थान पर पहुँच गया। मानु ने पूंजा को कहा कि पानी छायां में रख दो और भोजन पेड़ पर टांग दो। डांडे काटना प्रारम्भ किया। ज्येष्ठ वैशाख के दिन होने से तेज धूप पड़ रही है। हे भाइयों ! दोपहर का विश्राम कहाँ किया जाय ? सब लोगों ने मुन्दर की कावड़ी पर विश्राम करने का निश्चय किया। वहाँ वे विश्राम कर रहे थे। उसी बावड़ी पर मुन्दर की पनिहारियाँ पानी भरने आती थीं। नौजवान युवतियों का समूह पानी भरने आया। सुहागन और विधवा स्त्रियों के झुण्ड भी पानी भरने आये।

अविवाहित लड़कियों का झुण्ड भी पानी भरने आया है। लड़कियों के जेवर की छम छमाहट बज रही है। मानु मनात धैर्य और शान्ति के साथ कहता है कि हे देहंग भाई ! यह

लड़की वड़ी सुन्दर है। देहंग कहता है कि यह तो हरूआत गौत्र के भीलों की लड़की है। हे मानु भाई ! तुम्हें लड़की की सुन्दरतासे क्या मतलव है ? मानु भाई कहता है कि हे भाइयों, सात भाइयों में पूँजा अभी तक अविवाहित है इस लिए उसकी पत्नी योग्य लड़की ढूंढनी है।

सबलोगों ने हरनाई साड़ी पहनी हुई, चीरम चूड़ियों वाली, जिसके सिर पर बेड़ा (चरू तथा चरवी) था उसे पसन्द की। क्यों देहंग भाई ! यह किसकी लड़की है ? यह देहंग भाई केसाले की पुत्री है। देहंग भाई नाम लेकर कहता है कि "रूपाली लड़की है और रूपली ही इसका नाम है। हे भाइयों ! पसन्द आई कि नहीं ? हे मानु भाई तुम्हें पसन्द आई तो हमें भी आ गई।

पूंजा मानु के आदेशानुसार रूपली के बेवड़े में रुपया डालता है। रूपां जरा शान्ति के साथ बोलती है कि तुम सोच विचार कर रुपया डालना क्योंकि गामड़ी के परमाथों ने मेरे डोरा बांध रक्खा है अर्थात् सम्बन्ध निश्चित हो चुका है।

यह 'हांडा' जल्दी से रवाना होकर हरूवतों के यहाँ पहुँचा। मानु मनात शान्ति से कहता है कि हमने रूपां के बेवड़े में रुपया डाल दिया है अतः रूपां हमारी हो चुकी है। हरूवातों ने कहा कि हे सम्बन्धियों ! रूपां को गामड़ी के परमाथों ने डोरा बांध दिया है। मनातों ने कहा किन्तु रूपां हमारी हो चुकी है अगर अन्य किसी जगह उसका विवाह करोगे तो झगड़ा होगा इसके पश्चात यह हांडा वापस रवाना होगया और शीघ्रता से चलता हुआ देवल आ पहुँचा।

इस प्रकार रूपां दुविधा में पड़ गई। उसका मस्त यौवन छलकने लगा क्योंकि वह पूर्ण युवा अवस्था में थी। देवल के मनात कहते हैं कि रूपां से हम शादी करेंगे क्योंकि हमने रूपां के बेवड़े में रुपया डाला है। गामड़ी के परमाथ कहने लगे कि रूपली को हमने डोरा बांधा है अतः उससे विवाह करने के अधिकारी हम हैं। इस प्रकार दोनों पालों के झगडे में रूपली की युवा अवस्था ढलने लगी।

रूपां के पास १२ वाड़े (मवेशी बांधने का स्थान) गाये थी। प्रातः काल के समय में, गायों को विलम्ब होता है। रूपां के कंधे पर रस्सी है और हाथ में दूध निकालने का बर्तन है। रूपां गायों को देखती है कि दूध उतारा कि नहीं। वह राबड़ी तथा छाछ देखती है। वह गुवांल जाने को तैयार होती है।

उसके मवेशी बांधने के मकान का दरवाजा पनडियों वाला है और उस पर गुगरियां लगी हुई है। रास्ता बहुत तंग है। गुवांल कौन जावेगा ? गायों की ग्वाल रूपां है। रूपां बाई गायें किस ओर छोड़े ? आड़ीमाल नामक पहाड़ी पर गायें चरती है। गायें निश्चित स्थान पर पहुँच गई। रूपां गाये चराती है और मस्ती से गीत गाती है।

उस समय गुजरात में शामलाजी नामक स्थान पर पशुओं का बड़ा भारी मेला लग रहा था। कागदर का बदिया कलाउवा नामक व्यक्ति उस मेले में जा रहा था उसके पास एक बैल था।

वह खैरवाड़ा होकर, मोतली वाली घाटी में होता हुआ पहाड़ी मार्ग से जा रहा था। वह बड़ी तेजी से चला जा रहा था।

वह बदिया कलाउवा आधुनिक फैशन से रहता था और वंशी तथा गोरावना (एक प्रकारका वाद्य यंत्र) बजा रहा था। उस समय रूपां ऊंची मगरी पर बैठी हुई गायें चरा रही थी तथा गीत गा रही थी।

वह बदिया रुक कर के शान्ति के साथ कहता है कि रूपा बाई, तुम्हारी शादी हुई है या नहीं? रूपां कहती है कि आपको इससे क्या मतलब? क्यों रूपां वैवणजी आप किसकी लड़की है? हरूवांत गौत्र वाले मुन्दर के भीलों की पुत्री हूँ। क्यों वैवण (समधिनी)! आपकी शादी कहाँ हुई है?

रूपा उत्तर देती है कि मैं तो अक्षय कुंवारी (अविवाहित) हूँ। बदिया फिर अपना गोरावना बजाने लगाता है और उसकी ध्वनि में गीत गाने लगा।

बदिया बंशी भी बजा रहा था, वह बंशी द्वारा गीत गा गा कर रूपा को आकर्षित कर के बंशी की ही ध्वनि में उसे मेले में आने के लिए उकसाने लगा। तब रूपा ने उत्तर दिया कि गांमड़ी के परमाथों ने मेरे डोरा बाँधा है तथा देवल के मनातों ने बेवड़े में रुपया डाला है। दोनों पालों के बीच झगड़ा हो रहा है इसलिए यदि तुम मुझे ले जाओगे तो दूनी लड़ाई होगी।

किन्तु बदिया इसकी परवाह नहीं करता है और कहता है कि तुम गायों को सूनी छोड़ दो और मेर साथ मेले में चलो। रूपां अपनी गायों को जंगल में छोड़ कर बदिये के साथ हो गई। वेवाई तथा वैंवाण दोनों चल दिये। गुजरात में शामलाजी के मेले में जा रहे हैं। दोनों तेजी से चले जा रहे थे और निश्चिन् स्थान पर पहुँच गये।

शामलाजी के मेले मे पहुँच कर रूपां वहाँ के बाजारों में घूमने लगी। वह अपनी आवश्यक चीजें खरीदने लगी। रज्जा सूत्र, कपड़े, जेवर आदि अनेक वस्तुएं खरीदीं। बदिया बैलों के झुण्ड में पहुँचा। उसने अपना बैल एक चारण को बेच दिया, बैल को पशुओं के समूह में मिला दिया। बदिये ने चारण से रुपये लेलिये और रूपां को साथ लेकर वापस रवाना हो गया। वे तेजी से चले आ रहे थे। बदिया आम रास्ते को छोड़ कर जंगली पगडण्डी के रास्ते से आ रहा था क्योंकि रूपां उसके साथ थी।

रूपां के भाग जाने की खबर देवल और गामड़ी वालों को लगी। गामड़ी के परमाथों को सन्देह हो गया कि देवल के मनात ही रूपां को ले गये हैं। गामड़ी वालों ने एक दूत को देवल भेज दिया। यह दूत तेजी से चलता हुआ देवल पहुँचा। मानु मनात अपने बरामदे में बैठा हुआ था। दूत ने जाकर पूछा कि हे गमेती! आप रूपली को लाये क्या?

मानु ने कहा रूपां को हमतो नहीं लाये हैं और गामड़ी के परमाथ ही लेगये हैं। दूत कहने लगा वे तो रूपां को नहीं लेगये

हैं। इस बात पर दोनों में विवाद खड़ा हो गया और एक दूसरे को बुलवाने के लिए दूत भेजे। मानु ने संदेशा भेज दिया कि 'उवा पाणा' नामक स्थान पर एकत्रित होकर हम सब इसका निर्णय करेंगे।

यथा समय निश्ति स्थान पर सारी गामड़ी और देवल के लोग इकट्ठे हो गये। सब लोग बराबर बैठ गये। आपस में बातचीत करने लगे। देवल के मनातों ने शांति से कहा कि परमाथों! रूपां को वापस दे दो। इस पर गामड़ी के परमाथ भी मनातों से रूपां मांगने लगे। इस प्रकार एक दूसरे के आपस में रूपां को माँगने के कारण जगड़ा पैदा हो गया। मामूली सी मारपीट भी शुरू हो गई। इसलिए गामड़ी में युद्ध का ढोल बजने लगा। इधर देवली वालों ने भी युद्ध की घोषणा करने वाला ढोल बजवा दिया। दोनां ओर युद्ध की तैयारियाँ होने लगी।

'मगुरी का काड़' नामक स्थान पर युद्ध प्रारम्भ हो गया। युद्ध में आधे पुरुष और आधी युवतियाँ भी थीं। हे भाइयों! दिन भर लड़ाई होती रहती थी जिसमें कई योद्धा मारे जाते थे। आमली वाली डांग (पहाड़ की चोटी) पर भी ढोल बजने लगा। इस प्रकार 'मगुरी का काड़' रणस्थल सा बन गया। इतना भयंकर युद्ध हो रहा था कि कई मण शीशा गोलियों के रूप में प्रतिदिन का खर्च होने लगा।

इस युद्ध में इतने लोग भाग ले रहे थे कि खैरवाड़ा के बाजार में शीशा मिलना दुर्लभ हो गया और डूँगरपुर में तीरों की कमी

पड़ गई। भाणे को गोली लग जाने से नीचे गिर पड़ा। वगते को भी गोली लग गई और रतने को तीर लगा। इन लोगों की लाशें कपड़े की झोली में डाल दी गईं।

जब यह समाचार कागदर पहुँचा तो बड़ी खलबल मच गई क्योंकि कागदर की कुछ वधुएँ देवल वालों की लड़कियें थी। मनातों की लड़कियें वहाँ से एकदम चल पड़ीं। वे तेजी से चलती हुई कड़ाल और फिर देवल आ पहुंची। ये लड़कियें मानु भाई के घर पर आईं और मानु से कहने लगीं कि हे मानु काका! आपने व्यर्थ में हाथी जैसे बलवान योद्धाओं को मरवा डाला। बड़े अफ़सोस की बात है कि बिना कारण के इतने लोगों की जानें गँवाई।

हम जीवित रहने योग्य नहीं रही हैं। ये लड़कियें रणस्थल पर पहुँचीं और कहने लगीं कि भाइयों आप लोग व्यर्थ में क्यों मर रहे हैं। रूपा को तो कागदर निवासी बदिया कलाउवा भगा ले गया है और आपस में क्यों लड़ते हैं? इस पर सब योद्धा बिखर गये। इस युद्ध में बिना मतलब के योद्धा मारे गये अतः सब पछताने लगे, दुःखानुभव करने लगे।

———————

गीत परिचयः—

इस गीत में दीवानी अधिकारियों द्वारा जनता से मनमाना लगान वसूल करना, रिश्वत लेना और बेगार में काम कराना आदि अनाचार का वर्णन है। साथ ही तत्कालीन महारणा फतह सिंहजी की न्याय परायणता पर भी प्रकाश पड़ता है कि उन्होंने जनता की माँग पर ध्यान देकर कामदार को कठोर कारावास दिया।

गीत

राईने केवं बोले बावजी कमन्दार केदँ परीयू।
मादरी वाले रावले बावजी ,,
भोगेन वान्दे परीयू बावजी ,,
सानो भोगे लीये ,,
राते भोग लीये ,,
गेहूं के रुवानो भोगे ,,
मानवीनो मेलो ,,
राईने केवं बाले बावजी ,,
दुनी हवान लेवे ,,
दुनु लाडु लेवे ,,
मादरी वाले रावले ,,
हीनो वगरो लागो ,,
कुन्ता नो हे वगरो ,,
मानवी बदली गईया ,,

कामदार कुटाई गईयू कामन्दार केदँ परीयू।
हीने कारण कुटीयू ,,
दूना कुंता दुनू लाटु करे ,,
कूने राजा वाजे ,,
राजा फते हींग जी ,,
वीरयाने कागजिया ,,
डाके धामा दोरे ,,
पई वाल हेरे ,,
उन्दरी वालहेरे ,,
नाइ वालो हेरो ,,
पीछोलानी पाले ,,
राई आगना माथे ,,
भरीया ने दरीखाना ,,
वीरीया कागज आलो ,,
राजा कागज खोले ,,
टपर टपर वोले ,,

शब्दार्थः—

कामन्दर=कामदार, दीवानी-विभाग का अधिकारी। भोगे=अनाज के रूप में लगान लेना। चनो=गुप्त रूप से (धूंस में)। हवान=एक प्रकार का कर। वगरो=झगड़ा। मानु=माणु लकड़ी का बना हुआ एक बर्तन जिसमें चार सेर अनाज भर जाता है। कूटोयुं=मारपीट की। बीरया=बन्द (लिफाफे में)। राइ आंगना=महलों में एक स्थान। कैद=कारावास।

भावार्थः—

धैर्य और शान्ति के साथ कहते हैं कि कामदार (दीवानी विभाग का अधिकारी) को जेल हो गई है। मादड़ी के रावले में उसको बन्दी बनाया गया। कामदार को जेल हो गई है अतः भोग (नाज के रूप में लगान) झमेले में पड़ गया।

यह कामदार गुप्त रूप से अधिक लगान वसूल करता है। यह रात्रि को भी लगान लेता है। गेहूं कड़मे का भोग लेता है। कामदार की गिरफ्तारी के समय वहाँ इतने लोग इकट्ठे होगये कि मानो मेला लग रहा है। सब शान्ति के साथ कहते हैं कि दूना कर वसूल करने के कारण कामदार को जेल जाना पड़ रहा है। यह लाटा भी डबल लेता था।

यह किस बात का झगड़ा हुआ कि कामदार को कैद हो गई ? लगान के झगड़े के कारण ही कामदार को जेल जाना पड़ा। सब लोग बदल गये और कामदार के साथ मार पीट भी की। किस लिये कामदार को पीटा ? डबल लगान वसूल करने के कारण कामदार को मार खानी पड़ी।

कौन राजा कहलाता है ? महाराणा फतहसिंहजी राजा हैं। बन्द लिफाफे में पत्र भेजा गया। डाकिया दौड़ता हुआ जा रहा है। डाकिया पई, तथा नाई के पास वाले मार्ग से होता पीछोले की पाल पर पहुँचा। राजमहलों में चौक में जाकर खड़ा रहा।

सभा मंडप भरा हुआ था। डाकिये ने पत्र लेजा कर राजा को दिया। राजा उस पत्र को पढ़ने लगा।

पत्र से राजा को मालूम हुआ कि वहाँ कामदार ने डबल लगान वसूल कर लिया और डबल कर ले रहा है। यह पढ कर राजा को क्रोध आया, उसने तुरंत कामदार को चालान करने की आज्ञा दे दी। डाकिया वापस तेजी के साथ रवाना होकर मादड़ी पहुँचा।

मादड़ी के रावले में कामदार को गिरफ्तार कर लिया गया। हाथ पैरों में हथकड़ी व बेड़ियां डाल दी गईं। इस कैदी को उदयपुर पहुँचा दिया गया। इसको नाई के पास वाले मार्ग से होकर वहाँ पहुँचाया गया।

कामदार को उदयपुर की पुरानी जेल में भेज दिया गया। इस प्रकार महाराणा फतहसिंहजी ने भीलों की पुकार सुन कर कामदार को न्यायोचित दंड दिया।

गीत परिचय

इस गीत में भील जाती के एक साहसी परिवार का वर्णन किया गया है कि किस प्रकार उस पिरवार के सदस्यों ने दुर्भिक्ष पड़ने पर भी अपने हाथों की महनत के सहारे नाज उत्पन्न करके अपने आप को जीविन रक्खा और समाज के सम्मुख

एक आदर्श प्रस्तुत किया। प्रायः जब कभी दुष्काल पड़ता है तो भीलों का एक मात्र सहारा चोरी-डकेती करना अथवा भूख-प्यास सहन करते हुए मर जाना ही रहता है, किन्तु इसके प्रतिकूल इस परिवार ने परिश्रम करके नाज पकाया!

गीत

रे अनदुरी राई ने केवँ बोले तुवटे हँई रोऐरे ।
हई रोऐ हँईरे ऐ ,,
देश में पड़ी ओ काले अनदुरी ,,
रे अनदुरी मगरें खूटों सारो ,,
नीर टुटं नंवानो अनदुरी ,,
तखमी डोलवे लागी ,,
डोलि डोलि फरे ,,
हासु मरीने खोले वलई ,,
हासु धन्न खुटं कोटरे ,,
करवल खूंटा कोदरा ,,
हांसु रांडी डगवे लागी ,,
चोरां मरवे लाग ,,
हासु पड़ीयो कोड़ी काल ,,
हासु वाजिया हुकल वाएरा ,,
रे अनदुरी राईने केवँ बोले ,,
रे बाप मारा हाँबल मारी वातं ,,
रे बापा मारा कुआ बावड़ी खोदो ,,

रे बापा मारा मानवी मरवे लागे हँई रोऐरे ।
रे बापा मारा गीती पावड़ा लावो ,,
रे बापा मारा पीली ने परबाते ,,
रे बापा मारा मजूरे तेड़ावो ,,
रे बापा मारा कूड़े काम लगाड़ो ,,
रे बापा मारे रोकड़ी आलो पावली ,,
रे अनदुरी कुऐ लईनी पड़ो ,,
रे अनदुरी मजूरे उतारो ,,
रे बापा मारा गीती पावड़ा आलो ,,
रे अनदुरी मजूरे उतारीयाँ ,,
हासु रवोदो मचका मचकी ,,
रे अनदुरी आलो गारो आवे ,,
हासु फोरो फोरो आलो ,,
हासु फोरो है जो आवे तुवटे ,,
रे बापा मारा पानी रें नी पूजो ,,
रे अनदुरी पेलां पानी पूजो ,,
रे अनदुरी श्री न भगवाने ,,
रे बलतं चन्दा सूर्य ,,
रे बलत नौवलाख देव ,,
रे अनदुरी बलतं आप पीहँ ,,
रे बापा मारा कुओ नवान थाइये ,,
रे बापा मारा पावेटी मडरावो ,,

रे बापा मारा कूरी कांगणी वावो ,,
रे बापा मारा खाईने जीवतं रेहै ,,
रे अनदुरी पावंही गरावे ,,
रे अनदुरी पावही माल नाके ,,
रे अनदुरी पावटी गेर बांदे ,,
रे अनदुरी पावेटी गुमावे ,,
रे बापा मारा कुलें पनीवालो ,,
रे बापा मारा खेत में पानी वालो ,,
रे बापा मारा कदाली कदाली ,,
रे बापा मारा अपने कुरी वावं ,,
रे अनदुरी कियां डियां पानी वालो ,,
रे बापा मारा कुरी वावी दियो ,,
रे अनदुरी कुरी वावी दीदी ,,
रे अनदुरी कुरी उगी गई ,,
रे अनदुरी मोट मोटेरी थाही ,,
रे अनदुरी कुरी निगली गई ,,
रे अनदुरी कुरी पाकी गई ,,
रे बाया मारा कुऐ हगार कीदो ,,
रे अनदुरी काले हगाल आवे ,,
रे अनदुरी गीत ते जातु मेलो ,,

शब्दार्थ :—

हँई=क्यों । लखमी=लक्ष्मी, लक्ष्मी, पशुधन । चौरां=सोरा, बाल बच्चे ।

गीती पावरा=गेंती फावड़ा। रोकगी=रोकड़ी। लइनी पड़ो=कुए के अन्दर। हैजो=गिली मिट्टी आने के पश्चरत् प्रथम बार मामूली सा पानी दिखाई पड़ता है। पुजो=पूज करो। नोवला देवां=नव लाख देवी देवता। वलतं=बाद में। नवान=पानी से पूरा भर जाना। गेर=घड़गे। निगली=ऊबी निकल आना

हे अन्दुरी! तूं वहाँ क्यों रोती है। समस्त देश में निरा काल पड़ गया है। हे अन्दुरी! जगंल में घास समाप्त हो गई और कुओं में पानी खतम हो गया है। मवेशी डगमगाने लगे हैं और मरना प्रारंभ हो गया है। कोठियों में नाज भी नहीं रहा। लकड़ी की कोठियों में कोदरा नामक जंगली अनाज भी समाप्त हो चुका है अतः बाल बच्चे मर जावेंगे।

विधवा औरतें घबरा ने लगीं। सूखी हवा चलने लगी। अन्दुरी शान्ति के साथ कहती है कि हे पिताजी! आप कुएँ तथा बावड़िये खोदिये नहीं तो सब लोग मर जावेंगे। आप गेती-फावड़े आदि औजार मँगाईये। हे पिताजी! मजदूर बुलवाइये और कुएँ का कार्य शुरू करवाइये। मजदूरों को चार आना प्रति दिन दे दीजिये।

अन्दुरी ने प्रातः काल के शुभ समय में कार्य प्रारंभ कर दिया। मजदुरों को कुएँ के अन्दर भेज दिये और खोदना शुरू करवा दिया। थोड़ी ही देर में गीली मिट्टी आने लगी। कुछ देर बाद पहली बार पानी भी दिखाई दिया।

अन्दुरी अपने पिता से कहने लगी इस जल की विधिवत् पूजा करनी चाहिये। पहले चाँद सूरज आदि ६ लाख देवताओं की पूजा करो फिर अपन इस पानी को पीयेंगे। जब कुएँ में पूरा पानी आगया तब अन्दुरी ने पिता से कहा कि रहँट मँडवा दीजिये। कुरी तथा कांगणी बोओ, जो जल्दी पक कर तैयार हो जाती है। इसे खाकर जीवित रहेंगे।

अन्दुरी रहँट तैयार करवाती है। उस पर माल डालती है और गरट बांधती है। अन्दुरी रहँट चलाती है जिससे नालियों में पानी आ जाता है अन्दुरी कहती है, पिताजी! खेत में पानी ले जाइये बाद में कूरी बो दीजिये। सब क्यारियों में पानी चला जाता है फिर कूरी बो दी जाती है।

कुछ दिनों में कूरी ऊग जाती है और पौधे बड़े २ हो जाते हैं। थोड़े दिनों बाद पौधों पर ऊंवियाँ निकल आती हैं और कूरी पक कर तैयार हो जाती है। अन्दुरी पीताजो से कहती है कि हे पिता! कुएँ से अपने यहाँ काल का सगाल हो गया है।

गीत परिचय:—

इस ऐतिहासिक गीत में भीलों के प्रसिद्ध वीर योद्धा हमजी की मृत्यु घटना का वर्णन है। गीत द्वारा हामजी की वीरता का ही नहीं अपितु उसके आतंक का भी पता चलता है जो तत्कालीन शासकों की दुर्बलता का परिचायक है कि वे ऐसे लोगों को परास्त

करने में समर्थ न हो सके। साथ ही भीलों के सामाजिक आयोजन तथा रीति-रिवाज पर भी प्रकाश पड़ता है। इसके अतिरिक्त सहयोग से कार्य करने की प्रवृत्ति, प्रतिशोध की प्रबल भावना एवं क्रूर स्वभाव का परिचय मिलता है।

गीत

राइने केवँ बोले हामजी भोराईया रे।
बारपाड़ा भोराई ,,
हामजी ने बोली हांपत बोली ,,
परवि मँडरावे ,,
कोटरिया चनरावे ,,
घोडानी पायेगे बन्दरावे ,,
कुन कारीगर वाजे ,,
रटोरे हुतारी रे ,,
वेते तेड़ी लावो ,,
पीली ने परबाते ,,
हामजी राइने बोले ,,
बहीयेर रोटा हारणा करो ,,
हुतार तेवड़ा जावू ,,
बहीयेर राईने बोले ,,
मारे सुडलो पेखे आवनु ,,
आदमी ने बदीयो रे ,,
राठोड़े जावे लागँ ,,

हामजी घोड़ी बेहे	हामजी भोराइया रे ।
पीले ने परबाते	,,
हकनीया वसियारे	,,
डावु कागर बोले	,,
जीमनी रूपर रे	,,
खोटा हकन थाये	,,
बहीयेर वरजा वखजे	,,
आपने हुतार नहीं तेड़वो	,,
पायेग नहीं मडरवां	,,
मारे मुडलो नहीं पेरवो	,,
हामजी वरजीयुं नहीं माने	,,
पागड़े पगे दीये	,,
चटकी घोड़ी चढे	,,
घोडीयाँ ताजनो राले	,,
जई धामा दोड़े	,,
आदमी ने बहीयो रे	,,
राठोड़े जाई लागुं	,,
हुतारँ ने छे घेरे	,,
हुतार बुलावे	,,
हीलाहदरा राले	,,
हुतार धामी पोलां आवे	,,
बाबा कैयो कामा ने भेके	,,

मारे कालीयानी पखी मडारवी हामजी भोराइया रे ।
घोरानी पयेग बन्दारु ,,
काले वेलो आवजे ,,
हामजी जाये लवारी हाटाँ ,,
मारे बहीयोर सुड़लो पेरे ,,
लवारी सुड़लो पेरावे ,,
काटा गेहुँरा हुकाये ,,
हामजी धणीयानी ,,
हाथ माये गेऊ जोवे ,,
लुवारन जोई रेई ,,
अवरा सवरा बोले ,,
गमेतीनी बहीयेर गेहूँड़ा जोये ,,
हामजी ने घेर भोग भराये ,,
मगरा नो भोग ,,
वागड़नी हुंकड़ी ,,
तारे घेरे भाराय ,,
मारे घेर गेहूड़ा हुजोवे ,,
हामजी हबली रेइयों ,,
हामजी माटु लागु ,,
विहुलाने आवे ,,
आवो धामा दोड़े ,,
भोराई आवी लागो ,,

आथमीयानो समीयो ने हामजी भोराइया रे ।
वहीयेरे पूछना पूछे ,,
लधारने घरे गेहुडा है ई जोती ,,
वागड़ नी हुकरी ,
मेवाड़ मगरा नो भोग ,,
मारे धेर भराये ,,
व्यां हजोती ,,
तेवा गेंहुड़ा ईयाँ नही रे ,,
हामजी धागड़ो करे ,,
धरकी नीची पाड़े ,,
हमी पाड़ी ने कांगरी मेले ,,
हाथो मांते कागरी ,,
कांगड़ी माते पाईया ,,
माते ढोलालियो ढाले ,,
वहीयेर सीवली करे ,,
पड़ी पड़ी रुवे ,,
आकी रात राखी ,,
परबाते काड़ी ,,
अदमुई थाई गई ,,
रीश नी जावे ,,
ड़ामोर नी सोरी ,,
ढ़कका वाड़े पीयेर ,,

जाघे धामां दोड़े	हामजी भोराइया रे ।
गई ठेठा ठेठ	,,
भाईयं अर जाऊँ थाये	,,
तेड़वे आवने देजे	,,
भारी आणां करावुं	,,
हुतारी तेड़िय	,,
मजुरे तेड़िय	,,
कोटेरी चणावे	,,
हामजी राईने बोले	,,
विलकने कोटरे डांडा वाडिय	,,
परवो हारु डांडालावो	,,
पायगँ हारु डांड़ा लावा	,,
पालं मांये तेडु करो	,,
पीली ने परबाते	,,
हण्डे वेला आवजो	,,
कोटरे हण्डो जाये	,,
पीली ने परबाते	,,
घोडीलु पलाणे	,,
पण्ड वरु बुलावो	,,
घोड़ो हामजी बेठो	,,
हकनीया विशयारो	,,
खोटो राजा बोले	,,

हामजी जावा लागो	हामजी भोराइया रे ।
काळो आड़ो उतरे	,,
नवरोली बहियेर वरज़ा	,,
नवरोली ना वरजीया नहीं माने	,,
नवरोली हण्डो जातो रेइयो	,,
नवरोली हेवाँ हुं थावानु	,,
नवरोली नू भूखीयूँ नही अईयो	,,
हन्डा वला भाई मई टुंके हे	,,
तीकाराले ताजना	,,
घोड़ीलु धामा दोड़े	,,
हण्डो आवी पुगो	,,
हण्डो धामा दोड़े	,,
कोटरे आवी लागो	,,
रात वाहाँ रहो	,,
गलती माजन राते	,,
वेर कुकर बोले	,,
भरकि होरे नाके	,,
हाने ड़ांड़ा जोयो	,,
हाको हाने होको	,,
हामजी राईने बोले	,,
तमें हाकता थाजो	,,
मू एवँ पासो आवु	,,

री हाई ने बहियेर	हामजी भोराइया रे ।
वधीयेर तेड़ी लावुं	,,
हन्ड़ो वरजा वरजे	,,
वली नँ तेडवा आवजो	,,
भाईयो लेई आवुं	,,
हाण्डो जातो रेइयो	,,
हामजी ढ़नका वारे जाई लागु	,,
हाला ने गेर पामणो	,,
हाला घोड़ी ढाबे	,,
ढोलीरु ढाबे	,,
हूको भांग करे	,,
हामजी राई ने बोले	,,
आनो वेलो रो	,,
मारे घेर हाण्डो	,,
आलामेलूं कुनक रे	,,
फूले हरो लावे	,,
हामजी मनुहार करे	,,
हामजी नँटी गईयो	,,
गनादाड़ा पामना	,,
हरो पीवो पड़ हे	,,
फूले हरो माथे रे	,,
हामजी हरो पीये	,,

हरो पीयेतँ वात सोले	हामजी भोराइया रे ।
मारे पल्लातरु हे कूतरो	,,
कुतरो भूखो मरे	,,
मारे पटेली है घोडी २	,,
घोड़ी भूखे मरे	,,
वलती मनुवेर करे	,,
हाले मारे मई भूखे मारो	,,
मारे कतरो भुखे हके मारो	,,
फोरो हामजी माते देगो	,,
हामजी चाकतो थाइयो	,,
बनदेवी आणु करावो	,,
विहुलो हिंडीयो	,,
फोरो वेगरो लागो	,,
डामोर राई ने बोले	,,
मारे बेनई दुःख दीये	,,
भुई माते हुआरे	,,
हाथ पोग पोला करावे	,,
हाथ पोंगां कांगरी मेले	,,
कांगरियँ माते ढोलियो ढ़ाले	,,
ढोलिया माते तु हुवे	,,
हामजी राईने बोले	,,
लोकने वाणे गेहुँडा जोवे	,,

मारे हुँ रेईयानो जोगे	हामजी भोराईया रे ।
रात वाहो रे रे	,,
आणुलावलावे	,,
हामजी घोड़ी वेहे	,,
राम रामे करे	,,
हामजी माते दगो थाये	,,
हामजी जावे लागो	,,
बनवी वहे राम रामे ने केरु	,,
राम रामें ने जेलजे	,,
वाहें हामजी जोये	,,
तोड़ादार बन्दूके	,,
डामोर बन्दूके सोरे	,,
धर सुटी धर लागो	,,
हामजी साथी गोली लागी	,,
हथी करवल लाजे	,,
घोडो पासी फेरवे	,,
रूपतली तलवारे	,,
डामोरंना धर के माता लीये	,,
हामजी जरमर जोला खाये	,,
हामजी बहियोरे	,,
घोड़ी हाई लीदी	,,
ढ़ाबी खोल उतारे	,,

खोलं मातं लीये	हामजी भोराईया रे ।
ढल ढल रोवे लागी	,,
भाइयं हराप बोले	,,
भाईये मारे हाथी रो वगरियें	,,
अतरा दारा ठकरानी केता	,,
अेवा मु घेर घेर नी शकरानी	,,
हामजी नो हे कुतरो	,,
जाये धाम दोड़े	,,
भोराई जाई लागो	,,
आमली वारे सोरे कुतरो जाये	,,
काको डूंगो सोरे बेठो	,,
कुतरो खोले जाईने रोवे लागो	,,
डुंगा खबर पड़ी रोवे लागो	,,
हामजी मारी दडियो	,,
काको डुंगो साती माता कूटे	,,
पाल में खबर लागी	,,
हामजी माराई गईयो	,,
वारी ढोल देवानो	,,
गांम में राण्डी भीन्डी रोये	,,
मई कुठो पालहूं	,,
आमली वारेन सोरे	,,
ढालने तलवारँ	,,

आला वेर वालो हामजी भोरईया रे ।
वेर वारीने दातणं करवा ,,
माया लावीने चोरे टेरो ,,
भोमट भोराई चरे ,,
बीहीरी आदमी हारा ,,
जई धामा दोड़े ,,
ढनका वाड़े जाई लागु ,,
हामजी नी लोत ठावी कीदी ,,
लोत जोली गालो ,,
भोराई पुगती करो ,,
हामजी नी बहीयरे लोत लईने जाये ,,
बलतु धाडु सड़े ,,
थई थई करवल लाजे ,,
ढनका वारु बाल्यो ,,
दूना वेरं वालो ,,
वेरियानां मातां वाड़ो ,,
खूंटो खूंटो वालीयां ,,
थाफरे थाफरे फोरियँ ,,
केरे केरु लाइया ,,
घेर घेर राई वावी ,,
बमणां माताँ लाई ,,
वेर वारी ने पासा आवे ,,

धाडु भोराई आवो लागु	हामजी भोराइया ।
सोरे माता टेरो	,,
वलते हामजी नी लोत बालो	,,
हामजी नी बेहीयेर हते बली	,,
उगीयां त्यं वांद्या	,,
गीत जातो मेलो	,,

शब्दार्थः—

बोली=बहुत । हांपत=पशुधन, मवेशी । पायेगां=घोड़े बाँधने का स्थान । सुरलो=चूड़ियाँ । चटकि=उछलकर । ताजनो= चाबुक । राले=मारना । माटू-लागू =बूरा लगा । हई=क्यों । वियां=वहाँ । हमी=चित करना । चीवली=चल्लाहट । अदमुई=घायल । पन्डवरलु=घोड़े का सइस । कालो=काला सर्प । नवगोली= नवविवाहित । भुखियु=स्त्री के मोह में फंसा हुआ । टुंके= टोंकना । ठावे= पकड़ना । हुको मांग=बीड़ी तम्बाखू देकर स्वागत करना । फूल हरो=शुद्ध शराब पलातरू=पाला हुआ । चाखतो=नशा चढ़ गया । वगरो=झगड़ा । बनई= बहन को । भूई माते=भूमि पर । बननी=बहनोई । डामोर=डामर गोत्र भील (हामजी का साला) । वाहे=पीछे । जरमर=डोलना । टाबी खोल=खोले में पकड़ना । हराप=श्राप । हाथीरो=हाथी के समान बलवान । ठकरानी=मुखिया की पत्नी । शकरानी=दासी । आलावेर=ताना दुश्मनि का बदला चुकाना । माता= सर । लोत=लाश । बमणा=कई गुना । हते बली=सती होना ।

भावार्थः—

भोराई गाँव के हामजी के पास इतने मवेशी थे कि उसको बांधने के लिए उसे नया मकान बनाने की आवश्यकता अनुभव

हुई । उसने भैंसों के लिए परत्री और घोड़ों के लिए पायेगा बनवाने का निश्चय किया । अपनी स्त्री से कहा कि 'भोजन जल्दी बनाना क्योंकि मुझे सुथार लेने के लिये रठोडे (गाँव) में जाना है'' । स्त्री ने कहा कि वहाँ तो मुझे भी चलना है क्योंकि मुझे चूडियां पहननी हैं । तब दोनों प्रातःकाल के सुहावने समय में चल पड़े । रास्ते में कौआ बांई तरफ बोला जिससे उनको अपशुकन हुए इसलिए हामजी की स्त्री ने उस समय जाने से विरोध किया किन्तु हामजी नहींमाना और दोनों चलते रहे । हामजी घोड़ी पर सवार था उसने अपने घोड़े का चाबुक मार कर तेज किया ।

हामजी पहले रटोडे में सुथार के यहाँ गया । सुथार से कहा कि मेरे घोड़े का पायग तथा भैंसों की परवी बनानी है और उसे दूसरे दिन सवेरे काम पर आजाने की सूचना देकर स्त्री को लेकर लौहार के यहां पहुँचा । लोहार ने उसकी आज्ञानुसार चूडिया पहना दीं । उस समय लोहार के घर कुछ कट्ठे गेहूँ सूख रहे थे जिन्हें हामजी की पत्नी घोर से देख रही थी इस पर लौहार की स्त्री ने व्यंगात्मक स्वर में उससे कहा कि ''बहन तेरे यहाँ सारे गाँव में जो बढ़िया चीजहोती है वह आजाती है फिर तूं हमारे गरीबों के गेहूं क्यों देखती है'' ? हामजी को यह बहुत बुरा लगा वह तेजी के साथ घर आया । संध्या के समय में उसने अपनी स्त्री को बुला कर पूछा कि ''तूं लौहार के घर गेहूँ क्यों देखती थी ।'' अपने यहाँ वागड़ और मेवाड़ का भोग (लगान) आता है अर्थात् मेरे

गौरव को घटाने की बात तूंने क्यों की। इस प्रकार उसका गुस्ता भड़क उठा और उसकी स्त्री को चित सुला कर उसकी दोनों हथेलियों पर कंकड़ रखे, और उन पर अपने खाट के दोनों पाये रख कर, खाट पर सो गया। वह चिल्लाती रही परन्तु वह रात भर खाट पर सोया रहा।

सबेरे जब उठा तो स्त्री घायल सी हो गई थी। उसकी स्त्री का पितृगृह ढनकावाड़े गाँव में था, उसकी स्त्री मौका देख कर वहीं भाग गई। वहाँ अपने भाई को उसने सारी बात कह सुनाई। भाई ने इसका बदला लेने का मन ही मन निश्चय कर लिया।

मकान के लिए डांडो की आवश्यकता पड़ी। वीलक के पास कोटड़े में डांडे काटे हुए थे। डांडों को लाने के लिए 'हाएडा' तैयार (सब लोगों द्वारा मिलकर काम करना) करना पड़ेगा इसलिए गाँव वालों को निमन्त्रण दे दो कि कल प्रातः काल जल्दी 'हांडे' आ जावें। यह (हांडा) कोटड़े जावेगा।

दूसरे दित प्रातः काल ही हामजी ने अपने सईस को बुलाकर घोड़े पर जीन कसने को कहा। हामजी घोड़े पर सवार हो गया। वह शकुन विचारने लगा, राजा नामक पक्षी जिसके बोलने से शकुन मालूम किये जाते हैं, खराब बोल रहा था। परन्तु फिर भी हामजी आगे बढ़ गया। कुछ ही आगे बढ़ने पर एक काला नाग हामजी का रास्ता काट गया अर्थात् उसके शकुन बिलकुल खराब हो गये।

उसकी नवविवाहिता पत्नी उसके जाने से रोकने लगी परन्तु वह नहीं माना और कहने लगा कि 'हांडा' वाले सब आगे चले गये हैं-अतः अब अगर मैं नहीं जाऊँगा तो वे मुझे टोकेंगे और कहेंगे कि नवविवाहिता पत्नी के प्रेम में फँसा होने के कारण वह नहीं आया। हामजी ने अपनी घोड़ी को जोर से चाबूक मारा फल-स्वरूप घोड़ी तेज दौड़ने लगी और वह 'हांडे' वालों के पास जा पहुँचा। 'हांडा' भी शीघ्रता से चलने लगा और कोटड़े जा पहुँचा। उस रात को 'हांडा' वाले वहीं सो गये।

अर्ध रात्रि के समय मुर्गा बोलता है और हामजी चमक कर अपने ओड़ने की चद्दर फेंक देता है। वह 'हांडे' वालों से कहता है कि डांडे बैलों की 'हान' से फांद दो और आप रवाना हो जाओ। मैं अभी वापस आता हूं। मेरी स्त्री नाराज होकर चली गई, मैं उसे ले आता हूँ। 'हान्डे' वाले मना करते हैं कि वापस आकर जाना, किन्तु हामजी नहीं मानता है और कहता है कि भाइयों मैं अभी ले आता हूँ।

इस प्रकार हांडा रवाना हो गया। हामजी अपने साले के घर ढनकावाड़ा जा पहुँचा। साले ने उसका घोड़ा संभाल लिया और हुक्का तथा तम्बाखू देकर उसका स्वागत किया। हामजी थोड़ी देर बाद शान्ति के साथ कहता है कि 'आणा' (गौना) जल्दी करो क्यों कि मेरे घर पर 'हांडा' है उसे सामान इत्यादि कौन देवेगा ?

हामजी का साला बढ़िया (फूल) शराब लाकर हामजी को पीने देता है हामजी इन्कार कर देता है । साला कहता है कि आप बहुत दिनों से महमान पधारे हैं अतः आपको शराब पीना ही पड़ेगा । हामजी ने फूल शराब पी लिया और बातें करने लगे । हामजी कहने लगा कि पालतू कुत्ता है वह भूखा मर रहा है, मेरी घोड़ी भी भूखी है । हे सालाजी ! आप मुझे भले ही भूखा रहने दो परन्तु मेरे कुत्ते को भूखा मत रक्खो ।

हामजी पर साला नाराज था अतः जब हामजी को खूब नशा चढ गया तो कहने लगा कि मैं बहनोईजी को 'आणा' कराता हूँ । उसका साला कहने लगा कि तुम मेरी बहन को कितनी तकलीफ़ देते हो ? उसे जमीन पर सुला कर, हथेलियों में कंकड़ रखकर ऊपर खाट के पाये रखकर सोते हो । प्रत्युत्तर में हामजी ने कहा कि तुम्हारी बहन अन्य लोगों के यहाँ गेहूँ देखती है यह मेरा कितना अपमान है ? वह उस रात्रि को वहीं विश्राम करता है ।

गौना लेकर हामजी घोड़ी पर सवार होता है । साला उससे 'राम राम' करता है । डामोर के दिल में बेइमानी थी अतः हामजी को थोड़ा आगे बढ़ने दिया और फिर कहा "मैं 'राम राम' करता हूँ उसे स्वीकार करना" । यह सुनकर हामजी ने पीछे देखा । डामोर के पास तोड़ादार बन्दूक थी, उसने गोली दाग दी । गोली छूटते ही हामजी के सीने में जा लगी ।

हामजी ने अपनी इष्ट देवी कखल माता का शरण लिया और घोड़ी को पीछे घुमाई तथा अपनी 'रूपतली' तलवार से डामोर का सिर काट डाला। हामजी डगमगाने लगा। हामजी की स्त्री ने दौड़कर घोड़ी संभाली और हामजी का सिर अपनी गोदी में रख कर रोने लगी। अपने भाई को शाप देने लगी "हे भाई! तेने मेरे हाथी जैसे बलवंान पति को नष्ट कर दिया, में इतने दिन ठकुरानी कहलाती थी किन्तु आज से तूंने मुझे घर २ की दासी बनादी।

हामजी का पालतू कुत्ता दौड़ता हुआ भौराई जा पहुँचा। आमली वाले चौरे (पंचायती-स्थान) पर उसका काका डूंगा बैठा हुआ था। कुत्ता उसके पास जाकर रोने लगा। डूंगा कुत्ते के रोने से समझ गया कि हामजी को किसी ने मार दिया है। वह छाती और सिर पीट २ कर रोने लगा। सारी पाल (क्षैत्र) में पता लग गया कि हामजी की हत्या हो गई। गाँव की विधवा स्त्रियें रोने लगीं कि हमें कौन पालेगा। वारी ढोल बजने लगा। आमली वाले चौरे पर सब लोग इकट्ठे होगये। सब ढाल तलवार लेकर आये थे। सबने निश्चय किया कि इसका बदला अभी चुकाना चाहिये।

सब लोगों ने मिल कर प्रण किया कि जब तक हामजी की मृत्यु का प्रतिशोध नहीं ले लेंगे तब तक दातुन नहीं करेंगे अर्थात् मुंह में कुछ नहीं डालेंगे। शत्रुओं के सिर काट कर, चौरे पर लटका देंगे। सारी भौराई के लोग आक्रमण करने जाते हैं।

उसमें स्त्रियें भी शामिल थीं। तेजी से चलते हुए ये ढनका-वाड़ा जा पहुँचे।

ढनकावाड़ा पहुंच कर इन्होंने हामजी का मृत शरीर तलाश किया और उसे कपड़े की झोली में डाल कर हामजी की पत्नी के साथ भोराई पहुंचाया। इसके बाद 'धाड़े' ने आक्रमण कर दिया। कखल माता की जयकार होने लगी। ढनकावाड़ा जलादो। शत्रुओं के सिर काटकर दुगूना बदला ले लो। ढनकावाड़े ग्राम की प्रत्येक जीच् जलादी गई और पशुओं के बछड़े तक ले आये। घर घर में त्राहि त्राहि मचा दी।

इस प्रकार दूने सिर लिये शत्रुओं से बदला लेकर वापस आये। 'धाड़ा' भोराई आ पहुंचा। गाँव के चौरे पर सिर टांग दिये। इसके पश्चात् हामजी की दाह-क्रिया हुई। हामजी की पत्नी उसके साथ सती हो गई।

गीत परिचय :—

इस गीत में भीलों की आर्थिक दशा खराब होने के कारण का वर्णन किया गया है। भीलों के समाज में रिवाज है कि किसी व्यक्ति की मृत्यु होजाने पर जाति के लोगों को मृत्यु भोज करायें, चाहे उसकी आर्थिक दशा खराब हो। प्रायः इसी कारण अधि-

कांश भील महाजनों के ऋणी रहते हैं क्योंकि ऐसे समय में उनको सामान लेने महाजनों के यहाँ जाना पड़ता है जिससे वे आजीवन उस कर्ज से नहीं निकल पाते हैं। इसी तरह की एक घटना का वर्णन इस गीत में भी किया गया है। मनजी के पिता का अचानक देहान्त हो जाता है, उसी समय दुर्भाग्य से उसका कुआं भी गिर पड़ता है। जाति वालों ने उसको राय दी कि उसे अपने पिता का मृत्यु भोज पहले करना चाहिये और पीछे कुएँ की मरम्मत, किन्तु उसने अपनी समझ से काम लिया और जाति वालों के अनुचित दबाव की परवाह नहीं करके पहले अपने कुएँ को ठीक करवाया जिससे उसके खेत में फसल अच्छी हो गई। फल स्वरूप उसके घर में काफी अनाज हो गया जिससे उसने पिता का मृत्यु भोज भी कर दिया और किसी से कर्ज भी उसे नहीं लेना पड़ा।

गीत

हासु राईने केवां बोले मनजी नाढ़ माये रे।
समीयू रे परीयू ने कुओं धरीयो ,,
समीयूरे परीयूने बापु मरीयू ,,
काल नू परनार ने बापनु मरनार ,,
बापुरे मुओने कुड़ो धरीयो ,,
मनजी राईने केवां बोले ,,
नीयाते करु के कुओ खोदूँ ,,

का मनजी भाई हाचंल मरी वातां मनजी नाड़ माये रे।
नीयाते करीते सोरां मरहें ,,
सोरँ रे मरहँ हांपत मरहँ ,,
नीयाते सोडो ने कुओ खोदो ,,
कुओ खोद होते सोराँ जीवहँ ,,
सोरँरे जीवहँ ते नाम रेहें ,,
समीथूं रे वलहें ते नीयात करहूँ ,,
रे मनजी भाई कुओ खोदवे लागो ,,
,, मजुरे तेड़ावे ,,
,, कुए कामे लगाड़े ,,
,, बाप नु नाम राके ,,
,, कुओ नावन कीदो ,,
,, कुए रठ मँड़ेरे ,,
,, कांगणी सीणो करे रे ,,
,, कांगणी सीणो पकोरे ,,
,, सोरां जीवतां राकियाँ रे ,,
,, खाड़ा हँ तीयां गेरहै गाड़ा ,,
,, माल है तीने गेर काल नहीं ,,
गीत जातु मेलो ,,

शाब्दार्थ :—

समियु=फसल, वर्ष। धरीयो=गिर पड़ना। मुओने=मर गया। नीयात=मृत्यु भोज, करीयावर। हापेत=मवेशी। सोरो=छोड़ो, मत करो। समीयुरे

वलहे=फसल अच्छी पक जाने पर। मजुरे=मजदूर। राके=रखना। नवान=कुएँ में पूरा पानी आ जाना। सीणो=कांगणी से कुछ बड़े दाने का नाज। खाडां=कुएं। गेर हे गाड़ां=(कहावत) उस घर में धन धान्य भरपूर होता है। माल है तीने गेर काल नहीं=(यह भी कहावत है) जिसके यहाँ कुएँ के रहंट की माल फिरती हो अर्थात् कुआ चालू हो उसके घर में काल नहीं पड़ सकता, क्योंकि अनावृष्टि होने पर भी वह अपनी फसल पका सकता है।

गीतार्थ :—

इटावरी नाम ग्राम में मनजी नामक एक भील रहता था। एक वर्ष उस गाँव में बिलकुल वर्षा नहीं हुई अतः दुर्भिक्ष पड़ गया दुर्भाग्य से उसी वर्ष उसका कुआ भी ढह गया और साथ ही उसके पिता का भी देहान्त होगया उस समय उसने निश्चय किया कि मैं पहले अपने कुएँ की मरम्मत करालूं और फसल पक जाने पर पिता का मृत्यु भोज भी कर दूंगा; मनजी ने अपने कुएँ की मरम्मत करवाना प्रारंभ कर दिया। क्योंकि उसने सोच लिया था कि यदि कुआ तैयार हो जायगा तो मेरे बाल बच्चे और मवेशी को इस काल के समय में जीवित रख सकूंगा नहीं तो सब मर जायेंगे और मेरे बाप का नाम ही नष्ट हो जायगा जिसके लिए गाँव वाले मृत्यु भोज करवाना चाहते हैं। थोड़े ही दिनों में उसके कुएँ में फिर से पानी आगया और रहँट माँड कर कुआ तैयार कर दिया। उसने अपने खेतों में सिणा, कांगणी आदि नाज भी पका लिया जिससे उसके बाल बच्चे और मवेशी भी बच गये तथा उसके पिता का नाम भी रह गय।

इस गीत में एक कहावक कही गई है कि 'जियां खाड़ा तियां गेर है गाड़ा, जिने गेर माल है तिने गेर नहीं है काल"। इस कहावत से इस गीत का सारांश स्पष्ट हो जाता है और यह कहावत बड़ी ही शिक्षाप्रद है।

गीत परिचयः—

इस गीत में भीलों के धार्मिक विश्वास का वर्णन मिलता है। जब कभी इन पर किसी प्रकार का संकट आ पड़ता है तो ये अपनी गांव की देवी की शरण में जाते हैं और उससे प्रार्थना करते हैं। बाद में देवी उन्हें आज्ञा देती है; उसी के अनुसार काम करते हैं।

राईने केवँ बोले गांगजी रा रे लिम्बिया भाई।
जेठ असाडी बाड़ो रे ,,
पईलु नाहि आवे रे ,,
माताये बगला थाजो रे ,,
पाड़ा पाटरी लावो रे ,,
माता लिम्बस वाजे रे ,,
डाबोरँ नी माता रे ,,
ऊदातँन फले रे ,,
माता जई लाग रे ,,
माता पूजा सोरो रे ,,

कुणे भोपू वाजे रे	,,
हलीयूं भोपू वाजे रे	,,
देवरे ढाक थालीवाजेरे	,,
देवरे भोपूं धणे रे	,,
म'ता अरजाड़ आवे रे	,,
रईने केवँ बोलँ रे	,,
मेइलू आवे के नी आवे	,,
माता रईने केवँ बोलेरे	,,
टूटी वेतँ हांदो रे	,,
मेइलू नहीं आवे रे	,,
जातरी पाला आवे रे	,,
गीत जातु मेलो रे	,,

शब्दार्थ :—

दारो=दिन। मइलु=वर्षा। वगला थाजो=एकट्ठा होना। पाड़ा पटरी= देवी की पूजा की सामग्री। चोरो=चढ़ाओ। ढाक=देवी के मन्दिर में बजाने का एक छोटा ढोल के आकार का वाद्य। अरजाऊ=प्रार्थी।

गीतार्थ :—

एक बार ढनकावाड़ा गांव में ज्यैष्ठ और आषाढ़ का महिना भी बीत गया किन्तु वर्षा नहीं हुई। तब उस गाँव के गमेती ने सब को सूचना दी कि आज रात्रि को सब लोग देवी की पूजा का सामान लेकर लिम्बस माता के मन्दिर में इकट्ठे हो जावें।

यथा समय सब लोग माता के मन्दिर में उपस्थित होगये और खूब भक्ति-भाव से माता की पूजा करने लगे। इसके पश्चात् माता का भोपा हलिया (जिस के रूप में माता स्वयं आदेश देती है) माता के पास जा बैठा। अब ढ़ाक और थाली बजने लगी और थोड़ी ही देर में माता आगई तब भोपा ओतर ने लगा। सब लोग खड़े होकर विनीत भाव से प्रार्थना करने लगे कि "हे माता वर्षा कब आवेगी ?"

सब के शान्त हो जाने के बाद माता (भोपा) कहने लगी "इस साल वर्षा तो बिल्कुल नहीं आवेगी अतएव् तुम लोग अपने तीर-कमान तैयार कर लो। इस प्रकार देवी का आदेश पाकर सब लोग बिखर गये।

गीत परिचयः—

इस गीत में एक युवती के विवाह की कथा का वर्णन किया गया है। जब हदकड़ी का व्यक्ति राजू नामक लड़की से सम्बन्ध करने सराड़ा ग्राम गया तो उस लड़की ने अपने माँ-बाप से कह दिया कि वह उस काले व्यक्ति के साथ विवाह करने को तैयार नहीं। इस पर भी माँ बाप नहीं माने तो वह घर से भाग गई और गुप्त रूप से अपने मामा के यहाँ रहने लगी। थोड़े दिन बाद राजू का प्रेम एक अन्य व्यक्ति लालू से होगया अतः वे दोनों भाग गये। जब यह बात हदकड़ी वालों को मालूम हुई तो दोनों पक्षों में युद्ध हुआ जिसका इस गीत में वर्णन किया गया है।

इस गीत से भील जाति की लड़ाकू और निडर वृत्ति का भी आभास मिलता है। साथ ही राजूड़ी की कथा से मालूम होता है कि इनमें शादी-विवाह लड़के-लड़की की इच्छा के अनुसार ही होते हैं और यदि माता पिता जबरदस्ती किसी अन्य व्यक्ति के साथ सम्बन्ध निश्चित कर दें तो क्या होता है, यह इस गीत से स्पष्ट मालूम हो जाता है। युवतियाँ भी इतनी साहसी होती हैं कि समाज के प्रबल विरोध के बावजूद भी अपने प्रेमी के साथ चली जाती हैं।

हदकड़ी वालों को जब राजू के भाग जाने का पता लगता है और वे युद्ध के लिए चढ़ाई कर देते हैं तो इससे मालूम होता है कि ये अपनी आन तथा जातीय स्वाभिमान और मर्यादा के लिए मर मिटने को भी तत्पर रहते हैं।

गीत

राई केचाँ बोले राज खेर्या माये मराको वाजे ।
हदकरी हींबारी राज कर्या ,,
रणाते रणाते राज ,,
जगना-वालु दोलु ,,
चीनो है सोरो ,,
वोते हेला कुवारू ,,
विनी लाड़ी जोवो ,,
कियाँ लाड़ी वाजे ,,

हराडु हराडु	,,
पारगो याँनी सोरी	,,
सोरी हे रुपाली	,,
पीली ने परबाते राज	,,
हकनीया वशयारो	,,
रवेर जेरुवा हकनीया	,,
पदमु धामा दोरे	,,
हराड़े जाई लागो	,,
पटाल जाई उतरे लागो	,,
राम राम ने केरे राज	,,
राजूनो हरो पीयो	,,
वेवाई हम्बालो मारी वातं	,,
मलता वेगा पुछाडो	,,
तेरां हरो पीवो	,,
कियाँ भणायू जोशी	,,
समन माये हे खेड़ा	,,
वियाँ भणयू जोशी	,,
मलता वेगं पुछाड़ो	,,
पीली ने परबाते	,,
जई रे धमा दोरे	,,
खेड़े जाई लागा	,,
जाशीरा नी पालां	,,

जोशी रा बोलावो राज खेर्या मांये मराको वाजे
मलता वेग जोवाड़ो ,,
जोशी मातु डोलावे ,,
जोशी राई ने बोले ,,
राजूड़ी जेलू ने फेर जमती ,,
राख हो ते राई ववाहँ ,,
विहुलाने आवे राज ,,
हींबारी आवी लागँ ,,
कालाल ने पटाले ,,
एक हीहे हरो लिये ,,
हरो पीये नँ वातं चोले ,,
राजूरी ना वलता वेगं नही आवे ,,
ऐवँ हुँ करवु राज ,,
पदमु राई ने बोले ,,
थाहे तीम थाहे ,,
राजूरी पणवी ,,
विहावे राई गईया ,,
गीया ठेठा ठेठ ,,
राजूडी खेबर लागी ,,
राजूडी धागरो करे ,,
रणातं काळाँ काळाँ लोके ,,
मूते हद करी नही जावु ,,

मारु पीयेर ळाजे राज खेर्या मांये मराको वाजे।
राजू भर जोवनिया मायें ,,
जोवना कापड़ी भींजे ,,
वे ते वान्दे परी ,,
रीश नी जाये ,,
कियाँ तारा मामा ,,
कानेरी ने पाले ,,
मई कंटा ने माते ,,
भोमट में भोराई राज ,,
वीयाँ मारे मामा राज ,,
कूणे तारे मामो ,,
जोयेता वालु पदमु ,,
मामाने गेर पामणी ,,
रीहानी जावे ,,
माता वरजा वरजे ,,
माता वरजा वरजे ,,
सोरी मारग माये वेरीयाली पाले
बोरी-हदकरी ,,
वेरयाली हूँ पाले ,,
बोले हाई राखे ,,
भोजाई वरजा वरजे ,,
वरजी नहीं माने ,,
वरजी नहीं माने ,,

शांनी पामणी जावे राज खेर्या मांये मराको वाजे ।
गलती माजन राते ,,
वेणुं कुंकर बोले ,,
राजु भरकी होरे नाकें ,,
हबाव नीया हबाये ,,
ऊँची गुठिया नीकले ,,
जाये धामा दोड़े ,,
मारग पूछती जावे ,,
भोराई पूछती जावे ,,
बोरी नां हेरा ,,
भोराई जाई लागु ,,
वाव माते उतरी ,,
पनीयारीयां पुछना पूछे ,,
काबाये कियाँ नी हो पनीयारं ,,
भोराई नी हो पनीयारी ,,
पुछी नेहुं कामें ,,
भोराई मारा मामा ,,
कुने तारा मामा राज ,,
जोयेता वालो पदमो राज ,,
वीरमानी भाणेजे ,,
वोते मारे मामु ,,
कियाँ नी हो पामणी ,,

हराड़े पारगी.याँ नी सोरी राज खेर्या मांये मराको वाजे ।
भोराईयाँनी भाणेज ,,
मलनीया मले ,,
पदमा नी पोले भालोरा ,,
बाणे कडुवा लिम्बे ,,
वेते पदमा नी पोल ,,
राजु पोले गई ,,
हीला हदरा राले ,,
मामी धामी पोल आवे ,,
मलनीया मलो ,,
हक दखनी वाते ,,
मामाये वात चोले ,,
हाद करीना रणते ,,
काळा काळा भीले ,,
मई बोले हाई ले जाय ,,
मुते नहीं जावू ,,
मामा मुते शांनी आई ,,
बेटी गणी गाड़ी रे जे ,,
मामां मारां बीजे परनाव ,,
राजू मामा ने ईयाँ रे ,,
बैने चार वरे ,,
वागड़ में माडेंव ,,
मान्डेवनु डामौरे ,,

लालू मीठीयो भाई	राज खेर्या मांये मराको वाजे ।
वो उसाले आवे	,,
डूँगरपुर रावलजी नो माले	,,
माले लुटी लावे	,,
मेवाड़ माये कुंने काटी पाले	,,
भोराई वांकी पाले	,,
भोराई तमई जेलहैं	,,
भोराई जेली लीदो	,,
एक न बै वरे	,,
राईने केवाँ बोले	,,
लालू भुआने गेर थोबे	,,
भुआनी बोली हापंत बोली	,,
पीली ने परबाते राज	,,
लालू धोलीयनु गुवाले	,,
राजू रीन्डा नी गुवाले	,,
वेवाई ने वेवने	,,
वे ते गुवाल जाये	,,
जेठ वैसाखी दन रा	,,
तीक तेपे तावरा	,,
टाड़ा हीला गालो	,,
होम मता ने ढाले	,,
लालु मीटीयुं भाई	,,

नेई केनारे बेठूँ राज खेय मांर्यो मराको वाजे ।
राजू रीन्डा लेईने आवे ”
राजू रीन्डा पानी पाये ”
लालू मीठीयो राईने बोले ”
का राजू कीनी सोरी वाजे ”
का लालु पुछीने हुँकामें ”
भोराई नी भाणेज ”
तारे हुँये कामे राज ”
मारे हगई करवी ”
तई ते रीन्ड नु गुवाल राखुं ”
मीठीयो पनी सांटे दडे ”
राजु राईने बोले ”
मत करो ढींगाई ”
मई राखहो ते राई ववाहँ राज खेर्या माये मराको वाजे ।
राजू हांबल मारी वात ”
राई वावनी रांगड़ रावनुं कामे ”
भर हँ मार हँ तंई राखहँ ”
राजू जोवना कापरी भीजे ”
भर जोवनिया माये ”
वे ते जाता रेईया ”
राजु रीण्डा हुना मेंले ”
मीठीयो धोली हुनी मेले ”
अरी री रीरी हे पड़ीये ”

हद करी खेबेर लागी राज खेर्या मांये मराको वाजे।
रणाते हे अलोटा लोके ,,
वारी ढोल दीवारे ,,
सोरे भाईला भेला ,,
चोलो दलनी वाते ,,
राजु जाती रेई ,,
भोराईयां वेची खादी ,,
आपनो हुरेईयानो जोगे ,,
पालनो आवरु जाये ,,
भोराई नी वालन लावो ,,
वालन लावो न राज ,,
मरवे रखे होसो ,,
मखे होस होते आवरु जाहँ ,,
अरदी चोरी अरदा चोरा ,,
चोरीय कोडे गोफेन ,,
ढालने तलुवार ,,
पोलीने परबाते ,,
धारु धामा दोड़े ,,
बोरी जाई लागु ,,
जाये धामा दोड़े ,,
भोराई जाई लागु ,,
सुटती धोली आवे ,,

धोलीयं धारु सोटुं राज खेर्या मांये मराको वाजे ।
आकी भोराइ नी वालन ”
वालन वाली लीदी ”
गुवांले वार आले ”
आमली वारे सोरे ”
वारी सांगी वाजेरे ”
सोरे भाइला भेला ”
सोलो दलनी वातं ”
भाइये मारे हाँपे हांपु लेगियां ”
करी नां राणाते ”
राजुड़ी ने बदले ”
भाईयो मारो नहीं जीवयानो जोगे ”
पेरो चीरम सुरली ”
ओडो हरनाई ओरणी ”
भाई मारे वालन लावनी ”
खुंटे खूंटो बालहे ”
करी दई ने हींड़ो ”
आदि बहियेर आदा आदमी ”
हेरुला हबाजो ”
पीली ने परबाते ”
धरुं धामा दोड़े ”
हदकरी जाई लागु ”

चुटकी वालन वालो राज खेर्या मांये मराको वाजे ।
खुटे खूंटो वालो ,,
हदकरी माये वारी ढोल देवानो ,,
जीणी लराई लागी ,,
खेड़ आवी लागां ,,
खेड़ माये मसके रोळु ळागु ,,
रावत रोलो उड़े ,,
धरती रंगाई गई ,,
माटी मराई गईयां ,,
दनकी लराई लागे ,,
वाली वाली ने माटीं मारे ,,
दनका मालीया ववेराज ,,
राजू पासी आलो राज ,,
राजू नहीं आलां ,,
वलीने लराई लिये ,,
हींबारी में होर हीहो टोटे आईयो ,,
डूँगरपुरे में तरगा टोटे आईया ,,
राजू, लालू काड़ी दीये ,,
दुनी राई ववाहूँ ,,
राजु जाती रेई ,,
देवोल मोटे गेर जाये ,,
मानाते गेर रेए ,,

भोराई खेबेर लागी राज खेर्या मांये मराको राजे ।
हदकरी खेबेर लागी ,,
राजू बीजे गई ,,
अमाँ हाये मरां ,,
गीत जातो मेलो ,,

शब्दार्थः—

हरारु=सराड़ा । खेरजेरूवा=अपशकुन । मलता वेग=शादी निश्चित करने से पूर्व ज्योतिषी द्वारा लग्न देखना । मातु=सिर । डोलावे=हिलाना । जेलु ने फेर जेमती=बड़ी उधमी, वश में नहीं रहने योग्य । ववाहें=नुकसान कारक । कापरी भीजे=युवावस्था के मद के कारण कंचुकी (Bodice) भींगना । वान्दे=दुविधा । रीशनी=नाराज होकर । गलती माजन राते=घोर अन्धकार वाली रात्रि । मरको=चमक कर । होरे=चद्दर । उंची गुंठी=एड़ियाँ उठाकर धीरे २ चलना । बाणे=द्वार पर । केरूवालिम्बे=कड़वा नीम का पेड़ । हिला हदरा=धीरे मधुर, और विनय शील आवाज में बोलना । गाडिजे=भरोसा रखना । उसाले=अकृत्य करना । बोली हांपत=काफी मवेशी । रीन्डा=केडे पाड़े, गाय भैंसों के बछड़े । राई वनाहँ=बड़ा भारी झगड़ा होगा । रांगड़=बहादुर । अलोटा=खतरनाक । आकि=सारी । हाँपे हाँपु=बच्चे से लगाकर बड़े मवेशी तक । राबत रोलु=घमासान युद्ध जिसमें कई लोग मारे गये हों तथा लम्बे समय तक लड़ाई लड़ते रहे । तरगा=तीर । बीजे=अन्य जगह ।

गीतार्थः—

हदकड़ी ग्राम में गांगजो वाले ढोला रणात का लड़का अविवाहित था जिसके लिए हदकड़ी वाले लड़की की तलाश में थे । जब

उन्हें पता लगा कि सराड़ा में पारगी गौत्र के भीलों में एक सुन्दर लड़की है जो इस लड़के के योग्य है, तो पदमा नामक एक व्यक्ति शकुन खराब होने पर भी एक दिन वहाँ जा पहुँचा। उस लड़की का नाम राजू था। वहाँ पहुंचने पर राजू के माँ-बाप ने पदमा का बड़ा आदर-सत्कार किया और अपनी जातीय प्रथा के अनुसार पदमा को पीने के लिए शराब दिया। पदमा ने अपने आने का कारण बता कर बेवाई से कहा कि पहले ब्राह्मण (ज्योतिषी) से पूछकर के सम्बन्ध तय हो जाना चाहिये तब मैं शराब पी सकता हूँ।

उसी समय वे ज्योतिषी के लिए खेड़ा गाँव में गये। वहाँ भाणा नामक ज्योतिषी से लड़के लड़की के नाम से लग्न दिखाये। ज्योतिषी ने सर हिलाकर पदमा से कहा कि लग्न शुभ नहीं आते हैं। राजूड़ी बड़ी शैतान लड़की है, वह तुम्हारे लिए ठीक नहीं है। यदि तुम सम्बन्ध करोगे तो तुम्हारे हित में बुरा होगा और मेरे ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार यदि तुम विवाह करोगे तो इस लड़की के कारण तुम्हें एक भारी युद्ध करना पड़ेगा।

वे सब वहाँ से रवाना होकर सेंबारी गाँव में आये और कलाल की दूकान पर पहुंच कर शराब पीने लगे। एक बोतल शराब पीने के बाद पदमा और राजूड़ी के माता पिता आपस में बात करने लगे कि अब क्या करना चाहिये क्योंकि ज्योतिषी के कहे अनुसार तो यह सम्बन्ध हो ही नहीं सकता। इस पर पदमा बोला कि जैसा होना होगा वैसा होगा, परन्तु राजूड़ी का सम्बन्ध दोला के लड़के

के साथ तय हो गया है, उससे हम ही शादी करेंगे। यह निश्चित करके सब अपने अपने गाँव चले गये।

जब राजूड़ी को मालूम हुआ कि मेरा सम्बन्ध हदकड़ी में निश्चित कर दिया है तो वह बड़ी नाराज हुई और अपने माँ-बाप से स्पष्ट कह दिया कि "मैं वहाँ शादी कभी नहीं करूंगी"। वहाँ के लोग तो बड़े काले रंग के हैं, जिनमें जाकर मैं शर्माना नहीं चाहती हूं। इस प्रकार कई दिनों तक वह झगड़ा करती रही और दुविधा में पड़ जाने के कारण उसका विवाह भी नहीं होसकता। वह अब पूर्ण जवान होगई थी, उसका यौवन छलकने लगा। एक दिन वह इतनी आकुल हो गई कि अपने मामा के घर (भोराई गाँव में) जाने को उद्यत हो उठी। राजूड़ी की माँ उसे रोक कर समझाने लगी कि वहाँ जाने में बड़ा खतरा है क्यों कि मार्ग बड़ा विकट है और रास्ते में हमारे दुश्मनों के गाँव हैं, वे बड़े खराब लोग हैं तुझे जबरन पकड़ कर रख लेंगे। किन्तु राजूड़ी ने किसी की भी नहीं सुनी और अपने निश्चय पर डटी रही।

एक दिन रात्रि को जब सब लोग सोये हुए थे तब मुर्गा बोलने से अचानक राजूडी चमक कर जाग उठी और अपनी चद्दर को दूर फेंक कर खड़ी होगई। जाने की तैयारियाँ करके वह घर से धीरे २ अपनी एड़ियों को उठाकर चलने लगी क्यों कि सोये हुऐ लोग आहट सुन कहीं जाग न जायँ। रास्ते में वह अपने मामा के गाँव का रास्ता पूछती हुई तेजी से चली जारही थी। अन्त में वह

भौराई जा पहुँची और बावड़ी पर पानी भरने वाली औरतों से अपने मामा का घर पूछने लगी। अपना परिचय देती हुई बताने लगी कि मैं सराड़ा गाँव के पारगियों की लड़की हूँ और यह जोयता का बेटा पदमा मेरा मामा है। तब वे औरतें भी राजू से बड़े प्रेम से मिलीं क्यों कि वह भोराई गाँव की भाणेज थी। उसे अपने मामा का घर भी दिखा दिया जिसके द्वार पर एक नीम का पेड़ था।

राजू ने मामा के द्वार पर पहुँच कर बड़े विनय भाव से आवाज लगाई आवाज सुनते ही उसकी मामी दौड़ती हुई बाहर आई और आदर सहित उसे अन्दर लिवा ले गई। राजू ने अपने सम्बन्ध की सारी बात कह सुनाई कि इस प्रकार हदकड़ी के रणात मेरे साथ जबरदस्ती विवाह करना चाहते हैं इसलिए मैं भाग कर यहाँ आई हूँ। मामा ने उसे आश्वासन दिया और कहा कि मैं तेरा विवाह दूसरी जगह कराऊँगा। इस प्रकार राजू को वहाँ रहते रहते २-४ वर्ष बीत गये।

बागड़ में मन्डेर गाँव का लालू मीठिया बड़ा लड़ाकू व्यक्ति था। एक बार उसने डूंगरपुर रावल का भी माल लूट लिया। अब इसे पकड़े जाने का डर लगा अतः भाग कर मेवाड़ में आया। इसी भौराई गाँव में लालू की बुआ थी जहाँ इसे शरण मिल गई। बुआ के घर रहते २ लालू को १-२ वर्ष व्यतीत हो गये। वह बुआ के मवेशी का ग्वाल था। एक दिन प्रातःकाल लालू अपनी गायों को लेकर जंगल में गया। ज्यैष्ठ-वैशाख के दिन होने से गर्मी बड़ी भयंकर पड़ रही थी, अतः वह गायों को एक तरफ छोड़ कर

वह सोम नदी के किनारे पेड़ के नीचे बैठ कर विश्राम करने लगा। उसी समय राजू भी अपने केड़े-पाड़ों (बछड़ों) को पानी पिलाने के लिए वहाँ आ पहुँची।

राजू को देख कर मीठिया लालू उसका परिचय पूछने लगा और कहा कि मैं तेरे साथ ब्याह करना चाहता हूँ। इस पर राजू ने नाराज होकर कहा कि तुझे तो मैं अपने केड़े-पाड़ों का ग्वाल रख सकती हूं। उसने अपने सम्बन्ध का सारा किस्सा बताकर लालू से कहा कि मेरे से विवाह करने वाले को युद्ध मोल लेना पड़ेगा। किन्तु राजू की सुन्दरता और यौवन ने लालू को मुग्ध कर लिया अतः वह सब कुछ करने को तैयार होगया। इस प्रकार बात-चीत करते २ राजू और लालू का प्रेम हो गया और दोनों ने वहाँ से भाग जाने का निश्चय किया। दोनों अपने मवेशी को वहीं सूना छोड़ कर रवाना हो गये।

जब यह खबर हदकड़ी पहुँची तो खातों को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने अपना वारी ढोल बजाकर सब गाँव वालों को पंचायती चौरे (स्थान का नाम) पर इकट्ठा किया और मन्त्रणा करने लगे कि राजू के साथ अपना सम्बन्ध किया हुआ था, और उसे भोराई वालों ने दूसरे व्यक्ति के साथ भेज दिये। यह अपना अपमान है। इसको हम सहन नहीं कर सकते, इससे हमारी पाल की इज्जत जा रही है। हम जीवित रह कर किसी को मुँह दिखाने के योग्य नहीं रहे। अतः हमें राजू का बदला

चुकाने के लिए भौराई के सब मवेशी लाने होंगे। इस काम में हमें मर मिटने को भी तैयार रहना चाहिये। यदि कोई अपने प्राणों की परवाह करेगा तो सारी पाल की मानमर्यादा नष्ट हो जावेगी।

इस प्रकार विचार-विनिमय करके उन्होंने युद्ध करने के लिए दल बनाया। उस दल में गाँव की युवतियों ने भी भाग लिया और वे अपनी गोफनें (पत्थर फेंकने के लिए रस्सी की जाल) लेकर रवाना हो गईं। योद्धा लोगों ने भी ढाल तलवार आदि शस्त्रों से सुसज्जित होकर प्रातःकाल के शुभ समय में प्रस्थान कर दिया। इस प्रकार यह दल जब भोराई गाँव पहुँचा तो उस समय गाँव के समस्त मवेशी चरने को जंगल में जा रहे थे। इन्होंने अच्छा अवसर देखकर सब मवेशियों को अपने कब्जे में कर लिया और लेकर चलते थे।

ग्वालों ने यह खबर जब गाँव में पहुँचाई तो सारे गाँव में त्राहि २ मच गई। सब लोग अपने आमली वाले चौरे पर इकट्ठे हुए और विचार करने लगे कि इन लोगों ने अपने से राजूड़ी का बदला लिया है अतः सब मवेशी ले गये, यह हमारे लिए बड़ी शर्म की बात है। इसलिए यदि गर्व से जीवित रहना चाहते हो तो सब भाई मरने मारने का प्रस्तुत हो जाओ अन्यथा हाथों में चूड़ियाँ और हरनाई साड़ी (विधवाओं के पहनने की) पहन कर घर में बैठ जाओ।

इस प्रकार की बात सुनकर सबों को बड़ा जोश आ गया अतः गाँव का बच्चा २ चल पड़ा। सारा गाँव सूना हो गया। सब क

मकानों के द्वार बन्द थे। प्रातः काल के समय में ही हदकड़ी जा पहुँचे। उधर वे लोग लड़ने की तैयारियाँ पहले ही कर चुके थे। इनके पहुँचते ही दोनों पक्षों में खेड़ा नामक स्थान पर मुठभेड़ हो गई। घमासान युद्ध होने लगा। अनेक व्यक्ति मारे गये। वहाँ की भूमि रक्त से लाल हो गई। गिन २ करके बदला चुकाने लगे और राजू को वापस माँगने लगे। भोराई वाले राजू वापस देने की तैयार नहीं थे अतः युद्ध जोर पकड़ता जा रहा था। यह युद्ध कई दिनों तक चलता ही रहा। कुछ दिन ठण्डा पड़ कर पुनः दुगुने जोर से चल पड़ता था।

इस युद्ध में इतने शस्त्र चले कि सेंवारो ग्राम में शीशा (बन्दूक की गोलियाँ) खतम हो गई और डूँगरपुर के बाजार में तीर मिलना दुर्लभ हो गया। जब इस लड़ाई की खबर राजू और लालू को लगी तो उन्हें बड़ा भय हुआ। लालू ने राजू को निकाल दी क्योंकि उसे डर लगा कि नहीं तो लड़ाई चलती ही रहेगी। राजू वहाँ से निकल कर देवल में आकर रही। जब दोनों पक्षों को यह पता लगा कि राजू तो तीसरी जगह चली गई है और हम व्यर्थ में परस्पर लड़ रहे हैं तो युद्ध शान्त हो गया और अपने २ मकान पर चले गये।

गीत परिचय :—

यह गीत अंग्रेजों को लेकर गाया जाता है। इस गीत में अंग्रेजो द्वारा चित्तौड़ गढ पर आक्रमण करना तथा वहाँ के तात्कालीन राजा के साथ युद्ध होना आदि वर्णन किया गया है। अंग्रेजों को 'पुरबीया राजा' के नाम से सम्बोधन किया गया है; क्योंकि यहाँ उनका पूर्व की ओर से आगमन हुआ था अतः इन्होंने उनका निवास पूर्व में ही समझ लिया है।

गीत

रईने केवाँ बोले रे	पुरबीया राजा
पूरबनु है भुरीयु रे	,,
मगरो जोवे आवे रे	,,
फौजे तईयार करे रे	,,
दरीयां पेले ढाले रे	,,
धोले ने घोड़ीले रे	,,
वान्डे ने घोड़ीले रे	,,
धोली नुं टोपनु रे	,,
भुरारे मुण्डानुं रे	,,
दड़ीये आवी लागु रे	,,
नावनु नावरीयू रे	,,
नावरीय तमने वीन्द वीरे	,,
कतरा पेईसा लेवे रे	,,

नवसे पेईसा लेवु रे	पुरबीया राजा ।
थोड़ा थोड़ा गोरा लोक उतारो रे	,,
थोड़ा थोड़ा घोड़ीला उतारो रे	,,
पवनीयने हेमसे रे	,,
हेमसे नाव साले रे	,,
दरीया ओले ढाले रे	,,
पेरावँ पेरावँ रे	,,
तम्बुरा तंनावो रे	,,
खुंटीया धमका व.रे	,,
रुपावाली दोरे खीसावो रे	,,
गोरी लो हे सोटो हरीया मुंगेरे	,,
सीपाईयाँ आलो पका पेटयाँ रे	,,
कीयां जाहे कीयां आवे रे	,,
(मेवाड़) जोवे आवे रे	,,
चीत्तौड़े खेबर लागी रे	,,
चितोड़े वालु राजा रे	,,
राजा बोलमा बोले रे	,,
चित्तौड़ नी धणीयारी रे	,,
मेवाड़ थारे खोले है रे	,,
हेलो हांबली लीदो रे	,,
देवता वाली फोज रे	,,

सारदा फोजे तईआर करे रे ,,
चीतोड़ माते रे ,,
देवता बाली फोजे रे ,,
पुरबीया लड़वे जाये ,,
पुरबीया जई अडीयाँ रे ,,
आदी ने मेज रात रे ,,
आदो धूलो आदि कांगडी रे ,,
आदु पाणी आदो वायरो रे ,,
पुरबीयांनी फोज अन्दी थाई रे ,,
पुरबीयाँ भूली पेरीय रे ,,
पुरबीय पासु जाये रे ,,
वेते जातु रेईयँ रे ,,
मेवाड़ जीती लोदी रे ,,
देवता हेले आईया रे ,,
गीत जातो मेलो रे ,,

शब्दार्थः—

पुरबीया रजा=अंग्रेज। भुरियु=गोरी चमड़ी वाला, अंग्रेज। जोवे=देखे। घोडीले=घोड़े। वान्डे=कटे पूंछ का घोड़ा। नावरिय=नावड़िया। विन्दवी=बुलावे। पेवनियारे हमचे=हवा के समान तेज। ओले टारे=इसपार। तम्बुरा=तम्बू, टेंट। तनारो=खींचावो। रुपावारी=चांदी की। दोरे=रस्सियां। चोरो=तोबड़ा चढ़ाना। हरिया मुंब=रातब एक प्रकार का अनाज जो घोड़े को खिलाया जाता है। उसे रातब कहते हैं। बोलमा=बाधा लेना। धनियारी=कुल देवी।

सारदा=सरस्वती। अडिया=झुटगया। मँझरात=मध्यरात्रि। धुमाल=धमाल, जोर शोर से लड़ना। वायरो=वायु, हवा। थाई=हो गई। पासु=वापस। जातुमेलो=समाप्त करो।

गीतार्थ :—

धैर्य और शान्ति के साथ कहते हैं कि पूर्व की ओर से राजा आरहा है। यह पूर्व का गोरा राजा पर्वत देखने आरहा है। सैना तैयार हो रही है। समुद्र के उस पास आगये हैं। राजा श्वेत रंग के अश्व पर आरहा है। घोड़े की पूंछ कटी हुई (बांडी) है।

राजा का मुँह श्वेत (गोरा) है। उसके सिर पर श्वेत रंग का टोप (Hat) है। समुद्र के किनारे आ लगा है और नाव के मल्लाह से पूछ रहा है कि कितने पैसे लेता है। केवट ने भारी किराया (६०० पैसे) माँगा।

वह मल्लाह कुछ गोरों और कुछ घोड़ों को समुद्र के इस पार उतारने लगा। उसकी नाव पवन के समान तेज चलती थी। समुद्र के इस पार आने पर वे धीरे २ आगे बढ़ने लगे। जगह २ पड़ाव डालते हुए आ रहे हैं। उनके सामयाने के चाँदी की रस्सियें लगी हुई है।

उसके साथ छोटा घोड़ा है उसे रातबा रखना और सैनिकों को पक्के पेटिये (भोजन-सामग्री) दीजिये। ये कहाँ जारहे हैं? ये मेवाड़ देखने आरहे हैं। यह खबर चित्तौड़ पहुंची तो चित्तौड़

का राजा चित्तौड़ इष्ट देवी से प्रार्थना करने लगा कि हे माता! चित्तोड़ तुम्हारी शरण में है।

देवी ने उसकी पुकार सुनली है। सरस्वती सैना तैयार कर रही है। चित्तौड़ पर देवताओं की सैना तैयार हो गई है। अचानक आधी रातको अंग्रेज लोग हमला कर देते हैं। भयंकर युद्ध होने लग गया। देवताओं की सैना ने वर्षा और आँधी चलादी जिससे धूल और कंकड़ उड़ उड़ कर अंग्रेजों को लगने लगे। पुरबियों की सैना अन्धी होगई। वे भुलावे में पड़ गये हैं। वे वापस रवाना हो गये हैं। इस प्रकार मेवाड़ की विजय हो गई है क्यों कि देवताओं ने सहायता दी है।

गीत परिचयः—

इस गीत में यह बताया गया है कि भीलों की अपनी अगली फसल और अगले वर्ष कैसी वर्षा होगी। इस विषय में उनका व्यापक ज्ञान होता है। उनकी अनुभवी वैज्ञानिक की तरह स्पष्ट कल्पना रहती है और वे वर्ष के प्रारंभ में ही जान लेते हैं कि यह वर्ष किस प्रकार का होगा? अगर वर्ष में बीमारी अकाल या अन्य दुर्घटनाएँ होने की संभावनाएँ होती हैं तो पहले से ही वे बचने के उपाय करते रहते हैं जिससे समय पड़ने पर उन्हें इधर उधर न भागना पड़े।

गीत

राईने केवँ बोले हलकुं समीयू हायेराजी'
फोरु कोवई वायेरु वाजे हलकुं समीयू हायेराजी ।
मगरे कोवाई लागी ,,
रुँकड़ाँ मोर नहीं आइयो ,,
रुंकड़ा फल नहीं लागं ,,
नदियँ पानी नही वलीयँ ,,
कुआँ पानी नही वलीयँ ,,
पगरँ उलवन नहीं वलीयँ ,,
तीका तावरा नही तपीया ,,
को वाई लुवरे वाजे ,,
मँगरे फूल कोवना ,,
रुकडँ फल को वाणा ,,
हलकु सेमीयु ,,
कूआं रेंठहं जोवो ,,
भागा टूटा रेंठे ,,
रेंठे हंजोवो ,,
हाथे राजी सेमयू पड़ी गीयूं ,,
सनो समीयो पड़ीयो हलकुं ,,
गीत जातु मेलो रे ,,

गीतार्थ :—

वधु अपने ससुर से कहती है कि यह वर्ष मामूली (साधारण) होगा। क्योंकि हवा बड़ी खराब चल रही है। जंगल में खराब हवा लग गई है अतः पेड़ों पर मोर भी नहीं आया है। वृक्षों पर फल भी नहीं लगे हैं और कुँए और नदियों में पानी नहीं आ रहा है।

जंगल हराभरा भी नहीं हो रहा है और न तेज धूप पड़ रही है अतः यह वर्ष (साख) साधारण ही हो पायेगो। लूएँ चल रही हैं जिससे पेड़ों के फलफल भी कुम्हलाने लग गये हैं। इन सब चीजों को देख कर स्पष्ट हो रहा है कि यह वर्ष (फसल) बिलकुल हल्का (साधारण) होगा। अतः हे ससुरजी ! मेरी राय मानकर आप अपने रहँट की मरम्मत कर लीजिये। टूट-फूट को ठीक कर लीजिये। हे ससुरजी यह साल (साख-वाड़ी) बड़ा खराब हो गया है !

गीत परिचय :—

इस गीत में भीलों के धार्मिक विश्वास, रहन-सहन, जातीय एकता तथा रीति-रिवाजों का वर्णन किया गया है। इस घटना का प्रमुख नायक गांगजी है, जो अपनी नव विवाहिता पत्नी को छोड़कर गांव के सामूहिक हित को दृष्टि में रखते हुए चोरी करने को जाता है—और दुर्भाग्य से मारा जाता है। गांगजी ने जो कार्य किये हैं, वे प्रशंसनीय हैं इसी लिये इस गीत को यहाँ स्थान दिया गया है।

गीत

ढानका वाड़ु वाजे गांगजीरा रे लीम्बीया भाई ।
राई ने कंवाँ बोले ,,
जेठ असाड़ी दाड़ारे ,,
कोरा हूका वायेरा ,,
मेईलु नहीं आइयुं रे ,,
उदातं ने पाड़े रे ,,
हारा भाईला भेला रे ,,
हांसु मनसोबानी वात रे ,,
माता जाग दीयो रे ,,
माता वाण धोना रो रे ,,
जाग नो होदो लावो रे ,,
हाउं गाम मायें हेलो रालो रे ,,
मा त वेला आवो रे ,,
माता लीम्बस वाजे रे ,,
आतमीयानों शमीयो रे ,,
हासु जातरी धामा दोड़े ,,
माता जाई लागा रे ,,
ढोले ढाक वजारो ,,
हासू हलीयूं भोपो वाजे रे ,,
माता धुपे करेरे ,,
हासु वाण ओतरवे लागो रे ,,

जातरी हाथ जोरी ने उबारो गांगजीरारे लीम्बीयारे ।
मेईलु नहीं आईयं रे ,,
हाँबलो मारी वातं रे ,,
वाण राई ने बोले रे ,,
टुटी नादो काटी कमर बन्दोरे ,,
मेंते नवी असाढ़ रे ,,
जातरी रोवे लागं रे ,,
जातरी वेराई गईयरे ,,
गांगजी न पणेती धोतीरा ,,
गंगजी रूपतली हतुआरे ,,
आलसु वीवा थाइयो रे ,,
वीबानो हूँ भरियो रे ,,
कियाँक टोली रमने जांवुरे ,,
माता पूछना पूछे रे ,,
मात टोली रमने जावु ,,
पेलको रोटो भागो ,,
पीली ने परबातं रे ,,
अतु वार हंबाले रे ,,
माता वरजा वरजे रे ,,
गांगजी नवरोली बहियो रे ,,
वहीयोर बाणे रोये ,,
रतलती सानी बोले रे ,,

दीवाली नु आणु रे गांगजीरारे लीम्बीया भाई ।
आणु करी जाजो रे ,,
बहीये रे वलु बावे रे ,,
गांगजी राई ने बोले रे ,,
जीवतो आवुते हे गांगजी ,,
आलसु आनु कारु रे ,,
बहीयेर गुंगटिया में बोले रे ,,
उगीया जीते वांदीया रे ,,
मारा हाथ बालिया रे ,,
हकनीया वसारे रे ,,
खेर जेरुवा हकनीया रे ,,
जाये धामा दोड़े रे ,,
करजी जाई लागु रे ,,
होम माता ने ढाले रे ,,
पीपलादा ने थाने रे ,,
जाकोला जाई लागु रे ,,
जाये धामा दोड़े रे ,,
वाजेड़े जाई लागु रे ,,
हाडुने घेर पामणो रे ,,
रामा कशनी करे रे ,,
ढोलीरु ढाली आलो रे
आथमयानो शभीयोरे ,,

हरो पीवे जाहे रे	लीम्बीया भाई।
हरो पीये न माल हेरे रे	,,
डावी नजरं जोये रे	,,
माल हेरी ने आवे रे	,,
लोरो बड़ो हाडु रे	,,
मनशोबो बनदे रे	,,
ढनका वाड़े भाई हमसो आलो रे	,,
शंनु जुन मुकलावोरे	,,
कलाल नो भारी माल वाजे रे	,,
जुने धामा दोड़े रे	,,
ढनका वाड़े आवी लागु	,,
राते शांनु शांनु करे रे	,,
शांनी टोली मेले	,,
राते ढोली नीकले रे	,,
तारनीय नेडुंके राजा बोले	,,
खेरजेरुवा हंकनिया रे	,,
जाये धामा दोड़े रे	,,
आदी ने मेज रातां रे	,,
गीयां ठेठा ठेठे रे	,,
वाजेड़े जाई लागो रे	,,
राम रामें करो रे	,,
हुको भांगे करोरे	,,

छानी वाताँ करो रे	लीम्बीया भाई ।
कलाल नो भारी माल	,,
शंनु धाडु जावे रे	,,
कालाल मे घेरनु खातर पड़े रे	,,
घीनी गागर काड़ोरो	,,
हरानी शीणी काड़ोरे	,,
खुने खातर पारीये	,,
कलाल ने तरकी हे हुनवालीरे	,,
वेते जागी गईयू रे	,,
तोड़ादार बन्दुके रे	,,
साथी बन्दुक रे	,,
धर सुटी धर लागी रे	,,
लीम्बा गोली लागी रे	,,
गांगजी गोली लागी रे	,,
काउवा छर्रो लागो रे	,,
पनीया छर्रे लागो रे	,,
ढनका वारीयाड़ा मोर रे	,,
हथीया बोलावे रे	,,
लाजे माता लीम्बस	,,
तरकी नाहवें लागु रे	,,
मांरो वेरीयँ मारो रे	,,
बलतु धाडु जाये रे	,,

तरकि ममाराई गईयँ रे — लीम्बीया भाई ।
आला वेरे वालीयारे — ,,
गांगजी जोलो गालोरे — ,,
लीम्बाये जोली गालो रे — ,,
जलती जोली आवे रे — ,,
होम माता ने ढंले रे — ,,
गांगजी मारी गईयो — ,,
लीम्बा लेई ने आवे रे — ,,
आवे धामा दोड़े गांगजी — ,,
ढनका वाड़े अ ई यारे — ,,
एक ने बे दाड़ा रे — ,,
लीम्बा मरी गईयं रे — ,,
बालक राएडी थाई रे — ,,
गीत जातो मेलो रे — ,,

शब्दार्थः—

मेहलु =वर्षा । जाग=जागरण । बाण=भोपा, देवी का प्रमुख पुजारी । धुनारो=धूणना, कंपन होना, देवी का शरीर में प्रवेश होना । हेलो रालो= आवाज दो, खबर पहुंचाना । टूटी नांदो=टूटे हुए धनुष को ठीक करो । पनेती धोती=शादी के समय पहिनी जाने वाली धोती । हतुवार=शस्त्र, जैसेः-तलवार, बन्दूक, कटार, तीर, कमान आदि । आलसु वीवा=ताजा शादी हुई । दीनानो= ऋण से, शुद्ध शब्द देणा है । नव लोरी=नव विवाहित । हर हर=टप टप [आँसुओं की आवाज] रतलती=रोती रतलती । वलु'बावे=बहलाना, भुलावा

देना। उगीये जीते वांदियारे=सूर्य की उपासना उदयकाल में ही होती है। अस्त के समय नहीं—तात्पर्य यह है कि गांगजी के अस्त (मरजाने) हो जाने से है। हाथ बालना= लग्न के समय हाथ पकड़ कर मेरा जीवन व्यर्थ में बरबाद कर दिया। खेरु जेरुवा=अपशकुन। माल हेरे=धन की तलाश करना। शांतु= सातु, गुप्त रूप से। टोली मेले रे= दल बनाना। राजा=गोगा नामक एक पक्षी जिसके बोलने से शकुन देखे जाते हैं। शीणी=शराब भरने का एक बर्तन [प्रायः चीनी का बना हुआ एक प्रकार का बर्तन होता है]। तरकी=रक्षक, (पहरे दार)। हुनवाली=पहरेदार। रान्डी=विधवा।

गीतार्थ :—

ढनका वाड़ा नामक ग्राम में गांगजी तथा लिम्बा दो भाई रहते थे। ज्यैष्ठ और आषाढ़ मास के दिन हैं। केवल सूखी हवा चल रही है और अभी तक वर्षा नहीं आई है। उदातों के मोहल्ले में सब लोग इकट्ठे हुए हैं। सबों ने विचार करके निश्चित किया कि माता की पूजा करनी चाहिये। माता का भोपा (प्रमुख पुजारी) ओतरेगा, अतः पूजा की सामग्री लाइये। सारे गाँव में सूचना भेज दो कि लीम्बस माता के मन्दिर में जल्दी आ जावें।

संध्याकाल के समय में सब यात्री तेजी से चलते हुए माता के मन्दिर में पहुँचे। ढोल तथा ढाक (ढोल नुमा एक छोट। वाद्य-यन्त्र) बजने लगे और माता का 'भोपा' हलिया पूजा करने लगा। भोपे ने ओतरना (शरीर में कंपन पैदा कर सिर हिला करके धूणना) प्रारम्भ किया और सब यात्री हाथ जोड़ कर, खड़े हो करके विनीत भाव से प्रश्न करने लगे कि वर्षा कब आवेगी ?

भोपे ने उत्तर दिया कि "तुम्हारे धनुष-बाण टूटे हों तो ठीक करलो क्योंकि वर्षा तो अगले अषाढ़ मास तक आवेगी। सब यात्री रोने लगे और बिखर गये। गांगजी का ताजा विवाह हुआ था अतः वह विवाह की धोती पहने हुए था और हाथ में रूपत ली खड्ग लिये हुआ था। वह अपनी माता से कहने लगा कि मैं टोली बना कर कहीं न कहीं आक्रमण करने जाता हूँ। माता जाने के लिए मना करने लगी।

गांगजी की नव विवाहिता पत्नी रोने लगी और गांगजी से कहने लगी कि दीवाली का प्रथम आणा (गौना) करके जाना। इस प्रकार स्त्री गांगजी को भुलावा देने लगी। गांगजी ने उत्तर दिया कि यदि जीवित आया तो ताजा गौना करूँगा। पत्नी घूँघट में कहने लगी कि सूर्य की पूजा उदय के समय ही होती है : आपने व्यर्थ में मेरे साथ विवाह करके मेरा जीवन बरबाद कर डाला है।

गांगजी शकुन विचारने लगा। शकुन खराब हो रहे थे किन्तु वह तेजी के साथ चल दिया। करजी, सोम नदी का ढाल, जाकोला, तथा पिपलोदा आदि स्थानों पर होता हुआ वाजेड़े गाँव में जा पहुँचा। वाजेडे में साडू के घर गया, साडू ने प्रणाम किया और खाट बिछा दिया।

संध्या के समय में शराब पीने के लिए गया। शराब पीने के बहाने धन माल की तलाश करने लगा। टेढ़ी नजर से देखकर माल तलाश कर लिया। लघु-ज्येष्ठ साडू आपस में मंत्रणा करने

लगे कि ढनका वाड़े संदेश भेज देना चाहिये। एक गुप्त दूत के साथ संदेश भेज दिया कि यहाँ कलाल के पास बहुत धन-माल मालूम हो रहा है।

वह दूत दौड़ता हुआ ढनकावाड़े आ पहुँचा। रात्रि को गुप्तरूप से मिलकर टोली तैयार की और रात्रि को ही प्रस्थान कर दिया। राजा नामक पक्षी (जिससे शकुन विचारे जाते हैं) विपरीत बोल रहा था। घोर अन्धकार के समय अर्धरात्रि में निश्चित स्थान पर पहुँच गये। वहाँ पहुँचने पर परस्पर प्रणाम करके तम्बाखू आदि पीने लगे। छिपे रूप से बातें करते रहे।

कलाल के यहाँ बहुत ही धन-माल है। यह 'धाड़ा' छिप कर वहाँ जाता है। सेंद लगा कर मकान के एक कोने में 'खात' (बड़ा छेद जिसमें आदमी प्रवेश कर सके) गिराया। मकान में से घी के घड़े तथा शराब की कोठी (बर्नी) निकाल रहे थे। कलाल के घर एक मुसलमान पहरेदार था वह, सोया हुआ था। थोड़ी देर में उसकी नींद खुल गई। उसके पास तोड़ा दार बन्दूक थी उसने गोली चलाना प्रारंभ कर दिया।

दुर्भाग्य से गांगजी, तथा लीम्बा को गोली लग गई और कउवा, पनीया को छुरे लग गये। ढनका वाड़े वालों को बड़ा जोश आ-गया, वे लीम्बस माता की जयकार करने लगे। इस समय वह मुसलमान पहरेदार भागने लगा परन्तु 'धाड़े' ने वापस जाकर उसे समाप्त कर दिया। इस प्रकार ताजा बदला ले लिया।

गांगजी व लीम्बा को कपड़े की झोली में डाल कर वापस ढनकावाड़ा की ओर रवाना हुए। गांगजी की तो रास्ते में ही मृत्यु हो गई। ढनका वाड़े पहुँचाने के एक दो दिन बाद लीम्बा भी मर गया। उसकी पत्नी कल विधवा होगई।

गीत परिचय

इस गीत में एक ऐसी घटना का वर्णन किया गया है जिससे भील जाति की चोरी करने की प्रवृति का आभास मिलता है। जब कभी इन पर आर्थिक संकट आ जाता है अथवा दुर्भिक्ष पड़ जाता है तो इनका एक मात्र सहारा चोरी-डकैती पर ही अवलम्बित रहता है। इसका मुख्य कारण अशिक्षा है। इनको कभी इस प्रकार का ज्ञान नहीं मिलता कि ये इस दुष्कर्म को त्याग सकें। अज्ञात रूप से पुत्र अपने पिता के कृत्यों का अनुकरण प्रारम्भ कर देता है फलस्वरूप नैतिक स्तर बराबर गिरता जाता है।

गीत

घडी आलो घडी आलो, मामा कामटी घडी आलो रे।
पडिया कोडी काले मामा, हरज्यो ,,
सपनीया हरको काले, मामा हरज्यो ,,
चोरी करवा जांवु, मामा तीरे ,,
नदिया टूटा नीरे, कामडी ,,
कोठारे खूटां धाने, मामा तीरे ,,

खाणा खूटा मउडा, मामा हरज्यो घड़ी आलो रे ।
मगरा खूटा सारो, मामा तीर ,,
मानवी मरवा लागा, मामा तीर ,,
छोरां मर वां लागा, मामा तीर ,,
उदयपुर ना देश में मामा तीर ,,
चोरी करवा जावूं मामा तीर ,,
राणाजी ना मेला मामा तीर ,,
राणाजी फते हींगजी, मामा तीर ,,
मेला चोरी करी, मामा तीर ,,
पुलीस पकड़ लीदो, मामा ,,
फते हाई लीदो, मामा कामटी ,,
चोरी में फसायो, मामा तीर ,,
पगां में बेडी नाकी, मामा तीर ,,
बारे बरस नी बेड़ी, मामा तीर ,,

शब्दार्थः—

घड़ी आलो=बनादो, तैयार करदो। कामटी=धनुष-कमान। हरज्यो=तीर, बाण। खाणा=खान में, नाज तथा महुवे रखने का भण्डार। छोरां=बाल-बच्चे फते=महाराणा फतेसिंगजी।

गीतार्थः—

भानजा अपने मामा से कहता है कि "हे मामा! मुझे एक धनुष (कमान) तैयार कर दीजिये। हे मामा! भयंकर दुर्भिक्ष

पड़ गया है अतः मुझे एक तीर बनादो। हे मामा संवत् ५६ के वैसा ही काल पड़ गया है। मुझे चोरी करने जाना है इसलिए कृपा करके मुझे तीर बना दीजिये।

काल में नदियों का पानी भी सूख गया है और भंडारों में नाज-भी समाप्त हो चुका है। गड्ढों में भरे हुए महुवे तक समाप्त हो गये हैं। हे मामा! काल पड़ जाने के कारण जंगल में घास भी नहीं रही है अतः मवेशी भी मरने लग गये हैं। लोग घबराने लग गये हैं और बाल बच्चों की मृत्यु होने लग गई है।

हे मामा! मैं तो उदयपुर नगर में चोरी करने जाना चाहता हूँ इसलिए मुझे एक धनुष-बाण बना दीजिये। उदयपुर के महाराणा फतेसिंहजी के महलों में चोरी करने गया। दुर्भाग्य से पुलिस की नजर उस पर पड़ गई। उसे गिरफ्तार करके महाराणा फतेहसिंहजी के सम्मुख पेश किया गया।

चोरी के अभियोग में पकड़ कर पैरों में बेडियाँ डाल दी गई। हे मामा! मैं तो अपना धनुषबाण भूल गया हूं। मुझे १२ वर्ष का कठोर कारावास मिला अतः मैं तीर-कमान भूल गया।

गीत परिचय :—

पाणिग्रहण के समय वर पक्ष के लोग जिस समय बरात सजा-कर वधु के पितृगृह को पहुँचते हैं तब वधु पक्ष की सुन्दरियाँ वर को सम्बोधित करके यह गीत गाती हैं। अन्य भील गीतों की भाँति यह गीत स्त्री-पुरुषों द्वारा ताल एवं नृत्य के साथ सम्मिलित रूप से न गाया जायगा, यह गीत केवल युवतियों द्वारा ही बैठकर या समूह में खड़ी होकर गाया जाता है। इस गीत में वर से अपनी जाती प्रथा के अनुसार चीजें साथ लाने की आशा की गई है।

गीत

रुपया लाजो वेतो लाव, ने तो रेजे झांपा बार,
टीलड़ी लाजू वेतो लाव, ,,
पडलुं लाजू वे तो लाव, ,,
दारु लाजो वे तो लाव, ,,
घुगरी लाजू वे तो लाव, ,,
रुपया लाजू वे तो लाव, ,,
मोडिला लाजू वे तो लाव, ,,
पागड़ी लाजू वे तो लाव, ,,
हालां कटारी लाजू वे तो लाव, ,,

शब्दार्थः—

टीलड़ी=स्त्री के सर में, कपाल पर लगाने की बिन्दी। पडलुं=शादी के कपड़े जेवर आदि। दारू=शराब।

गीतार्थ :—

वर को सम्बोधन करके युवतियाँ कहती हैं कि अपनी पम्परा के अनुसार तूं रूपये लाया हो तो अन्दर आना नहीं तो द्वार के बाहर ही रहना। इसी प्रकार वधु के कपाल में लगाने के लिए बिन्दी लाया हो तो लाना नहीं तो दरवाजे के भीतर प्रवेश मत करना। पडलूं (वधु के लिए कपड़े) लाया हो तो भीतर आना नहीं तो द्वार के बाहर ही रहना। इसी प्रकार से घुघरी, पगड़ी, मोड़ हांला कटारी आदि अनेक आवश्यक वस्तुओं की माँग की जाती है कि ये चीजें लाया हो तो श्वसुरालय में प्रवेश करना वरना दरवाजे के बाहर ही खड़े रहना।

गीत परिचय :—

यह गीत भी पाणिग्रहण के बाद वर पक्ष की सुन्दरियाँ समूह में बैठ कर अथवा खड़ी होकर गाती हैं। इसमें ब्याही के भोजन की मजाक उड़ाई गई है और उस भोजन को करने को तैयार नहीं है।

गीत

वेवाइ थारे रोटी संबालो, अम पडजीया रोटी नई खाता रे।
वेवाइ थारा रोटी संबालो, अम वासीया रोटी ”
वेवाइ थारी दाले संबालो, अम वासी दाल ”
वेवाई थारी लाफसी संबालो, अम वासी लाफसी ”
वेवाइ थारो सूरमा संबालो, अम बासी सूरमा ”
वेवाइ थारा सोका संबालो, अम पडजीया सोका ”

शब्दार्थः—

अम=हम। पड़जी=बासी। वासीयां=बासी। लाफसी=लपसी। सूरमा=चूरमे के लड्डू। सोका=चाँवल।

गीतार्थ :—

बराती ब्याही को सम्बोधित करके गाते हुए कहते हैं कि "हे ब्याही तेरी रोटियां संभाल हम तो नहीं जीमते क्योंकि ये रोटियाँ तो बासी हैं"। इसी तरह फिर कहते हैं, ब्याही तेरी दाल भी बासी है और सड़ गई है इसलिये हम नहीं खाते हैं, यह दाल वापस ले जाओ। ब्याही तेरी लपसी भी सम्भाल ले हम लोग यह बासी लापसी खाने को तैयार नहीं है। ब्याही तेने हमको लड्डू और चाँवल भी बासी परोसे हैं अतः हम खाने को तैयार नहीं है तू अपना भोजन वापस सम्भाल लेना।

गीत परिचयः—

इस गीत में एक अकर्मण्य पुरुष को अपनी स्त्री द्वारा खेती करने की प्रेरणा दी गई है।

गीत

हासु राईने केव बोले हे   तुहाँ ई हूता हे
हासु लोक ते वगरे गिया हे   "
हासु जेठ आसाड़ी दिनरा हे   "
दारो माथे आइयो हे   "
हासु हाल चऊरां नो दारो हे   "

हासु राहे मोरी करो हो ,,
हासु आदमी वेरमाये गईय हे ,,
हासु चौरों किनी पाली जाहें ,,
हासु चौरां हाथ हाबल जोहँ ,,
हासु बइरूं ओकर बोले हें ,,
हाल चउराना दारा हे ,,
हासु खाते पुजं न खोहो ,,
हासु आदमी वहिरां ठोकर वाए हे ,,
हाको न के करो हो ,,
हासु बहीये अरका बरका बोले हे ,,
हासु नांनां नांनां चौरा हे ,,
चौरा दुखा हें मर हें ,,
हासु मनवी खात दरें हे ,,
आदमी हीदरा कोरे हे ,,
लोक ते गोदा फेखे ,,
हासु फोरु फोरु घर में ,,
आबु नीघले हे ,,
हासु दारो माते आइयो हे ,,
हासु चौरे दुखवरानी ,,
हासु मारू केइयू मानो हो ,,
बहिरानु केयउ मानीयूं हाख पादरीआजी ,,

शब्दार्थः—

हाँई=क्यों। हुतो=सोया हुआ। वगरे=जंगल में। दारो माथे आयो= दिन उपर आगया, अर्थात् दोपहर हो गया। हाल चउरां=हल और चउ। राहे=रस्सा (बैलों के लिये)। मोरी=मोरिया (बैल के मुँह में पहनने का)। वेर=जंगल (वेड़)। हाथ हाबल=दूसरों के हाथ देखेगा (अर्थात् दूसरों को खाता देखकर तरसना)। नके=मत। गोदा फेखे=नये बैल को शिक्षा देना। धरमे=धराऊ में, उत्तर मे। आबु=बादल। दारो माते=खेती करने का समय (बीत रहा है)।

गीतार्थः—

एक आलसी व्यक्ति से उसकी स्त्री कहती है कि ज्यैष्ठ और अषाढ़ के दिन आगये हैं अर्थात् खेती के दिन नजदीक आगये हैं और तुम अब तक सोये हुए क्यों हो ? लोग तो जंगल में जा रहे हैं और और अपने हल चऊ तैयार कर रहे हैं और तुम क्यों बैठे हुए हो ? जाओ तुम भी बैलों की मोरी और रस्सी तैयार करो और खेती करो अन्यथा जब सब लोग खावेंगे तब अपने बालबच्चे तरसेंगे।

इस प्रकार स्त्री के समझाने पर भी जब वह पुरुष काम पर नहीं लगा तो वह उसे गालियाँ देने लगी और खात आदि खेत में डालने को कहा तो आदमी ने स्त्री को ठोकरें मारी और कहा कि "शोर मत मचा" तब स्त्री रोने लगी मेरे छोटे २ बच्चे क्या खाकर जीयेंगे। लोग आज-कल काम में बड़े व्यस्त हैं। कोई खेतों

में खाद डाल रहा है तो कोई रस्से बना रहा है और कोई अपने नये बैल को तैयार कर रहा है। जब खेती करने के दिन बिलकुल नजदीक आगये अर्थात् आसमान में बादल निकल आये और बिजली चमकने लगी तो स्त्री ने पति को एक बार और समझाया। इस वार उसके दिमाग में बैठ गई और उसने खेती का काम शुरू कर दिया। इस प्रकार जब उसने स्त्री का कहना माना तो उसके घर में भी नाज पक कर आगया नहीं तो भूखे मरना पड़ता।

———

गीत परिचय :—

इस गीत में झालावाड़ के भीलों के दुःख दर्द का वर्णन किया गया है कि किस प्रकार उन्हें वहाँ के छोटे २ राजा-महाराजा लोग कष्ट देते थे।

गीत

रे जालीवार मँ जाला नूँ राज, जालीवार मँ जाला नूं राज।
रे छोटां छोटां राजा जालीवार में छोटा छोटा राज।
रे भीलंइ दुःख दीये छोट छोट राज भीलंइ दुःख दीये ”
रे छोटा राज नके दीयो भीलंइ दुख छोट राज मत दीयो भीलंइ दुख।
रे भीलंइ दुख मत दीयो राज, भीलंइ दुख मत दीयो राज।
रे छोटा छोटा धान्न मती कुन्तो राज छोटा धान्न मती रे कुन्तोराज
रे छोटा धन्न बटी कोदरा मती ”

रे खर धान्ना कुरी कांगणी मती ,,
रे खड़ धान्न उरद तल मंती ,,
रे अम्बरी हन मती ,,
रे जालीवार में भोला भील जालीवार में भोलाभील ।
रे हंईय मरे भोला भील, हंईय मरे ,,
रे भुखं मरे भोला भील, भुखं मरे भोला भील ।
रे इतरो दुख कुन सेवे राज, इतरो दुख कुन सेवे राज !
रे इतरो दुख वेढे तो पेरो मरे राज, पेरो मेरे ओ राज !
रे मारी अरजी सुनज्यो राज, मारी अरजी सुनज्यो राज ।
रे खर धान्नरो भोगे मती लेवो राज, खड़ धान्न रो भोग मती लेवो राज ।

शब्दार्थः—

जाला=झाला राजपूत । भीलंई=भीलों को । छोटा नाज=साधारण नाज । इतरो=इतना । सेवे=सहन करना । वेटे=झेलना । अरजि=प्रार्थना । खरधान=जंगली नाज जैसे- ज्वार, बाजरा, कूरी, माल आदि ।

गीतार्थ :—

झालावाड़ क्षेत्र में झाला राजपूतों का राज्य है । झालावाड़ में छोटे २ राजाओं का राज्य है । ये राजा लोग भोलों को कष्ट देते हैं ।

हे छोटे राजाओं ! गरीब भीलों को कष्ट मत दीजिये । साधारण नाजों को कर रूप में (कुंता) वसूल मत करो । जंगली धान जैसे बाजरा, कोदरा आदि का भोग मत लीजिये ।

उसी प्रकार छोटे २ नाज जैसे- कांगणी, उड़द, मूंग, तिल आदि का लगान भी मत लीजिये। सन और अम्बारी का कर भी नहीं लेना चाहिये।

झालावाड़ में सीधे-सादे भील रहते हैं। इन भोले भीलों को क्यों मार रहे हो ? ये गरीब भील लोग भूख के कारण मर रहे हैं। इतने भयंकर कष्ट कौन सहन कर सकता है ? यदि इतने कष्ट झेलेंगे तो मर जावेंगे। हे राजाओं ! हमारी प्रार्थना है कि कृपा करके जंगली नाजों का भोग (नाज रूप में कर) मत वसूल कीजिये।

———

गीत परिचय:—

इस गीत में एक सच्ची और प्रत्यक्ष देखी हुई घटना का वर्णन किया गया है। मेवाड़ राज्य के भीलों में जागृति उत्पन्न करने वाले तथा तत्कालीन सत्ता के विरुद्ध संघर्ष लेने वाले लोक विख्यात भील नेता श्री मोतीलालजी तेजावत आज भी जीवित हैं। इन्होंने अपने जीवन काल का अधिकांश समय कारावास में ही व्यतीत किया है। तेजावतजी ने किस प्रकार भील जाति को एक संगठित सूत्र में बाँधा और समय २ पर भरकार से सामना किया, इस तरह की एक घटना का यहाँ वर्णन किया जाता है।

गीत

मोतीलाल तेजावत वानीयू कजीयों करे।
कोल्यारी नुं वाणीयु कजीयो करे

हासुं राई ने केवँ बोले वानीयू कजीयो करे ।
हासुं दुखी दुनीया दुखी ,,
हासुं राजा दुखी करे ,,
हासुं दनकी वेट करावे ,,
हासुं दूनो वराड़ लेवे ,,
हासुं राजा लरतुं आवे ,,
हासुं हाल हवा रुपीयो ,,
हासुं भीले एके करे ,,
हासुं भीलां ना मेला ,,
हासुं उवी न भुमट हे ,,
हासुं भील मलतु जाहे ,,
हासुं कुने राजा वाजे ,,
हासुं राजा फतेहींगजी ,,
हासुं भील ते बदलावे ,,
हासुं हाले हवा रुपीयो ,,
हासुं गांम गांम फरे ,,
हासुं मानवीय पुछन पूछे ,,
हासुं हीनो हीनो दूखे ,,
हासु राजनो है दुखे वानीयू कजीयो करे ।
हासु फरतु फरतु जाये ,,
हासु इडेर जाईने लागू ,,
हासु चीत्र यानी नाले ,,

हासु चीत्र यानी नाल में मेलो भरे है बानीय कजीयो करे ।
हासु भील नोते में लोहे ,,
हासु आपने भोग नहीं आलवो है ,,
हासु पालं नो में लावो है ,,
हासु पाले एक करो ,,
हासु पाल बदली गई ,,
हासु राजा खब्बर लागी ,,
हासु डाक अे धाम दोड़े ,,
वासु वीड़ीया ने कागजीया ,,
हासु थाना कागज जाये ,,
हासु मोतीलाल हे वानीय यहां ते ,,
हासु खेरवाड़ानी चावनी ,,
हासु बीडीयूं कागज जाये ,,
हासु बंगले भूरीयू बैठू ,,
हासु मुरीया आलो ,,
हासु बीड़ीया कागज खोलो ,,
हासु टापर टापर बोले ,,
हासु मोतीलाल तेजावत ,,
हासु वीने हाई लावो ,,
हासु चीत्र यानी नाल में ,,
हासु बुंगल देवारी ,,
हासु बुंगेल ने हमचे ,,

हासु कम्पनी तीयार करो, वानीयू कजीयो करे ।
हासु फोजे तीयार करो ,,
हासु कम्पनी धामा दोरे ,,
हासु चीत्रये जाई लागी ,,
हासु मानवीय हमजावो ,,
हासु खूब हम जावो ,,
हासु मानवीते नहीं हमने ,,
हासु मेला में कजीयो थाईयं ,,
हासु मशीन गने चलावं ,,
हासु रुकरां भागवे लागं ,,
हासु धुली उड़वे लागो ,,
हासु मानवी माराई गईयँ ,,
हासु नोसो आदमी मारीया ,,
हासु मोतीलाल वानीयुं नाहीं गई ,,
हासु मानवी लुटाई गीया ,,
हासु गीत जातु रेईयूं ,,

शब्दार्थः—

कजीयो करे=संघर्ष मोल लेना या झगड़ा करना । हातुं=वास्तव में । वेट=बेगार । वराड़=लगान सम्बन्धी एक कर । हाल=हल । मलतुं=संगठन करना । हीनो=किसका । भोग=नाज के रूप में लगान । बीरीयुं कागज=चिपकाया हुआ पत्र । भूरियुं= गोरा साहब अर्थात अंग्रेज । हाई लावो= पकड़ कर उपस्थित करना । बुगले=बिगुल (एक प्रकार का वाद्य-यंत्र) । रूकंरा=पेड़ ।

ीतार्थः—

कोल्यारी ग्राम निवासी श्रीमोतीलाल तेजावत नामक महाजन घर्ष कर रहा है। वास्तव में लोग बड़े दुःखी हैं। राजा बड़ा ष्ट दे रहा है, वह प्रतिदिन लोगों से बेगार में काम कराता है ौर दूना लगान वसूल करता है। राजा प्रति हल के साथ में ी सवा रुपया कर लेता है।

श्रीमोतीलाल महाजन भीलों को एक सूत्र में संगठित कर रहा । सारी भौमट में भीलों के मेले लग रहे हैं। कौन राजा है ? ाराणा फतेहसिंहजी राजा हैं। तेजावत भीलों से मिलकर, भीलों कसा रहा है। वह ग्राम ग्राम में घूमता हुआ लोगों के दुःख-ूछ रहा है। राजा प्रजा को बड़ा कष्ट देता है।

घूमता घूमता वह ईडर जा पहुँचा। चीत्रा वाली नाल में जा ा। यहाँ भीलों का मेला लग रहा है। भील कहते हैं कि इस वर्ष भोग नहीं जमा कराना है। सब पालें इकट्ठी हैं और बदल जाती हैं।

ालों के बदल जाने की सूचना जब राजा के पास पहुँची तो ये के साथ बंद पत्र भेजता है। डाकिया तेजी से चलता हुआ वाड़ा छावनी के थाने में पहुँचता है। वहाँ बंगले में गोरा इब बैठा हुआ है, डाकिया बन्द पत्र साहब को देता है। हब पत्र खोल कर पढ़ता है। चोत्रा वाली नाल में श्रीमोतीलाल ावत है। उसे पकड़ कर उपस्थित कीजिये।

बिगुल बजा कर सैना को तैयार कीजिये फौज तैयार हो जाती है, एक कंपनी तेजी से चलती हुई चीत्रा वाली नाल में जा पहुँची। वहाँ लोगो को खूब समझाने लगे किन्तु लोग तो बिलकुल नहीं समझते हैं।

मेले में झगडा प्रारंभ हो गया। मशीनगनें चलने लगीं इसके फलस्वरूप भारी २ पेड़ गिरने लगे और धूल उड़ने लगी,कई व्यक्ति मारे गये हैं, लगभग ६०० आदमी मार डाले गये। श्रीमोतीलाल महाजन फ़रार हो गया और मनुष्य लूट लिये गये ।

समाप्त